सुनहरा अवसर

राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित शंकर की अन्य रचनाएँ

ये अनजाने
चर्चा सुहाग की
नगर नन्दिनी

सुनहरा अवसर

शंकर

हिन्दी रूपान्तर
जगत शङ्खधर

राधाकृष्ण

सेबास्टियन जोसेफ़
और
अजित मुखर्जी को
बंगाल के खाड़ी तट पर बिताये
कहानियों से भरे-पूरे
मेघाच्छन्न दिनों की याद में

"Everywhere and at all times men of commerce have had neither heart nor soul; their cash-box is their God. . . .They traffic in all things, even human flesh."

JACQUES RENE HEBERT : 1793
French revolutionist, guillotined in 1794

कलकत्ता ट्रैफ़िक पुलिस की सफ़ेद वर्दी पहने सिपाही की कृपा से आज सवेरे ही डेनवर इंडिया लिमिटेड का मोतिया रंग का भवन मिस्टर पाइन को दिखायी पड गया।

अन्य दिनों की तुलना में आज मिस्टर पाइन को कुछ देर हो गयी थी। लेकिन कोई चारा न था—उनके मित्र पानू की पत्नी पद्मावती ने कहा था कि अरधन[1] का बासी खाना खाकर ही आपको ऑफ़िस जाना होगा। लंच, डिनर, कॉकटेल के निमंत्रणों से मिस्टर पाइन इनकार नहीं कर सकते; लेकिन इस दुनिया में अरंधन के दिन पतितपावन पाइन को याद रखने वाले लोग अधिक नहीं हैं।

पानू के घर से निकलने और झटपट अँग्रेज़ों की बस्ती में आने से कोई फायदा नहीं हुआ। ऑटोमैटिक सिगनल की लाल बत्ती रात में अनजाने ही चोरी हो जाने से अँग्रेज बस्ती के चौराहे पर भीड लग गयी थी। ताड़ के पेड़ के आकार के एक 'ट्रैफ़िकजी' त्रिकालज्ञ योगी की तरह धीर भाव से अपनी जिम्मेदारी पूरी कर रहे थे।

अरधन श्रीपंचमी, गोटा सेद्ध के दिनों में अत्यन्त शक्तिशाली मिस्टर पाइन भी कुछ झुक जाते थे। पुराने दिनों की बातें याद आ जाती थी। तैंतीस बरस पहले अन्तिम अरधन का बासी भात पतितपावन ने अपने घर बैठकर खाया था। माँ के हाथ के उस भोजन का स्वाद आज सवेरे-

---

1. एक त्योहार, जिसमें पिछले दिन का बनाया बासी भोजन खाया जाता है। भाद्रपद की संक्रांति।

सवेरे फिर से याद करने की पतितपावन की तबीयत हो रही थी। लेकिन उनके ड्राइवर नेपाल रक्षित ने वेसब्री दिखाते हुए ट्रैफ़िक लाइट-चोर के बाप का बखान शुरू किया : "इस हरामजादे शहर का क्या होगा, सर ? दो रुपये का लैंप, उसे भी उड़नछू कर दिया। चोर बाजार में इसके चार आने से ज्यादा नही मिलेंगे।"

ड्राइवर की सीट पर बैठे अधेड़ उम्र के सारथी की मानसिक उत्तेजना मिस्टर पाइन पसन्द नही करते। उन्होंने बर्फ़-सी ठंडी आँखों से एक बार ड्राइवर की ओर देखा। मन-ही-मन सोचने लगे, 'इस अभागे शहर में हरे सिगनल की कोई गति नहीं है, पीली बत्ती की सावधानी ने भी विदा ले ली है। फिर काम-काज समेटकर लाल बत्ती जलाने का भी कोई तरीका नही---यहाँ तो लाल सिगनल भी काम नही देता।'

ड्राइवर ने आईने मे से साहब का मिजाज देख लिया था। फिर भी उसने गाड़ी को स्टार्ट और अपना मुँह बन्द नहीं किया। "चोट्टों के इस शहर मे सभी आपाधापी करेंगे तो कैसे चलेगा ?"

मिस्टर पाइन का ड्राइवर 'ट्रैफ़िकजी' के हाथों दूर एक ठेले वाले के पकडे जाने का दृश्य मन-ही-मन खुशी से देखने लगा। फिक्-से हँस कर बोला, "अच्छी पिटाई कर रहा है, सर ! कैसे मजे मे ऑफ़िस-टाइम मे साहेबपाडा की नो एंट्री-लेन में घुसा था।"

तभी मिस्टर पाइन की नजर सड़क पर दूर पच्छिम की ओर डेनवर इंडिया लिमिटेड के छोटे-से दुमजिले भवन पर जा टिकी। स्काईस्क्रेपर के युग मे इतने छोटे भवन इस अंचल में अधिक नही हैं।

ड्राइवर का भाषण उस समय भी आकाशवाणी स्टाइल में मिस्टर पाइन के कानों मे धाराप्रवाह बरस रहा था। "साला ठेला वाला देशी भैया की पिटाई खाकर खूब खुश हुआ है, सर। दबी हुई खुशी उछली पड़ती है।"

"मार खाकर, बीच सड़क पर इस तरह पिटने में मजा आता है ?" मिस्टर पतितपावन पाइन ताज्जुब में पड़ गये। इन्सान कितना नीचा होता जा रहा है ! बन्धुवर पानू ने ठीक ही कहा कि इन्सान कितनी जल्दी बदलता है, इसका कोई अता-पता नही।

तभी मिस्टर पाइन के ड्राइवर ने ठेले वाले के बारे में अपनी निजी राय दी : "जा साला, किस्मत बहुत अच्छी है। किसी और ट्रैफ़िकजी के हत्थे चढ़ने पर थप्पड़-उप्पड़ ही न पड़ते, सीधे अदालत में ढकेल दिये जाते। तब बाप का नाम तक याद न रहता।"

प्रसिद्ध क़ानूनी सलाहकार मिस्टर पतितपावन पाइन को अब अचानक ज़रा धक्का-सा लगा। अदालत के पल्ले पड़ने के बजाय गरीब लोग सड़क पर पिटना अधिक पसन्द करते हैं। यह बात उनके दिमाग में इस तरह से कभी न आयी थी।

क्षण-भर के बाद ट्रैफ़िक चालू हो गया, और साथ ही शुरू हुई गाड़ियों की रेस—जो जहां था, आगे बढने की प्रतियोगिता मे पागल था। एक बादामी रग की उठती जवानी की ऐम्बैसेडर के घूमकर पीछे से, मिस्टर पाइन की गाडी के आगे आ जाने से ड्राइवर बहुत खफ़ा हो गया।

"जवान देह का घमड दिखा रही है, चुड़ैल ! मैं किसी तरह तुझे आगे न जाने दूंगा।"

मिस्टर पाइन ने झाँककर देखा कि गाड़ी मे कोई महिला नही है और तब उनकी समझ में आया कि नयी चमचमाती गाडी ही वह चुड़ैल है।

बादामी रग की विलासिनी में एक विदेशी बैठे थे। साहब की उम्र निश्चय ही तीस से ज्यादा न होगी। खिलाड़ियों जैसी मरदानी शकल, लेकिन सिर के बाल हलके थे और उनमें से पाँच सेंटीमीटर व्यास की गुलाबी चाँद झांक रही थी।

मिस्टर पाइन के ड्राइवर की सारी कोशिशों के बावजूद विदेशी साहब की गाड़ी का आगे बढ़ना न रुका और डेनवर इडिया लिमिटेड के भवन तक पहुँचने से पहले ही ट्रैफ़िक का प्रवाह फिर रुक गया।

बादामी रग की गाड़ी के अधीर सवार उछलकर गाड़ी से उतरे और सैमसनाइट अटैचीकेस हाथ मे ले डेनवर इडिया लिमिटेड के मुख्य द्वार की ओर चलने लगे।

मिस्टर पाइन को यह समझने में देर न लगी कि यही डेनवर के मैनेजिंग डायरेक्टर आर्थर जार्ज स्टीफ़ेन न्यूमन है। आर्थर न्यूमन को इस देश मे आये ज्यादा दिन नही हुए है, पहले से मालूम न होने पर भी मिस्टर

पाइन जैसे व्यक्ति को यह समझने में असुविधा न हुई । अपने ज्ञान और अनुभव से मिस्टर पाइन जानते हैं कि भारत की आज की स्थिति से परिचित हुए भी श्वेतांग लोग बड़े लाट के स्टाइल से गाड़ी में तब तक बैठे रहते हैं, जब तक गाड़ी कम्पनी के मुख्य द्वार के सामने आकर न खड़ी हो जाये और सेना से अवकाश-प्राप्त नेपाली दरवान सैल्यूट मारकर गेट न खोल दे।

मिस्टर पाइन की कुतूहली नजर जाते हुए मिस्टर न्यूमन का पीछा करते-करते ठिठक गयी। आर्थर न्यूमन फुटपाथ पर खड़े होकर विश्वंभर पाल के साथ शुभेच्छा का आदान-प्रदान कर रहे हैं। अनुभवी सालिसिटर विश्वभर पाल डेनवर इंडिया लिमिटेड के चेयरमैन हैं, इससे मिस्टर पतित-पावन पाइन अपरिचित न थे। डेनवर के मैनेजिंग डायरेक्टर निश्चय ही उनके लिए रुककर खड़े हो सकते हैं। लेकिन पतितपावन की देह अंदर से जल उठी। बहुत गुस्से से नजर दूसरी ओर फेर ली।

न, इस सुबह के वक्त पतितपावन किसी तरह से भी विश्वंभर पाल के बारे में सोचकर अपने मन की खुशी नष्ट नहीं करेंगे। लेकिन सड़क का ट्रैफ़िक अब तक बुरी तरह से बिगड़ गया था।

विश्वंभर पाल को नजरों से निकाल, पतितपावन पाइन लाचार डेनवर इंडिया लिमिटेड के सामने का सवेरे का दृश्य देखने लगे। टाइगर हरविलास शर्मा फुटपाथ से गाड़ी में झककर अपनी टाइग्रेस से आखिरी मिनिट की वार्ता कर रहे थे। क्रय-अफ़सर शर्मा निश्चय ही देख न सके, नहीं तो फ़ैलो टाइगर पतितपावन पाइन उर्फ़ 'पी-थ्री' के साथ अब तक इशारे से शुभेच्छा का आदान-प्रदान करते। इन सब परिचितों के लिए ही तो मिस्टर पाइन टाइगर इंटरनेशनल के सभासद बने थे—तमाम बाघों और उनकी बाघिनियों के साथ बहुत आसानी से जान-पहचान हो जाती थी।

मिस्टर पाइन मन-ही-मन हँसे। शेरनी कहने से भारतीय पत्नियों को कितना गुस्सा आता है ! लेकिन वे ही सामाजिकता के स्रोत उच्च समाज में मिलने के जोश में किस तरह मुसकराती हुई टाइग्रेस बन जाती है। लेकिन क्रय-अफसर शर्मा की टाइग्रेस साइज में विपुला थी। हस्तिनी

कहना ही उचित था।

मिस्टर हरविलास शर्मा के बारे में मिस्टर कानोड़िया ने एक बार राय ज़ाहिर की थी : "सप्लायर लोगों को बहुत तग करते है। अपना हिस्सा भी लेंगे और माल भी अच्छा चाहेंगे। फिर कम भी न दिया जाये, नकली भी न स्वीकारेंगे।" उस बार मिस्टर कानोड़िया ने टाइगर इटर-नेशनल की एक पार्टी में अपने मन का दुख प्रगट किया था, "इस शर्मा की एकमात्र तुलना काले नाग से हो सकती है। उन्हें कोबरा क्लब का मेम्बर बना दें, मिस्टर पाइन !"

काले साँप के साथ हथिनी की शादी ! जगल के समाज के बारे में यह सब-कुछ नहीं सोचा जा सकता, लेकिन इन्सानी समाज में आजकल शायद सब-कुछ संभव है। मिस्टर कानोडिया ने कहा था : "ख़याल मत कीजियेगा, मिस्टर पाइन, किसी दिन कलकत्ता शहर जीव-जतुओं से भर जायेगा— एक ओर शेर, टाइगर, कोबरा; दूसरी ओर गाय, बकरी, भेड रहेंगे।"

अब मिस्टर पाइन की नज़र एक और जीव की ओर गयी। यूनियन के नेता रसमय चक्रवर्ती—साँप, लेकिन पनिहा ! पनिहा साँप उस फाटक के आगे खड़ा, एक सुन्दर श्यामवर्ण तरुण से फन नचा-नचाकर बातें कर रहा था।

इन साहब को मिस्टर पाइन के जाने बिना भी ड्राइवर नेपाल रक्षित ने पहचान लिया। यह डेनवर कंपनी के नामी-गिरामी मैनेजर शिवसाधन चौधरी थे। इन चौधरी साहब के पास ही नेपाल रक्षित छिपकर नौकरी की तलाश में आया था। आकर सुना कि आदमी ले लिया गया है। नेपाल का भांजा तुबडी कार्तिक उनके पास ही नौकरी करता है। उनकी ओर मिस्टर पाइन को ताकते देखकर नेपाल बोला, "चौधरी साहब, बहुत अच्छे आदमी हैं, सर। गरीबों के माई-बाप हैं। मेरा भाजा उनका बडा भक्त है।"

रसमय चक्रवर्ती इस शिवसाधन को मन-ही-मन थोडा प्यार करते थे। शिवसाधन बोले, "रसमय बाबू, आपकी यूनियन के लडकों ने नये कारख़ाने की साइट पर मेरी बडी मदद की।"

"फिर भी पश्चिमी बंगाल के मजदूरों के भाग्य में बुराई के अलावा

कुछ नहीं है। यूनियन माने ही मारे राज्य में गड़बड़," रसमय चक्रवर्ती ने अपनी लाइन का दुख कह डाला। किसी दूसरे के आगे अवश्य ही रसमय अरण्य-रोदन न करते, किन्तु मिस्टर एस० एस० चौधरी से बातें करने में उन्हें सकोच नही होता था।

रसमय ने पूछा, "आप तो बहुत दिनों विदेश में काम कर आये हैं। मालिकों के काम में श्रमिक लोग इससे ज्यादा कौन-सा शहद उँडेल देते है वहाँ ?"

शिवसाधन चौधरी कमर पर हाथ रखकर बोले, "औद्योगिक संबंध-बबध का तो पता नही, लेकिन मेरे साथ जो लड़के काम करते हैं वे दुनिया मे किसी भी जगह सम्मान के साथ काम कर सकते हैं।"

"ऐसी बातें मुँह पर मत लाइये, सर !" रसमय चक्रवर्ती ने सावधान कर दिया।

शिवसाधन कुछ घबरा रहे है, यह देखकर रसमय बोले, "आप इस देश मे नये-नये आये हैं, यहाँ की हवा को पहचानना अभी नहीं सीखा है। खबरदार, भूलकर भी खुले मे कभी मजदूरो की प्रशसा मत कीजियेगा। यहाँ किसी भी कपनी के अधिकारी ऐसा नही करते।"

बात को अभी भी शिवसाधन ठीक से समझ नही पा रहे थे। उन्होंने रसमय के चेहरे की ओर देखा।

"रसमय की रसिकता की मत सोचिये, मिस्टर चौधरी ! काम करने वालों के काम की तारीफ करना इस देश के मालिकों के स्वभाव में नहीं है। उन्हें हमेशा यह शक रहता है कि कहीं तारीफ़ करने से मजदूर लोग और कुछ माँग पेश न कर बैठें।"

शिवसाधन मन से रसमय की बातें सुनते जा रहे थे। रसमय बोले, "वर्करों के पास कंपनी की कोई चिट्ठी भेजने से पहले वह वकील के पास जाती है। वकील के दफ्तर के माध्यम से कर्मचारियो से विचारो का आदान-प्रदान इस देश की औद्योगिक परपरा में आ गया है।"

तभी रसमय की नजर मिस्टर पाइन की लगभग अचल गाड़ी पर पड़ी।

जीभ निकाल, माथे पर हाथ ठोंककर रसमय बोले, "राम-राम !

जहाँ शेर का डर वहीं शाम होते...वह देखिये, जा रहे हैं पूरे घाघ, कानूनी-सलाहकार मिस्टर पतितपावन पाइन।"

शिवसाधन चौधरी ने चेहरा उठाकर देखा, लेकिन इसी बीच मिस्टर पाइन की गाड़ी के थोड़ा आगे बढ़ने से वह बाघ की अगाड़ी न देख सके।

रसमय ने पूछा, "इनका नाम नहीं सुना ? कुछ फ़िकर मत कीजिये ! कुछ ही महीनों में सब पता चल जायेगा। आप भी शायद मज़दूरों के मामले में उनसे जल्दी-जल्दी सलाह लेने के लिए भागा करेंगे।"

शिवसाधन ऐसे मामले ज़्यादा पसन्द नहीं करते थे। फ़िलहाल तो एक छोटे-से कारख़ाने का मामूली-सा काम समाप्त करने के अलावा कोई और सिरदर्द उन्हें न था। ऐसी क्या परेशानी हो सकती है कि अपना काम छोड़ शिवसाधन कानून की बस्ती में जायें ? इस देश के क़ानून के बारे में भी शिवसाधन को ज़्यादा जानकारी न थी।

"प्रात.स्मरणीय महोदय !" रसमय चक्रवर्ती ने शोशा छोड़ा। "सल्किया लेबर यूनियन में मेरे एक वकील मित्र देखते ही बिगड़ जाते हैं—कहते हैं दुनिया के प्राचीनतम व्यवसाय के सदस्य ! शायद बात सुनने में बुरी लगे, किन्तु भुक्तभोगी जानते हैं, इस लाइन में वेश्या से गये-गुज़रे लोग मिलते हैं।"

यह सुन शिवसाधन बड़ी मुसीबत में पड़ गये। लेकिन रसमय चक्रवर्ती और तेज़ हो गये। "वेश्या फिर भी शरीर बेचकर खाती है, लेकिन जो लोग इस दुनिया में केवल बात बेचकर पेट भरते है, उनका विश्वास कभी भी नहीं किया जा सकता।"

शिवसाधन ने बीच में आपत्ति की, "रसमय बाबू, क़ानून की लाइन में बहुत-से व्यक्ति बेशक प्रात.स्मरणीय हैं। फिर दुनिया में भले-बुरे, दोनों ही हैं।"

फिर शिवसाधन ने घड़ी की ओर देखा। वह गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन इस ट्रैफ़िक के संकट में ड्राइवर भी क्या करे ?

रसमय चक्रवर्ती उस समय भी दूर गाड़ियों के जंगल में खोये मिस्टर पाइन की काली ऐंबैसेडर की ओर देख रहे थे। रससमय फिर मुँह न खोल सके। "साहब लोग कहते हैं पी० पी० पाइन। और हमारी लेबर लाइन में

उनका नाम है पाजी पछाड़ने वाले पाइन। सक्षेप में पी-थ्री । पी फ़ार पाइथान[1], पी फ़ार पाँच पैज़ार[2], पी फ़ार पापिष्ठ ।"

इस बीच शिवसाधन की गाडी भी आ गयी। अधिक समय नष्ट न कर शिवसाधन गाड़ी मे जा बैठे।

अन्य दिनो की तुलना मे शिवसाधन ने भी आज देर कर दी। सामान्यतः सवेरे छः बजे शिवसाधन ठाकुरपुर के लिए चल देते। लेकिन आज अरंधन का बासी भात खिलाये बिना माँ ने न छोड़ा। विधवा माँ की कोई इच्छा ही पूरी नही होती। शिवसाधन को बरसों घर के बाहर रहना पड़ा है। इस बार माँ के आगे बैठ कर अरबी की सब्ज़ी के साथ पान्ताभात खाने मे अच्छा लगा।

डेनवर लिमिटेड के ड्राइवर खलील ने देखा कि चौधरी साहब गाड़ी में बैठे-बैठे बैग में से कागज-पत्र निकालकर उनमें डूब गये है।

खलील देखता है कि दूसरे साहबो की तुलना में चौधरी साहब का दिमाग़ अलग, किसी गडबड में नही पड़ता। और तो और, सडक की ओर भी नहीं देखते। सिर्फ़ अपने काम मे डूबे रहते हैं। ड्राइवर के शीशे में से ड्राइवर खलील ने लक्ष्य किया कि नक़्शो के कागज़ों पर नज़र डालते-डालते चौधरी साहब का चेहरा चमकने लगा है और साहब अपने-आप सीटी बजाने लगे हैं।

शिवसाधन चौधरी की गाड़ी उत्तर की ओर मुँह किये सेंट्रल ऐवेन्यू की बायी ओर बढ रही थी। बी टी रोड पार कर, डनलप ब्रिज के दाहिनी ओर से निकलकर, विवेकानन्द सेतु के ऊपर से होकर शिवसाधन को दिल्ली नेशनल हाई-वे पर जाना होगा। इस सडक पर चलते-चलते शिवसाधन के मन मे तरह-तरह की चिन्ताओं के बादल उमड़ आये।

कल भी एक चिट्ठी विदेश से आयी थी। "शिवसाधन, तुम कलकत्ता

---

1. अजगर; 2 जूता

मे क्या कर रहे हो ? समय की बरबादी के अलावा आजकल तो कलकत्ता मे कुछ होता नही है।"

प्रोफेसर गुडमैन की चिट्ठी को 29 बरस के शिवसाधन चौधरी फिर पढने लगे। "माई डियर शिवसाधन, तुमने जब इस देश मे पढाई-लिखाई समाप्त कर भारतवर्ष लौट जाना चाहा था तो मैं पहले खुश ही हुआ था। मुझे हमेशा दुख होता था कि अच्छे छात्र विदेश आकर प्राय: अपने देश के लोगो के सुख-दुख की बात भूल जाते हैं। तुमको मैंने प्रोत्साहित भी किया था। लेकिन अब तुम्हारे काम के बारे में जो खबरें मिल रही है, उससे मेरी फिकर बढ रही है। सुनता हूँ कि कलकत्ता अब अतीत होकर रह गया है। वहाँ भविष्य या वर्तमान कुछ भी नही है। मेरे प्यारे छात्र मेरी आशाएँ हैं, उनके निकम्मे हो जाने पर मुझे दुख होता है। मेरा दूसरा प्रिय छात्र रोमेन मिटर हाल ही मे कलकत्ता होकर इधर लौटा है। उससे सुना, बैंगाल इज डाइंग ऐंड कैलकटा इज डेड। रोमेन ने अफसोस करते हुए बताया, नथिंग मूव्ज इन कैलकटा एक्सेप्ट द टग। जीभ के सिवा और कुछ भी जहाँ न हिलता हो वहाँ काम के आदमी क्या करेंगे ?"

चिट्ठी यहीं तक पढकर शिवसाधन ने एक सिगरेट सुलगायी। खलील ने लक्ष्य किया कि चौधरी साहब बहुत ही मामूली ब्राड की सिगरेट पीते है। तो क्या साहब डेनवर कम्पनी मे बडे अफसर नहीं है? ख़लील को फ़िक्र शुरू हो गयी।

स्थानीय सिगरेट का देशी धुआँ छोड़ते हुए शिवसाधन ने सोचा, प्रोफेसर गुडमैन अभी भी विद्यार्थियों के लिए सोचते रहते हैं।

उन्होंने लिखा है, "अभी भी वक्त है। अगर जरूरत हो तो यहाँ कोई इन्तजाम कर सकता हूँ। यह समझ लो कि जो काम के लोग हैं, उनके लिए सारी पृथ्वी ही उनका घर है। काम के आदमियों के लिए ठिकाने की कोई जरूरत नही होती। अपनी पसन्द की जगह से कहीं बड़ी चीज़, अच्छा काम मनमुताबिक करने का सुयोग होता है।"

एयरोग्राम मोडकर जेब में रख शिवसाधन ने फिर बाहर की ओर देखा। बहुत-से बीमार-से लोग पत्नी और बाल-बच्चों को लिये, भूख मे परेशान, गाँव से भागकर सड़क पर भीख माँग रहे हैं। इस तरह की ख़बरें

शिवसाधन ने अख़बारों में पढ़ी थी। ये पेशेवर भिखारी नहीं हैं, यह बात इनके हाव-भाव से बख़ूबी स्पष्ट थी। लेकिन ये भी किसी दिन पेशेवर भिखारी बन जायेंगे। इनकी लड़कियों पर फुटपाथ की वेश्याओं की छाप लग जायेगी। इनके लड़के बीमारी भोगकर बिना इलाज मर जायेंगे। और जो दो-एक बच जायेंगे, वे यथासमय चोर या पाकेटमार बनकर कलकत्ता की सोलह कलाएँ सीख जायेंगे। अख़बार ने यही लिखा है।

एक जुलूस बढ़ा आ रहा है। 'हम बेकार समिति के हैं।'

बेकार, बेकार, अभाव, अभाव! इस अभागे शहर के किसी भी भाग में पाँच मिनट घूमते ही इन्सानों की हालत समझने में देर नहीं लगती। आदमी के पास काम क्यों नहीं है? एक पेट के लिए थोड़े-से भात का इन्तजाम भी ईश्वर ने नहीं कर रखा। सोचते-सोचते शिवसाधन का दिल-दिमाग़ ख़राब हो जाता।

शिवसाधन ने सुना था कि जो लोग बहुत दिनों के बाद विदेश से कलकत्ता लौटकर आते हैं, उनकी यही हालत होती है। दिमाग बिगड़ जाता है, कुछ करने की तबीयत होती है, अपने लोगों का पतन हृदय में बहुत अधिक बेचैनी पैदा कर देता है। लेकिन यह कुछ दिनों के लिए ही, उसके बाद सब ठीक हो जाता है। विदेशों से लौटे लोग तो इस शहर के बड़े-बड़े घरों में भरे पड़े हैं। क्लबों, होटलों, दफ़्तरों, कारख़ानों में विदेशों से लौटे हज़ारों लोग मिलेंगे। लेकिन देश की तो कोई उन्नति नहीं हुई!

शिवसाधन को याद आ रहा था कि कहीं पढ़ा था: 'सफल इन्सानों में दूरदृष्टि की क्षमता क्रमशः क्षीण होती जा रही है; अपने घेरे से बाहर का कोई भी दुख उनके मन में कोई प्रभाव उत्पन्न नहीं करता। प्रेम की कृपणता में इस शहर के लोग मर्चेन्ट ऑफ वेनिस के निकृष्टतम यहूदी को शर्मिन्दा कर सकते हैं।'

शिवसाधन कल ही गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब गये थे। समय था अपराह्न। वहाँ ठंडी बीयर की बोतल और क्लब सैंडविच आगे रखकर बातें हो रही थीं इस शहर के गंदेपन की, ट्रैफिक जैम की, टूटे-फूटे रास्तों की, आदमियों की भीड़ की।

शिवसाधन गलतियों और दोषों की आलोचना का विरोधी नहीं था;

लेकिन प्यार के अभाव और आलोचकों की स्वार्थपरक समझ पर उसे दुख होता था। यहाँ विद्यार्थी बुरे है, श्रमिक बुरे हैं, प्रशासक खराब है, राजनीतिज्ञ बुरे हैं, मुखर्जी, चटर्जी, बनर्जी बाबू खराब हैं। सत्तर लाख लोगों के इस शहर में सब खराब हैं, सिर्फ़ इस गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब और व्यापारिक समाज के, ईश्वर के अपने हाथों बनाये सौ या हज़ार के लगभग इन आदमियों को छोड़कर।

इस तरह की बातें निरन्तर सुनते-सुनते शिवसाधन को बिलकुल अच्छा न लगता, मन मे बहुत बेचैनी होती। बेकारो के सिर ही सारी बेकारी का दोष मढ़कर, गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब के अधिकारी व्यक्ति ठंडी बीयर की एक और बोतल का ऑर्डर देते और सरकार की आबकारी नीति की आलोचना करते। वे लोग भी हममे से ही हैं, इतने सहज सत्य को ये लोग क्यों नही पहचान पाते ?

शिवसाधन को तब और भी बुरा लगा, जब आलोचना करते बाजोरिया, कानोड़िया, सिंह, चोपड़ा और कपूर की बातों को स्थानीय दिग्पालों ने और हवा दी।

"एक और ठंडी बीयर लाओ," बेयरा को निर्देश देकर मिस्टर लाहिड़ी बोले, "घटिया जगह, घटिया लोग ! मिस्टर चोपड़ा, आपसे कह रहा हूँ, देयर इज़ नो होप। ज़मीन के इस टुकड़े, गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब को छोड इस शहर मे कुछ भी ढंग से नही चलता।"

कर्नल (रिटायर्ड) चोपडा थोड़ा नशे में थे। बोले, "लाहिड़ी, बहुत अच्छा कहा। यू मस्ट हैव ऐनदर बॉट्ल ऑन मी। काश ! इस देश का प्रबंध गोन्विदपुर क्लब कमेटी पर छोड दिया जाता !"

शिवसाधन बोल पड़े, "जेंटलमेन, आप लोगों का सेंस ऑफ ह्यूमर बहुत तेज़ है।"

एक बोतल बीयर जीतने वाले लाहिड़ी ने जवाब दिया, "नो ह्यूमर। कर्नल चोपड़ा और उनके खुशामदी काम की बात करते हैं। तब की सोचिये, जब एक नम्बर रॉयल एक्सचेंज चेम्बर ऑफ कॉमर्स पूरे भारत का शासन करता था। तब देश कैसा आराम से चलता था, बिजनेस को कोई परेशानी नही थी। हम लोगो की जिन्दगी कैसी शांतिपूर्ण थी !"

अब शिवसाधन के हँसी से फूट पड़ने की बारी थी। लेकिन शिवसाधन के सिवा और कोई न हँसा। एक गंभीर तथ्य की प्रस्तुति पर इस मज़ाकिया प्रतिक्रिया को उपस्थित सदस्यों ने पसन्द न किया।

तभी शिवसाधन बोल उठे, "अँग्रेज़ी राज होने पर ही तो हममें से इतने लोग इस गोविन्दपुर गॉल्फ क्लब के शामियाने के तले आज बैठ सकते हैं!"

शायद बात कुछ निर्मम हो गयी, क्योंकि पराधीन स्थिति में इस क्लब का एक भी मेम्बर ब्राउन न था। इस अप्रिय सत्य ने सदस्यों को बेचैनी में डाल दिया।

सब लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे, मानो किसी सदस्य ने अचानक नियमों के विरुद्ध कोई असामाजिक हरकत कर दी हो, ऐसा आचरण किया हो जो गोविन्दपुर क्लब के किसी भी मेम्बर के लिए उचित न हो।

तब मिस्टर लाहिड़ी ने ही पतवार संभाली। "कड़वी यादों के दोहराने से कोई काम की बात नहीं होती है, इस बार की 'टाइम' मैगज़ीन में यही लिखा है। मिस्टर चौधरी, दोष अँग्रेज़ों के सिर मढ़कर अपनी सफ़ाई में गाते रहना कलकत्ता के पॉलिटीशियनों का मुद्रादोष बन गया है।"

राजनीतिज्ञों की बात उठने पर गोविन्दपुर के सदस्यों ने ठंडी साँस ली। कर्नल चोपड़ा बोले, "मेरे डिपुटी जी० एम० परमिन्दरसिंह ने उस दिन एक बड़ा सुंदर सपना देखा था। ईश्वर ने एक ऐसा देश पैदा किया, जहाँ प्रोफेशनल पॉलिटीशियन और प्रोफेशनल ट्रेड यूनियन लीडर नहीं थे। हमें एक मौका तो दीजिये, उसके बाद अगर यह देश दूध की नदी वाला देश न बन जाये तो मैं सिगरेट स्मोकिंग छोड़ दूंगा।"

सिगरेट कंपनी के मिस्टर सप्रू बोले, "फॉर हैवेन्स सेक, बात ही बात पर सिगरेट की क़सम मत खाओ, राजू! हमारी कंपनी के लिए यह क़तई भी ठीक न होगा। सारा नुकसान तंबाकू को ही क्यों उठाना पड़े? यहाँ चाय की दुनिया के मिस्टर बाजोरिया, स्वदेशी बीयर लिमिटेड के मिस्टर मलिक भी हैं।"

इसके बाद भी शिवसाधन को कुछ देर रुकना पड़ा, क्योंकि डेनवर इंडिया लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर मिस्टर न्यूमन की यहाँ आने की

बात थी।

इस बीच आलोचना का प्रवाह रुका नहीं। आधे दर्जन कुक्कुटों और बीयर की बोतलों के ध्वसावशेष पर गोविन्दपुर गॉल्फ़ के विशिष्ट सदस्य अपनी मनपसंद आलोचना में लगे रहे। कहीं कोई रुकावट न आयी। नये सदस्य बनाने के बारे में इस क्लब के इसीलिए तो इतने कठोर नियम हैं। जिस दिन टॉम-डिक-हैरी इस गोविन्दपुर शामियाने के नीचे घुस आयेंगे, उस दिन खुलकर बातचीत की आज़ादी भी न रहेगी।

"ज़रा सोचिये तो! हम लोगों में से हर एक के कंधों पर ज़िम्मेदारियों के पहाड़ लदे हैं, और हमारी सामर्थ्य बहुत ही सीमित है, ऑलमोस्ट निल ही कहनी चाहिए। ऑफ़िस में मुँह नहीं खोला जा सकता, कारखाने में मुँह खोलने पर धमाका, घर पर मिसेज लोगों को देश की आलोचना में बिलकुल रुचि नहीं। उनका मन ताश के पत्तों में पड़ा रहता है। मुँह खोलने की जगह, कहने को यही गोविन्दपुर शामियाना है। यहाँ भी किसी तरह अशान्ति घुस आयी तो मुसीबत का अंत नहीं।" मिस्टर संधू ने राय ज़ाहिर की।

उसके बाद वाणिज्य वायु से वाक-स्वाधीनता का पाल उठा दिया गया। बीयर के नशे में धुत व्यवसाय के मालिक फटाफट मन की बोतलें खोलने लगे।

इनकी जो बातें समझ में आयीं, वे थीं : इस कैलकटा की उन्नति असभव है। यहाँ के लोग निकम्मे, काहिल, और बातूनी हैं। पॉलिटिक्स, थियेटर और टेररिज़्म के सिवा और किसी चीज में उनकी रुचि नहीं है, और ईर्ष्या के मामले में इनका मुकाबला नहीं।"

"हैव यू सीन? दीवारों पर नोटिस पढ़ा है—पूंजीपति, बिज़नेसमैनो, क्विट बेंगाल?" मिस्टर सिंह ने पूछा।

"दीवार पर नोटिस देखकर या न्यूज़पेपर में पॉलिटीशियनों के लेक्चर पढ़कर हम बिज़नेस नहीं चलाते। वैसा होता तो हमारा बिज़नेस-ग्रुप कब का दिवालिया हो गया होता," मिस्टर बाजोरिया बोले।

कर्नल चोपडा ने अब शिवसाधन को मुसीबत में डाल दिया। "मिस्टर चटर्जी, आप क्यों चुपचाप हैं? व्हाट् डु यू थिंक?"

लाहिड़ी खी-खी कर हँसने लगे। "अगले बरस इस तरह के मौके पर इस गोविन्दपुर के शामियाने में बैठकर ये एकदम यही बातें दोहराते रहेंगे, किन्तु यह सच है कि सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से प्रभावी बँगाली स्पीकिंग लोगों ने ही इस अंचल का सर्वनाश किया है।"

लाहिड़ी का सिद्धांत उपस्थित मालिकों को अच्छा लगा, यह जानकर वह बहुत खुश हुए।

शिवसाधन के चेहरे की ओर देखकर लाहिड़ी बोले, "समस्या इतनी-सी है कि इस वक़्त मिस्टर चौधरी हनीमून के रंग में हैं, बहुत दिन विदेश में बिताकर अपने शहर लौटने पर ऐसा ही होता है। उस वक़्त लोकल लोगों को प्यार करने की तबीयत होती है। पचास वर्ष पहले मुझे भी यही हुआ था! लेकिन खुशी की बात है कि स्वाभाविक हालत में लौट आया हूँ।"

शिवसाधन के कान गरम हो उठे। दूसरों के बजाय लाहिड़ी पर उन्हें अधिक गुस्सा आ रहा था। भले आदमी ने बाजोरिया-ग्रुप के दो कारखानों पर पहले से ही लाल बत्ती जला दी थी। पाँच सौ आदमियों की नौकरियाँ गयी, लेकिन किसी अज्ञात कारण से कारख़ाने का आयात-लाइसेंस और स्टील-परमिट अभी भी जारी है, और उन्हें चोरी-छिपे बाज़ार में बेचकर मिस्टर बाजोरिया दो पैसे कमा लेते हैं।

इन्ही लाहिड़ी ने एक दिन शिवसाधन से कहा था, "मिस्टर बाजोरिया मुझसे बहुत खुश है। मेरे कायदे-कानून ही अलग हैं। साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे। वर्करों की छटनी होगी, और लाइसेंस, कोटा—सब जैसे-का-तैसा रहेगा।"

शिवसाधन का जवाब क्या होता, ठीक नही कहा जा सकता। किन्तु सौभाग्य से उसी समय बेयरा आकर बोला, "साब, टेलीफ़ोन।"

"हलो शिव, मैं आर्थर बोल रहा हूँ," उधर से न्यूमन की आवाज आयी, "तुम्हें गोविन्दपुर आने को कहा था, लेकिन अचानक फिल्म देखने का एक मौका मिल गया। रे की लेटेस्ट फिल्म अभी तक रिलीज नही हुई। साटाजिट रे खुद मौजूद रहेंगे। तुम क्या कहते हो, शिव?"

"आर्थर, तुमसे लेकिन-वेकिन कहने की कोई जरूरत नहीं।" न्यूमन साहब को शिवसाधन नाम से ही पुकारते थे। इस तरह बुलाने का अधिकार उन्हें था, क्योंकि दोनों विदेश में एक ही विश्वविद्यालय में पढ़े थे। उसके बाद विदेश में एक ही कंपनी में दोनों ने नौकरी की थी। यहाँ के सभी लोगों को नहीं पता था कि प्रवास में कुछ दिनों के लिए दोनों एक ही अपार्टमेंट में साथ-साथ रहे थे। उस समय किसे पता था कि यही आर्थर किसी दिन भारतवर्ष में डेनवर के कर्मचारी के रूप में आ जायेगा!

आर्थर न्यूमन उधर से बोले, "लेकिन शिव, मेरे इस पतन के लिए तुम ही जिम्मेदार हो! तुमको जरूर याद होगा कि विदेश में तुम ही मुझे 'पथेर पँचाली' फिल्म दिखाने ले गये थे। दैट वाज ए वंडरफुल एक्सपीरियेंस। मैं रे-भक्त हो गया।"

शिवसाधन ने जवाब दिया, "मौका मत छोड़ो, आर्थर। अगर हो सके तो सत्यजित राय से ऐसी दोस्ती कर लो कि जिससे बाद में मुझे भी स्पेशल प्रिव्यू में ले जा सको।"

आर्थर न्यूमन हलके-से हँस पड़े। "डाउटफुल शिव, मैंने सुना है कि बावस वालों का वह बिलकुल खयाल नहीं करते।"

"सत्यजित राय से कम्पीटीशन करने वालों को अधिक आसानी नहीं होती है।"

"तब! केवल फ़िल्म वालों के साथ काम-धंधा है?"

"सत्यजित राय बौद्धिक व्यवसाय वालों को ही पसन्द करते हैं।" शिवसाधन ने टेलीफ़ोन पर ही मजाक किया। "तुम्हारा और मेरा कोई चान्स ही नहीं है, आर्थर।"

"तुम्हारा फिर भी कुछ है। कुछ दिन विदेशों में पढ़ाया है। मैं तो पढ़ाने के पास से भी नहीं गुजरा," आर्थर न्यूमन ने गुडनाइट कहकर टेलीफोन रख दिया।

कुछ समय बाद आर्थर न्यूमन डेनवर लिमिटेड का छोटा-सा कारखाना देखने आयेंगे। उसी का पहले से इंतजाम करने के लिए शिवसाधन नेशनल

हाई-वे पकड़कर अपने कर्म-क्षेत्र की ओर मुड चले।

जाते-जाते बाली ब्रिज पर शिवसाधन को युवकों का एक और झुंड दिखायी पड़ा। सवेरे का यह वक़्त तो स्वस्थ सबल नागरिकों के काम का समय है। लेकिन इस अभागे बंगाल को क्या हो गया है? मेहनत करने वाले आदमियों के अभाव मे तमाम काम रुके हुए है, और इस बगाल मे काम की तलाश में लाखों लोग मारे-मारे फिरते है। शिवसाधन ने पढा था कि पाँच पदो के लिए साढे पाँच लाख अर्जियाँ प्राप्त होने का रिकार्ड उनकी जन्मभूमि को छोडकर और कहाँ कायम हुआ है? ऐसा अभाव, इतना कष्ट, चुपचाप सहन करने की इतनी समता, स्वस्थ सबल बुद्धिमान बेकार आदमियों की ऐसी बेकद्री संसार मे कही नही है। इतनी बदनामी और अपमान ससार के इतिहास मे किसी जाति पर इस तरह बिन माँगे नही बरसा है।

घडी में समय देखकर शिवसाधन ने जरा गाडी के डैशबोर्ड पर नजर डाली। स्पीडोमीटर की सुई 50 किलोमीटर पर लगभग स्थिर थी।

शिवसाधन ने इस अंतराल में अपने अतीत पर सरसरी नजर डाली। विदेशी विश्वविद्यालय के सफल छात्रों को विदेश मे ही अनुसधान और काफी धन कमाने के अवसर मिले हैं। उस धन का परिमाण इस देश में बहुतों की कल्पना से बाहर की चीज है।

किन्तु प्रवासी शिवसाधन कभी भी देश के दुर्भाग्य की बात न भूल सके थे। शिवसाधन के सामने ही रहता था अनवर अली। बगलादेश के स्वतन्त्र होते ही अनवर अली अपना बडा-सा मकान बेचकर और अणु-भौतिकी की बड़ी-सी नौकरी छोडकर देश लौट गया। जाने से पहले बोला, "चला, चौधरी मोशाय, देश के लिए मन कैसा परेशान हो रहा है! देखूँ, अगर कुछ कर सकूँ।"

देश में क्या करने को है? अनवर की हिम्मत देखकर शिवसाधन थोड़ा ताज्जुब मे पड गये थे।

"प्रेसिडेंट केनेडी का कथन नही पढा? ऐ मेरे देशवासियो, मुझसे मत पूछो कि अमरीका तुम्हारे लिए क्या कर सकता है, बताओ कि स्वदेश के लिए तुम क्या कर सकते हो?" अनवर अली ने अपने स्टाइल में केनेडी की

बात कही थी।

अनवर अली ने आराम-भरा अपना ठिकाना छोड़कर बिदा ली, किन्तु शिवसाधन किसी तरह से भी उस बारीसाल वाले की बात न भूल सका।

शिवसाधन ने अपने अनुसंधान का क्षेत्र बदल दिया। बहुत दिनों तक बहुमंजिली विशिष्ट इमारत के बिजली के इलीवेटर पर वह काम करता रहा था। उसने सहसा अपने से पूछा, 'भारतवर्ष में कितनी ऐसी इमारतें होंगी, जिनकी ऊँचाई 50 मंज़िल से अधिक होगी?'

शिवसाधन ने छोटे आकार के पंपों पर नया अनुसंधान शुरू किया। यह पंप पश्चिम में किसी खास काम में नहीं आयेगा, शिवसाधन को पता था। लेकिन एशिया के देशों में किसानों के लिए पानी की सिंचाई के काम में यह छोटा-सा पम्प अकल्पित क्रान्ति ला सकता है, इस बारे में शिवसाधन के मन में कोई सन्देह न था।

शिवसाधन का काम जब कुछ ज्यादा आगे बढ़ गया था तो अनुसंधान विभाग का धैर्य जाता रहा। वे बोले, "इस काम के लिए हमारे पास पैसे नहीं हैं। एलिवेटर के ऊपर उठने के रहस्य पर काम करो, उसके लिए हमें बहुत धन मिला है, लेकिन यह घिसी-पिटी पुरानी टेक्नालॉजी के पंप पर काम करने से क्या फ़ायदा होगा?"

शिवसाधन उसी समय नौकरी बदलकर डेनवर लिमिटेड में शामिल हो गये। दिन-भर काम के बाद घर लौटकर शिवसाधन अपनी छोटी-सी अनुसंधानशाला में साधना करते थे।

उसी दौरान शिवसाधन एक बार स्वदेश लौटे थे। अपनी आँखों दुखी कलकत्ता की दुर्दशा देखी। अब भी वह दृश्य शिवसाधन देखते रहते हैं।

शिवसाधन के स्कूल के मास्टरसाहब अधीर बाबू ने तब कहा था, "बंगाली लोग सर्वनाश के गहरे गड्ढे में डूब जायेंगे। इधर मत देखना, बेटा शिवसाधन! बड़ी मुश्किल से पश्चिम का दरवाजा खोला है। वहीं लौट जाओ।"

"यह क्या कह रहे हैं, सर? आप ही ने तो कभी स्वदेश की चिन्ता का उपदेश दिया था।"

"वे सब दूसरे युग की बातें थी, बेटा शिवसाधन ! हम उस समय जिन्दा थे, जीवित रहने की क्षीण-सी आशा थी हममें। अब समाप्त हो गये है—केवल देह-दाह के लिए श्मशान के अधकार की राह देख रहे है।"

अधीर बाबू ने यह क्या कहा ! शिवसाधन आश्चर्य मे पड़ गये थे।

"बरबादी, बरबादी। चारो ओर नजर डालकर देखो। इतनी महान जाति, जो सबके देखते-देखते अंधकार के अतलगर्त मे डूब गयी, उसके लिए किसी को कोई चिंता नही। फुटबाल के खेल मे किसने गोल किये, क्रिकेट मे कितने रन बने, उसका हिसाब करते-करते ही पूरी जाति के लाखों पढे-लिखे लोगों ने अपने सारे काम-काज छोड़ दिये। पहले हम खेलते थे, अब हम खेल देखते है। खेल-प्रेमी देश से गिरकर अब हम खेल-दर्शक के स्तर पर उतर आये हैं।"

अधीर बाबू ने अपने प्रिय छात्र की ओर देखा था। "बेटा शिवसाधन, यह पतन रोमन साम्राज्य के पतन के समय भी देखा गया था। खुद खेलने से खेल देखने का आनन्द जहाँ बढ़ जाता है, उस देश का कभी भला नही हो सकता।"

अधीर बाबू ने आगे यह भी कहा था, "आत्महनन की एक अजीब-सी इच्छा इस जाति मे सभी स्तरो पर प्रगट हो रही है। शिवसाधन, तुम देख नही रहे हो?"

अधीर बाबू की पलकों की कोरों पर उस समय आँसू छलक आये थे। "तुम तो जानते हो, बेटा शिवसाधन, मेरा बडा लडका लिखने-पढने में अच्छा था। लेकिन बम, पिस्तौल और पैम्फ्लेटों मे फँसकर घर न लौटा। काशीपुर मे पुलिस की गोली से उसका जीवन समाप्त हो गया।"

फिर अधीर बाबू हाँफने लगे, "मेरा मँझला लड़का जात्रा थियेटर और मोहनबागान मे लगा रहता है। उसे भी मैंने खर्च की मद मे डाल दिया है। ख़ाली पेट ये काम नही होते, यह बात उसकी समझ में नहीं आती। एकदम पक्का जाहिल—किसी तरह के लिखने-पढने में कोई रुचि नही। अख़बारों की ख़बरों, हिन्दी सिनेमा, तरह-तरह के भारतीय विज्ञापन-कार्यक्रम और फ़ुटवॉल की कमेंट्री से ही सारा देश शिक्षा ने

रहा है।"

अपना गुस्सा रोककर अधीर बाबू ने शांत होने की कोशिश की। "बेकार में अमूल्य जीवन बरबाद करोगे, शिवसाधन ! दुनिया इस अभागे पश्चिमी बंगाल से बहुत बड़ी है। भाग जाओ ! नदी, पहाड़ समुद्र जो भी आगे आये, रुकना मत। याद है न, छुटपन में पढ़ा था—सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पंडितः।"

"मास्टर साहब, आप परेशान न हों," उत्तेजित मास्टर मोशाय को शिवसाधन शान्त करने का प्रयत्न कर रहे थे।

लेकिन मास्टर मोशाय बोले, "मुझे रोको मत, शिवसाधन ! और कितने दिन उत्तेजित होऊँगा ? हमारी बात तो किसी के कानों में पड़ेगी नहीं, जिन लोगों की बातें हर रोज अखबारों में छपती हैं, उन सारे नेताओं की सारी ताकत दलबन्दी में खतम हुई जा रही है। सारी हवा भोंपू बजाने में लग जायेगी तो इंजन कैसे चलेगा ? अप्रिय बात कहने और अप्रिय लेकिन मतलब का काम करने का समय, सामर्थ्य और धैर्य कहाँ है ?"

"शिक्षा ?"

"इस चीज का नाम मत लो, शिवसाधन। देवी सरस्वती को झाड़ू मार-मारकर हमने बंगाल से भगा दिया है। परीक्षा पास करना और शिक्षा प्राप्त करना एक चीज नहीं, इसे इस देश के मास्टर साहब भी भूलने लगे हैं।"

अधीर बाबू थोड़ा रुके, "फिर इस अभागे देश में सच बात कहने वाला कौन रह गया है ?"

"क्यों, साहित्यिक ?"

अधीर बाबू ठठाकर हँसे। "हो हो हो ! आजकल के कहानी-उपन्यास लिखने वालों की बात मत करो। सारे नायक-नायिका लेखक के साथ जीवन की पीड़ा में छटपटाते रहते हैं। अनुचित प्रेम, निषिद्ध आहार, निषिद्ध जगह आने-जाने की अंधाधुंध प्रतियोगिता विभिन्न लेखकों के मानसपुत्रों में चल रही है। वे इन्सान से कैसे कहेंगे, उठो, जागो ?

"मेरी छोटी लड़की है, जिससे कुछ आशा रखता। सो उसका भी

कोई भरोसा नही। उसे दो बार प्लूरिसी और एक बार टी० बी० हो चुकी है। यह सब छिपाकर ब्याह का झूठा विज्ञापन देने के लिए मेरी पत्नी हर रोज मुझे परेशान करती रहती है। और मेरी इसी पत्नी के बडे भाई ने सरकारी गवाह बनकर झूठी गवाही देने के लिए तैयार न होने पर पद्रह बरस जेल भुगती और जेल मे ही अपनी देह छोड़ी थी।"

यह सुनकर शिवसाधन के मन मे एक अजीब दुख छा गया था। लेकिन साथ ही कुछ दिनो के लिए देश से चले जाने की प्रबल इच्छा भी मन मे बैठ गयी।

शिवसाधन देख आये थे कि ध्वस मे से ही नयी सभ्यता ने मनुष्य की आँखो के आगे गगनचुवी ऊँचाई प्राप्त की है।

अपने लोगों के पतन और विनाश से किसके हृदय मे कष्ट नही होता? शिवसाधन कुछ दिन स्वदेश मे घूमने के लिए आकर गहरी वेदना का अनुभव कर रहे थे।

बडी सडक पकड़ टैक्सी पर जाते हुए शिवसाधन को अचानक आशा का प्रकाश देखने को मिला। जिस देश मे इतनी दूकान और सामान हो, इतना व्यवसाय-वाणिज्य का सुअवसर हो, जहाँ सारे भारतवर्ष की पण्य सामग्री प्रतिदिन रेल और राजपथ से आती हो, जहाँ चीजो की इतनी माँग हो, वहाँ उदास होने, निराश होने, पिछडे जाने का कोई कारण नही।

शिवसाधन ने अनुभव किया कि एक नयी क्रान्ति आरम्भ करने की आवश्यकता है। बहुत दिनों से बगाली लोग व्यवसाय से धीरे-धीरे हट गये है। बगाली व्यापारी अब सोने की कटोरी की तरह ही अवास्तविक हो गये हैं। उद्योग, व्यवसाय और श्रम की अवहेलना कर किसी भी जाति के लिए महान होना तो दूर, जीवित रहना भी कठिन है।

लेकिन यहाँ के लोगों ने समझ लिया है कि लक्ष्मी और सरस्वती का विरोध किसी दिन भी दूर न होगा। इनको पता नही कि यह बात पुरानी हो गयी है। अब तो दोनों बहनों में बडा प्रेम है। दुनिया-भर में सरस्वती के मानस-पुत्र ही लक्ष्मी के कृपाभाजन बनकर अपनी साधना में लगे हुए हैं। और विदेश मे ही क्यो? भारतवर्ष के हर प्रान्त मे सैकडो-हजारों घरों मे भी लक्ष्मी और सरस्वती ने एक साथ रहना-सहना शुरू कर दिया है।

देवी लक्ष्मी वाणिज्ये वसते—आज भी सच है। इसीलिए दूरदर्शियों ने विद्या और वाणिज्य का योग स्थापित किया है। किसी समय आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय ने अपनी रसायनशाला से अपने देशवासियों को यही संदेश दिया था। इसका कुछ परिणाम निकला भी था। लेकिन उसके बाद बहुत समय तक चुप्पी। सस्ती नारेबाजी का मोह छोड़कर कर्मयज्ञ आरम्भ करने का साहस किसी देशवासी में न उपजा।

मन की इस दु:सह अवस्था के साथ शिवसाधन फिर अपने काम पर विदेश चले गये। कुछ करने की जरूरत है, कुछ कितना ही छोटा क्यों न हो, शुरू करना ज़रूरी है। शिवसाधन पूरे उत्साह के साथ अपने निजी अनुसंधान के काम में लग गये।

उनके मित्रों में से कुछ मित्र रुष्ट भी थे। "तुमको क्या हो गया, शिवसाधन? क्या तुमने सर पी० सी० का दूसरा संशोधित संस्करण बनने की सोची है?"

किसी-किसी ने यह राय भी जाहिर की, "सर पी० सी० राय की तरह घुटनों से ऊपर तक मोटी धोती पहनने का इरादा कर रहे हो, ऐसा सुनने में आया है?"

शिवसाधन का इस तरह का कोई विचार न था। जिस काल में जो नियम हो उसी के अनुसार चलना चाहिए। मोटे खद्दर की जगह अब पोलि-येस्टर की पतलून पहनने से ही काम चलेगा; बाहरी आवरण से कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती, बशर्ते अन्दर का काम असली हो।

इसके बाद शिवसाधन विदेशी कम्पनी से छुट्टी और विदेश में संचित सब-कुछ लेकर देश लौट आये। छोटी मोटर-पम्प के जिस अनुसधान में उन्होंने हाथ डाला था, उसे विदेशी परिवेश की अपेक्षा स्वदेशी धरती पर और भी अच्छी तरह आगे बढ़ायेंगे, इस सम्बन्ध में शिवसाधन के मन में कोई सन्देह न था।

शिवसाधन ने हुगली के ग्रामीण परिवेश में मामूली किस्म की थोड़ी जमीन ली। जीवन-भर की जमा-पूँजी उस छोटी-सी अनुसधानशाला मे लगाने मे उसे बहुत लोगों ने रोका था। "बेवकूफी मत करो, शिवसाधन! अपने रुपयों को बैंक मे फ़िक्स्ड डिपाजिट मे रख दो। सूद के रुपयो से

आराम मे रहोगे। इस तरह कोई अपनी पूंजी लगाकर सट्टा नही खेलता।"

सिक्युरिटी, सिक्युरिटी ! इस बात को परिचित लोगों से सुनते-सुनते शिवसाधन के कान पकने लगे। जिस देश मे कुछ भी सुरक्षित न हो, जहाँ एक घूमते हुए ज्वालामुखी पर सब बैठे हों, वहाँ अपनी सुरक्षा के लिए इतना हिसाब-किताब करने से क्या फ़ायदा ? शिवसाधन यह बात न समझ सका।

कुछ साधारण स्थानीय युवकों के सहयोग से शिवसाधन ने कुछ दिनों मानवेतर परिश्रम किया। कितने ही दिन कारखाने से घर जाना ही नही हुआ। लोहे की एक फ़ोल्डिंग चारपाई पर शिवसाधन की रातें बीतीं।

कभी-कभी मन मे सन्देह भी होने लगता। जिस वस्तु को बनाने के लिए दिन-रात यह अनुसंधान चल रहा है, वह मिनी मोटर-पंप क्या अन्त मे सचमुच बन पायेगा ? आविष्कार की अधिष्ठात्री देवी क्या अन्त में शिवसाधन पर दया की वर्षा करेंगी ?

दिनोदिन धैर्य और साधन की निरन्तर परीक्षा चलती रही। रातें भी इससे अछूती नही रहीं।

बालीघाट स्टेशन से साइकिल पर सवार होकर अपने काम की जगह आते-आते शिवसाधन चौधरी की आँखों के आगे कई बार अँधेरा छा जाता था।

ऐसा भी हो सकता है कि शिवसाधन ने जिस यंत्र का सपना देखा है, प्रायोगिक विज्ञान में उसका अस्तित्व ही न हो। शिवसाधन शायद बेसमझे-बूझे जीवन के अपने कुछ अमूल्य समय को अवास्तविक स्वप्न के पीछे बरबाद कर रहा हो।

इस बीच पैसे समाप्त हो रहे थे। जो रुपया विदेश से लाये थे उसे समाप्त होने में देर न लगी। शिवसाधन ने अपना फ्रिज, टेपरिकार्डर और प्यारा स्टीरियो सेट बेचकर बैंक में कुछ रुपये जमा कर फिर सोचना शुरू किया।

मन का डर बोल पड़ा, 'शिवसाधन, तुम क्या कर रहे हो ? इस तरह कोई अपने सर्वनाश को नहीं बुलाता। इस बीच तुमने अपना बड़ा नुकसान

कर डाला है।'

शिवसाधन इस डर के तर्क से सामना नही करना चाहता था। "नुकसान ? मैंने क्या नुकसान किया है ? खतरा लिये बिना ससार मे कौन कब सिद्धिदाता का प्रेमपात्र हो सका है ?"

"शिवसाधन, तुम झूठे नशे में पागल होकर अपनी ओर न देखोगे ? तुम्हे पता नहीं कि इस बीच तुम्हारा कितना नुकसान हो गया है ?"

"जो सहपाठी तुम्हारे ही साथ विदेश गये थे उन्होंने इस बीच अपनी नौकरियों में कितनी उन्नति की है ! उनमें लगभग सभी ने विदेशों मे अभिजात स्थानों मे मकान खरीद लिये हैं। वे हर छुट्टी में गाडी पर सवार होकर ऐल्पस की सैरगाहों या फ्रांस के समुद्र तट पर छुट्टियाँ बिताते है। और तुम इस ठाकुरपुर मे निर्वासित होकर मच्छर और मक्खियों से परेशान अधनींदे रात काटते हो।"

शिवसाधन चुप। मन का डर उसे चुप कर देता, 'पिछले कई महीनों से तुम्हारा शरीर सूख गया है। विदेशों के साफ़-सुथरे परिवेश में कोई रोग तुमको छूता तक न था, आज तुम मलेरिया और पेचिश के शिकार हो गये हो।'

"अब मलेरिया हमारे वश मे है। पेचिश भी ठीक हो जायेगी," शिवसाधन जवाब देता है।

मन का डर तब हँस पड़ता। "शिवसाधन, तुम नही जानते कि तुम क्या खो रहे हो ! विदेश-प्रवासी तुम्हारे समवयस सहपाठी अब दुनियादार है। वे सुन्दर स्नेहमयी स्त्रियो के सुखद सपर्क में सुखपूर्वक जीवन बिता रहे हैं। रमला चौधरी, माधुरी सिनहा, श्रीमती गांगुली, एडिथ दास, पैट्रीसिया वसु—इनकी रगीन कोडाक्रोम फ़ोटो तुम्हारे अल्बम मे है, वे अपने पतियों के साथ किस प्रकार पूरी तरह से सुखी हैं। रमला और माधुरी के लड़कों और एडिथ की लडकियों को भी तुमने देखा है। और तुम इस ठाकुरपुर के जंगल में अजीब-से मोटर-पंप की मरीचिका के पीछे अकारण ही भाग रहे हो।"

रमला, माधुरी, श्रीमती गागुली, एडिथ, पैट्रीसिया और उनके पतियों की तसवीरों ने शिवसाधन को क्षण-भर के लिए कमज़ोर बना दिया,

यह कहना झूठ न होगा।

"किन्तु अरे डरपोक, एक और वाणी का अभी भी इस भूमंडल से लोप नहीं हुआ है। तुमने वह स्वर सुना नहीं है? मंत्र का साधन या शरीर का साधन?"

एक विदेशी महिला की असाधारण सुनहरी लटें शिवसाधन की आँखों के आगे क्षण-भर के लिए तैर गयीं। विदेश में सदा के लिए रहने का लोभ जब मन में झाँक रहा था, तब मार्गरेट के साथ शिवसाधन का परिचय गहरा होना शुरू हुआ था। लेकिन ग़रीब, अशिक्षित, अस्वास्थ्यकर, अँधेरे में डूबे भारतवर्ष के लिए मार्गरेट के मन में गहरी वितृष्णा थी। शिवसाधन को स्वीकारने के लिए भारतवर्ष में रुचि रखना जरूरी है, इस बात पर मार्गरेट को विश्वास न था। भारतवर्ष का हर घर युवती मार्गरेट के लिए एक तरह का कारागार था।

शिवसाधन ने समय रहते यह सम्बन्ध समाप्त कर दिया था। मार्गरेट को अफसोस हुआ था, लेकिन उसने शिवसाधन को जान लिया था। मार्गरेट ने कहा था, "शिव, अपने मदरलैंड के लिए तुम्हारी चिंता मैं समझती हूँ, लेकिन यह भी ध्यान रखना होगा कि तुम्हारे और मेरे बीच एक बहुत बड़ा अपरिचित उपमहाद्वीप फैला हुआ है।"

शिवसाधन का वह शुरू का दौर था। उसके बाद ठाकुरपुर की छोटी अनुसंधानशाला और भी अँधेरे से भरने लगी थी। सफलता के एकदम पास पहुँचकर शिवसाधन ने पाया कि वह लगभग ख़ाली हो गया है और तभी धन की सबसे अधिक आवश्यकता थी। मिनी मोटर और पम्पसेट के अब कई प्रोटोटाइप बनाना पड़ेंगे, मशीनों की भी विशेष आवश्यकता होगी और उसके साथ ही काम की जानकारी और फैलाव है।

धन के अभाव में शिवसाधन का सपना जब विफल होने को था, तभी शिवसाधन ने फिर विदेश की ओर मुँह किया। बहुतों ने सोचा था कि शिवसाधन कर्ज़ में गले तक डूब गया है, इंडियन हनीमून का उसका समय ख़तम हो गया, अब न लौटेगा। लेकिन कुछ सप्ताह बाद सबको ताज्जुब में डालकर शिवसाधन फिर देश लौट आया।

शिवसाधन को अन्त में आशा का क्षीण प्रकाश दिखायी पड़ा था। विदेश मे उसकी पुरानी कम्पनी डेनवर लिमिटेड शिवसाधन को सहायता देने के लिए तैयार हो गयी थी।

डेनवर का एक छोटा दफ्तर बहुत दिनो से कलकत्ता मे है। शिवसाधन का आविष्कार और उससे सम्बन्धित अनुसंधान और विकास का सारा काम डेनवर इंडिया लिमिटेड के अन्तर्गत आ जायेगा। अनुसंधान के बाद के सारे काम का खर्च डेनवर इडिया लिमिटेड बरदाश्त करेगा। शिवसाधन के मन में फिर भी कुछ सन्देह था। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय डेनवर के प्रमुख प्रबधक विशेषज्ञ मिस्टर डेविड न्यूमन ने कहा था, "शिवसाधन, तुम फ़िक्र मत करो। भारत मे डेनवर पर हमने इतने दिनो तक कोई ध्यान नही दिया। शिवसाधन, तुम-सा आदमी पाकर हम उपकृत ही होगे। हम तुम पर शुरू में कोई कठिन ज़िम्मेदारी डालना नही चाहते। हम चाहते हैं कि तुम जो मोटर-पम्प डेवलप कर रहे हो उसका काम पूरा हो।"

आर्थर न्यूमन के पिता मिस्टर डेविड न्यूमन से शिवसाधन का परिचय बहुत पहले का था। उन्होने शिवसाधन की पीठ पर हाथ रखकर कहा था, "यू आर डीलिंग विद ऐन ओल्ड फ्रेंड—तुम्हें कोई दिक़्क़त नही होगी। जिन लोगों ने टेक्नोलॉजिकल रहस्य समझा है, अन्तर्राष्ट्रीय डेनवर लिमिटेड उनकी मर्यादा को कभी हानि नही पहुँचाता। तुमको आस्ट्रेलियन डेनवर की बात मालूम है? वहाँ हमने पूरी ज़िम्मेदारी आर्ची गोमेज़ को दी थी। ही इज आलसो ए कॅलकटा बॉय। फ्राम रिपन स्ट्रीट। जल संसाधन की नयी प्रणाली के विकास मे उसने नये देश आस्ट्रेलिया मे बड़ा अच्छा काम किया और हमने उसका सम्मान किया। आर्ची गोमेज़ अगले महीने से आस्ट्रेलियन डेनवर लिमिटेड का मैनेजिंग डायरेक्टर होगा, हम तो नाम के वास्ते चेयरमैन हैं।"

डेविड न्यूमन ने और भी कहा था, "शिव, अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्ड से हमारी कम्पनी बहुत ही छोटी कम्पनी है, लेकिन हमारे पास साउड कास्टोग्राफ़िग टेक्नोलॉजी है। तुम्हारे काम के नतीजे के लिए हम बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगे। मै जानता हूँ, नतीजा, अच्छा निकलेगा। उसके बाद किसी दिन तुम्हारा काम देखने मैं खुद इडिया आऊँगा।"

शिवसाधन से हाथ मिलाकर डेविड ने आगे कहा था, "नयी मशीन के बनाने की जिम्मेदारी तुम लो और तुम्हारी देखभाल की जिम्मेदारी लेगा डेनवर इंडिया लिमिटेड।"

शिवसाधन के दिल में उस समय भी एक सन्देह था। वह बोला, "अगर मेरी कोशिश पूरी हो, मशीन उम्मीद पर पूरी उतरे तो एक शर्त है। मैं जहाँ काम कर रहा हूँ, वहीं फैक्टरी बने।"

"लगता है, तुम ठाकुरपुर के किसी गाँव की औरत के प्रेम में पड़ गये हो। प्रेम और रिसर्च दोनों ही क्रियेटिव प्रॉसेस हैं। कारखाना कहाँ होगा, उसे वही ठीक करेंगे जिन्होंने मशीन का आविष्कार किया है—मैं नहीं। तुम क्या इस बारे में कोई चिट्ठी चाहते हो?" डेविड न्यूमन ने जानना चाहा था।

"न, न, आपका कहना ही मेरे लिए काफ़ी है," कृतज्ञ शिवसाधन कठिन समस्या के सामयिक समाधान से खुश था। आर्थर न्यूमन के पिता डेनवर लिमिटेड के डेविड न्यूमन का वह चिरकृतज्ञ रहेगा।

डेनवर लिमिटेड के सहयोग के पीछे जरूर ही सफलता की आशा थी, लेकिन लाभ की आशा करना कोई अनुचित बात नहीं है। लाभ और लोभ एक चीज नहीं होते। अति लोभ के विष ने, भारतवर्ष के एक वर्ग के शोषकों ने देश को सर्वनाश के छोर पर ढकेल दिया है, और दूसरी ओर उचित लाभ की ओर ध्यान न देने के कारण सरकारी उद्योग गरीब देशवासियों की छाती पर भारी पत्थर की तरह रखे हुए हैं।

शिवसाधन जल्दी ही स्वदेश लौट आये और काम की सुविधा के लिए उन्होंने जल्दी ही डेनवर लिमिटेड के साथ अपने छोटे-से प्रतिष्ठान का अस्तित्व जोड़ दिया। इस वक्त तो काम ही बड़ी बात थी, इसीलिए वकालत की टेढ़ी-मेढ़ी शब्दावली का विश्लेषण करने में उसने और समय नहीं नष्ट किया। क्योंकि जिस अनुसंधान के काम में वह डूबे रहना चाहता था, वह अन्त तक कुछ फल देगा या नहीं, यह अभी तक ज्ञात न था।

बीच-बीच में शिवसाधन जिस तरह आशान्वित होकर खुश हो जाता था, उसी तरह कभी-कभी उसे असन्तोष सताने लगता था। शिवसाधन को ध्यान आ जाता कि दुनिया की सैंकड़ों अनुसंधानशालाओं में असख्य अनु-

संधानकर्ता जीवन-भर अपनी शक्ति के अनुसार काम करके भी भाग्यदेवी से कुछ नही पाते । अंधाधुंध सट्टेबाजी अब शेयर बाजार का खेल नहीं रह गया है, देश-देश की अनुसधानशालाओ में वह धुरी बनी हुई है ।

शिवसाधन की गाड़ी एकदम रुक गयी । नेशनल हाई-वे से उतरकर ख़लील अहमद ने केले के पेड़ों से घिरी आधी पक्की सड़क के छोर पर जहाँ गाडी रोकी थी—वहीं डेनवर इंडिया लिमिटेड का साइनबोर्ड दिखायी दे रहा था । यहाँ क्या काम होता है ? काम कहाँ तक आगे बढा है ? इसका बाहरी लोगों को पता नही ।

गाड़ी से उतर शिवसाधन ने एक बार अपने प्यारे मकान को इस तरह देखा, जिस तरह पहली सन्तान का पिता काम से घर लौटने पर बच्चे को देखता है ।

शिवसाधन जब अपनी सामर्थ्य पर निर्भर रहकर काम चला रहे थे तो मकान की बड़ी ख़राब हालत थी । डेनवर लिमिटेड के साथ गठबन्धन होने के बाद यहाँ की शोभा बढ़ गयी है । बहुत दिनों के बाद सब जगह रंग की एक परत से ही—आसपास का सब-कुछ चमक उठा है ।

शिवसाधन तेज़ी से एक बार सारे तल्ले पर घूम गये । समीप के एक बड़े शेड की तैयारी का काम भी पूरा हो गया था । अब वहाँ मझोले आकार की मशीनें लगायी जा रही थीं ।

शिवसाधन एक बोरिंग मशीन के आगे आकर खड़े हो गये । एक लड़का बड़े ध्यान से मशीन की परीक्षा कर रहा था ।

शिवसाधन ने जेब से कागज़ निकालकर लिखा, "अब कितने दिन ?"

लड़के ने नोट पढ़ा और हँसकर लिखा, "चौबीस घंटे और ।"

"धन्यवाद ।" शिवसाधन ने फिर लिखा ।

विदेश से हाल ही में आये मैनेजिंग डायरेक्टर आर्थर न्यूमन से इस लड़के को शिवसाधन अवश्य मिलायेंगे । बिलकुल गूँगा । इस ठाकुरपुर में ही ज़िंदगी बरबाद कर रहा था । शिवसाधन ने इसे ठोंक-पीटकर आदमी

बनाया। अवसर मिलने पर यह बड़े काम का आदमी बनेगा।

पास ही लेथ मशीन लगाने का काम चल रहा था। शिवसाधन वहाँ आ खड़े हुए।

तूबड़ी[1] कार्तिक वहाँ अधलेटी हालत मे इस तरह काम में डूबा था कि वह शिवसाधन को देख ही न सका। एक कुली के खोंचा मारने पर कार्तिक फट्-से उठ खड़ा हुआ। हाफ़ पैंट पहने कार्तिक चौधरी साहब को देखकर हँस पड़ा। हँसने में कार्तिक को बड़ी तकलीफ़ होती थी क्योंकि उसके सारे चेहरे की खाल आतिशबाजी की आग से जलकर सिकुड़ गयी थी और उसका चेहरा वीभत्स बन गया था।

इस अचल में तूबड़ी कार्तिक का पहले बहुत नाम न था। लेकिन नौकरी का अवसर पाकर काम की धुन मे कार्तिकचंद्र नन्दी मस्त रहते थे।

काम की ख़बर जानना चाहने पर कार्तिक फूट पड़ा: "हरामज़ादों पर बम छोड़ने के सिवा कोई रास्ता नही, सर। थोड़े-से बोल्ट भेजते-भेजते ये लोग बुड्ढे हो गये। नट-बोल्ट होते तो आज ही काम ख़तम कर देता।"

नये शेड मे जाकर शिवसाधन ने सुपरवाइज़र को बुलाया, "इस मशीन के लिए पावर-कनेक्शन कब आ रहा है?"

"अभी टाइम नही बताया जा सकता।"

"जो लोग समय नही देना चाहते उनसे समय ज़बरदस्ती छीनना पड़ेगा, दास!" शिवसाधन ख़फ़ा न हो सके।

"तुमने तो बेलूड़ से पास किया है? औद्योगिक क्रांति का इतिहास नहीं पढ़ा? उद्योग में समय से अधिक मूल्यवान कुछ नही। कह सकते हो कि समय ही सब-कुछ है। इसीलिए समय के साथ सदा रेस चलती रहती है।"

कम उम्र का दास शरमाकर बोला, "ज्यादा देर न होगी, मिस्टर चौधरी!"

शिवसाधन मुसकराये। समय के ज़रा-से व्यवधान से कितनी हानि हो सकती है, इसका इतिहास कारख़ाने के लड़कों को बताना उचित रहेगा।

---

1. आतिशबाज़

शिवसाधन अपने कार्यालय-कक्ष की ओर जाते समय अलेक्जेंडर ग्राह्म' बेल के बारे में सोच रहे थे। टेलीफ़ोन के आविष्कारक और विश्वविख्यात बेल टेलीफोन कंपनी के संस्थापक के रूप में उनको सारी दुनिया के लोग जानते हैं। लेकिन यह नहीं जानते कि एक और अमरीकी ने भी ठीक इसी समय टेलीफ़ोन का आविष्कार किया था और उसी दिन पेटेंट के लिए प्रार्थना-पत्र के साथ पेटेंट-ऑफिस की ओर भागा था। किन्तु ग्राह्म बेल अपने दफ़्तर मे बैठे, मात्र कुछ घंटे पहले पेटेंट का आवेदन-पत्र देकर अतुल वैभव और सम्पत्ति के अधिकारी बने हुए थे। दूसरे व्यक्ति की याद दुनिया में किसी को भी नहीं।

शिवसाधन ने अपनी मेज पर बैठकर कई ड्राइंगों पर जल्दी-जल्दी नजर डाली। आज कई दिन बाद चैन की साँस लेने की संभावना उन्हें दिखायी दे रही थी। कल्पनाशील शिवसाधन की मनोकामना अब निश्चित रूप से सफलता की ओर बढ़ेगी।

आर्थर न्यूमन के ठाकुरपुर पहुँचने मे ज्यादा देर न थी। डेनवर इंडिया लिमिटेड के प्रमुख डेविड न्यूमन का बेटा अचानक भारत आ धमकेगा, इसकी किसी को कल्पना भी न थी। कल्पनाशील डेविड न्यूमन ने किसी विचित्र विचार से प्रेरित होकर बर्मिंघम-शिक्षित अपनी सन्तान को डेनवर इंडिया का मुख्य प्रबन्धक बनाकर भारतवर्ष भेज दिया। सबको मालूम था कि डेविड न्यूमन के लिए सक्रिय जीवन से अवकाश का समय दूर न था और तब बृहत्तर दायित्व का बोझ अवश्य ही आर्थर न्यूमन को उठाना पड़ेगा।

डेनवर इंडिया लिमिटेड के अन्तर्राष्ट्रीय मानचित्र मे भारतवर्ष का स्थान बहुत ही छोटा था, लगभग नज़र न आने वाला। फिर भी डेनवर साम्राज्य के प्रिंस ऑफ वेल्स को इस देश में भेजकर डेनवर इंडिया को उन्होंने गौरवान्वित किया था।

आर्थर न्यूमन को जिम्मेदारी संभाले कुछ ही महीने हुए थे। यह आर्थर ही कभी पढ़ाई मे शिवसाधन का जूनियर था और होस्टल में साथ रहता था। उसके बाद दोनों ने एक साथ काम भी किया था। तब कौन जानता था कि भाग्य के विचित्र परिहास से यह आर्थर ही किसी दिन

शिवसाधन की कंपनी के कर्ता-धर्ता के रूप मे सुदूर भारतवर्ष आयेगा ?

स्वय प्रिंस ऑफ़ वेल्स को कलकत्ता कार्यालय में भेजने के मामले को लेकर सम्बन्धित विभागों में काफी जाँच-पड़ताल हुई थी। गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब में मिस्टर बाजोरिया के दाहिने हाथ सरकार के रिटायर्ड ज्वायंट सेक्रेटरी लाहिड़ी ने पूछा था, "क्या मामला है, मिस्टर चौधरी ? अंदरूनी रहस्य क्या है, बताइये न ?"

"डेनवर इंडिया मे किसी को तो भेजना ही था।" शिवसाधन ने सवाल को टाल देने का प्रयत्न किया।

सुरेन लाहिड़ी सतुष्ट न हुए। "तो हमारी खबर ही सुनिये। बाज़ार मे दो अफ़वाहें फैली है। नम्बर एक—होम ऑफ़िस अब इंडिया ऑफ़िस को उलट-पलट कर विराट स्केल पर कुछ करेगा। इसी अफवाह पर तो साढ़े तीन महीने सोये पड़े रहने के बाद कैलकटा स्टॉक मार्केट मे डेनवर के शेयर रातोरात डेढ़ रुपया बढ़ गये हैं।"

विजय-गर्व से सुरेन लाहिड़ी बोले, "मेरे शेयर ब्रोकर ने भी बताया था, कुछ डेनवर ले लीजिये, निश्चित रूप से सवा रुपया बढ़ जायेगा। लेकिन दाम बढ़ना तो दूर की बात, दूसरे ही दिन डेनवर एक रुपये चालीस पैसे का धक्का खा गया। बंबई से अचानक बेचने का दबाव आ गया। उनको पता चल गया था कि भारत मे स्पेशल ध्यान देना बेकार है। असल में बाप से बेटे का मनमुटाव चल रहा है, इसीलिए भारत मे स्वेच्छा से निर्वासन मिला। मैं बाल-बाल बच गया। नही तो कई सौ रुपयों का झटका खा जाता।" बाजोरिया ग्रुप के सुरेन लाहिड़ी ही-ही कर हँसने लगे।

इन सारी अफवाहों के पीछे कोई सचाई न थी। पिता के अवकाश लेने के बाद आर्थर न्यूमन होम ऑफ़िस में फँस जायेंगे, इसी से आर्थर बाहर घूमने की अपनी इच्छा अभी पूरी कर लेना चाहता था। फिर भारत के सम्बन्ध में आर्थर न्यूमन के मन मे भारी कुतूहल भी है।

"जब तुमने मुझे रे की 'पथेर पॅंचाली' दिखायी थी, तभी से मैं यह देश देखने का मौका तलाश कर रहा था," आर्थर न्यूमन ने यहाँ आते ही शिवसाधन को बताया था।

"पिता का भी कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने इंडिया देखने का वंडरफुल अवसर

दिया।" आर्थर न्यूमन ने बताया था।

'विदेशी कंपनी के मुख्य प्रबंधक के रूप में तुम्हें सिर्फ़ बिजनेसमैन, ब्यूरोक्रेट और बैंकरों का ध्यान रखना होगा। साल में एक-आध बार डीलर नाम के छोटे व्यापारी से भी तुम्हें हाथ मिलाना होगा; लेकिन देश और लोगों को देखने का वक्त तो मिलेगा नहीं। अभी तक किसी विदेशी कंपनी के साहब ने यह सब-कुछ नहीं देखा,' शिवसाधन ने मन-ही-मन सोचा। आर्थर न्यूमन अब कंपनी का मैनेजिंग डायरेक्टर है, उसके साथ मजाक न करना ही अच्छा है।

आर्थर न्यूमन अपने-आप ही बोले, "लुफ़्तहंसा की फ़्लाइट पर इस देश को आते समय रास्ते में एक जर्मन अध्यापक ने कहा था, 'अँग्रेज़ आई० सी० एस० लोगों के बाद विदेशियों की डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया खतम हो गयी। नयी जेनरेशन के प्रवासी अमरीकी ग्रुप टूरिस्ट की तरह अपने छोटे-से थाईलैंड में बने रहना पसंद करते हैं'।"

डेनवर इंडिया के बड़े साहब के मुँह से निकली ये बातें चेयरमैन माओ की वाणी की तरह क्रान्तिकारी थीं। शिवसाधन ने ज़रा अटपटा लगने पर भी मुँह नहीं खोला। जो जी चाहे वही कर डालने की असीम स्वाधीनता ही आज की पश्चिमी सभ्यता की प्राणशक्ति का अन्यतम स्रोत है। यही आज़ादी अकसर समस्याएँ भी पैदा कर देती है, किन्तु नये जीवन के इसी स्वर को पकड़, इसी मार्ग पर चलकर पश्चिमी सभ्यता बार-बार पुनरुज्जीवित हुई है।

शिवसाधन चाहते थे कि हमारे देश में भी यह प्राणशक्ति अंकुरित हो कि जो मन चाहे उसे करने की खुशी में आदमी सुखी बना रहे। गरीबी जरूर उस मार्ग में बहुत बड़ी बाधा थी। इस अभागे देश में सुख के मुकाबले सुरक्षा सौगुनी मूल्यवान है। इस सुरक्षा की बलिवेदी पर हम देश के श्रेष्ठ लड़कों को नपुंसक बनाये दे रहे हैं और प्रायः सारी लड़कियों की बलि अग्नि को साक्षी बनाकर मड़वे के नीचे दिये जा रहे हैं।

मन में इन सारी बातों के उभरने से शिवसाधन को बहुत कष्ट होता था। इस ट्रैजडी का समाधान ढूँढने के लिए मन छटपटाया करता। शिवसाधन ने सोचा कि इस कलकत्ता में कुछ धनी परिवार ऐसे हैं, जहाँ शिक्षा

का प्रकाश पहुँच रहा है। ये धनीपुत्र यदि पैतृक व्यवसाय से बाहर थोड़ा सोचना सीखते, इन्हें यदि इस विशाल देश की असीम विचित्रता मुग्ध करती तो मुक्ति का दशक बहुत आगे बढ आता। लेकिन जो नहीं होता है, उसे सोचने मे क्या लाभ ? अँग्रेजी माध्यम से प्रभु यीशु की प्रचारक शिक्षा-पद्धति में ऐसा कोई रसायन अवश्य है, जो मनुष्य के भीतर स्थित कल्पना को पेथिड्रिन निद्रा में समाहित कर देता है और सदा सजग संरक्षक इंद्रियों के द्वारो पर पहरा देता रहता है।

नहीं, इस सारे सोच-विचारों की कोई सार्थकता नहीं। अब काम का समय है। जो जितना कर सके, उतना काम करता चले। उसके बाद शायद फिर विवेकानन्द या सुभाषचन्द्र की तरह के व्यक्तित्व का आणविक विस्फोट सभव हो।

तभी शिवसाधन को भीतर मोटर के घुसने की आवाज सुनायी दी। जरूर आर्थर न्यूमन आ गये हैं।

"हलो शिव !" स्निग्ध मुसकराहट से आर्थर न्यूमन छलक रहे थे। जेब से कघी निकालकर छितराये हुए बालों को न्यूमन ने ठीक किया।

न्यूमन थोड़ा लँगड़ाकर चलते हैं। बचपन में एक बिगड़ैल घोड़े ने राइडिंग क्लब में उनको 'ले-ऑफ़' कर दिया था। चिकित्सकों के सारे प्रयत्नों के बाद भी थोड़ा लँगड़ापन रह ही गया था। लेकिन इस कमी को छोड़कर आर्थर का व्यक्तित्व बहुत ही शांत और स्निग्ध था। शरीर में कहीं भी चर्बी की बहुतायत न थी। जिनका मध्य देश फुटबाल की तरह फूला रहता है, वैसा शरीर के प्रति सावधान रहने वाले आजकल के युवक-युवतियों को देखकर लगता ही नहीं। व्यायाम और नियम के बन्धन में बँधे सारे शरीर मानो एक ही आई-एस-आई मार्क के हों। मार्गरेट के शरीर में भी शिवसाधन ने यह बंधन और सीमा देखी थी। कहीं भी जरा-सी शिथिलता और लापरवाही न थी। यौवन को जयतिलक देने से पहले पश्चिम के लोगों ने शरीर को देवता का सम्मान दिया था। शिवसाधन को

याद आया कि मार्गरेट हर रोज नियमित व्यायाम किया करती थी।

सुदूर पूर्व भारत के ठाकुरपुर में मार्गरेट के बारे में व्यर्थ में क्या सोचना ? शिवसाधन अब मामूली-सी कोई चीज बनाकर खड़ा करना चाहते है, कोई ऐसी चीज कि जिससे कम-से-कम कुछ स्थानीय लोगों के खाने का आधार हो जाये, जिससे कि दुनिया वालों को दिखाकर कहा जा सके : देखिये दास, घोष, मित्र सचमुच निकम्मे नहीं हैं। ठीक तरह से शिक्षित होने पर ये सब काम कर सकते है। ये आकार में पहाड़ की तरह न होने पर भी मेहनत से डरने वाले नही है। श्रम की महिमा इस निराश जाति के हृदयों में फिर प्रतिष्ठित होगी।

आर्थर न्यूमन अभी हाल ही में देखी सत्यजित राय की नयी फ़िल्म के नशे में डूबे हुए थे। "शिव, कल तुमने क्या कुछ न खो दिया ! कल तो आँखों की बड़ी दावत हो गयी। रे में कमाल की बात यह है कि उनकी तसवीर का विलेन, गुंडा, किडनैपर होने पर भी इतना कलात्मक, इतना सुन्दर, इतना प्यारा है।"

"इंडियन गुंडों के प्रेम में मत पड़ जाना आर्थर, यह सलाह सत्यजित राय भी न देंगे।" शिवसाधन ने मजाक किया।

"मुझे तुमसे शिकायत है, शिव। उस दिन ऑफ़िस की मीटिंग में तुमने मुझे मिस्टर न्यूमन कहकर क्यों बुलाया था ?"

"तुम इस कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर हो, मैं इस कंपनी में नौकरी कर रहा हूँ। इस देश में यही नियम है। बाहर हम जो भी हों—ऑफ़िस में सम्बन्ध दूसरी तरह का होता है।"

"हमारे देश में तो ऐसा नहीं होता। तुम भी पश्चिम के चलन पर चलो।" न्यूमन संतुष्ट नहीं थे।

"तुम लोग पचास बरस पहले जो करते थे, हम अब वह करते हैं। हमेशा आधी शताब्दी का फ़र्क रहता है।" शिवसाधन ने मजाक की ओट में सच बात कह डाली।

आर्थर न्यूमन ने घूम-घूमकर सब-कुछ देखा। उसके बाद चाय पीते-पीते बोले, "शिव, तुम पर हमें अगाध विश्वास है। तुम्हारा यह मिनी मोटर-

पम्प अवश्य सफल होगा, इस बारे मे मुझे कोई सदेह नही है।"

"इतना आशावादी बनने से मुझे डर लगता है, आर्थर ! इस देश मे कोई भी चीज आसानी से नही होती। कोई अलक्ष्य अभिशाप इस अभागे देश की सभी चीजो में देर कर देता है। फिर इस असह्य परिवेश मे समय ही सब-कुछ है। हमारे पास समय नही है, समय-विलासता हमे रास नही आती।"

"समय की सीमा के बाहर तो तुम अभी भी नही गये हो, शिव !" न्यूमन के प्रसन्न व्यक्तित्व ने शिवसाधन को कृतज्ञतापाश मे बाँध लिया।

"अभी तो डिजाईनिंग की समस्या दूर हुई है। प्रोटोटाइप बन गया है। इसलिए इस समय सब तरह की गोपनीयता रखी जायेगी। बीस पम्प तैयार होने पर ही पेटेंट के लिए आवेदन और उसके साथ ही विभिन्न गाँवों में पम्पो को व्यवहार मे लाकर देखना होगा। मैं पहले इन्हें कलकत्ता के आस-पास लगाकर देखना चाहता हूँ, आर्थर !"

"अपने पम्प की कहाँ परीक्षा करोगे, इतनी स्वाधीनता तुमको है, शिव ! आस-पास के गाँवों में परीक्षा करना ही तो बुद्धिमानी का काम है। खर्च कम लगेगा, तुम खुद जाकर ज्यादा वक्त के लिए देखभाल भी कर सकते हो।" न्यूमन ने उत्तर दिया।

"उसके बाद पम्प बनाने का इन्तज़ाम—कमर्शियल प्रोडक्शन। उसमें कितने दिन लगेंगे ?" शिवसाधन इसका अनुमान लगा पाने में अक्षम थे।

"कोई अड़चन नही आयेगी, शिव ! तुमको तो मालूम है, पम्प का इडस्ट्रियल लाइसेंस और उत्पादन बढाने का लेटर ऑफ इन्टेंट हमारी कपनी के पास पहले से हैं। दाम अधिक और कम समय तक चलने से हमारे पम्पो का उत्पादन कम होते-होते लगभग बन्द हो गया है। सरकारी अनुमति की अपेक्षा न कर पुराने लाइसेंस पर ही काम चलाते रहेंगे।"

शिवसाधन बोले, "मैंने हिसाब लगाकर देखा है, इस क्षेत्र में हम कुछ महीनो मे ही जादू दिखा सकेंगे। उसके बाद धीरे-धीरे नयी-नयी मशीनें लाकर गाँव-गाँव मे पम्प फैला दिये जायेंगे।"

शिवसाधन जैसे जागते हुए मीठे सपने देख रहे हों। कलेजे में शांति की

कैसी शीतल हवा भर गयी है ! "ओह, उसके बाद...।"

उसके बाद छुट्टी की जायेगी, शिवसाधन कहने जा रहा था। शिवसाधन ने हिसाब लगाकर देखा था कि उतने पम्प लगाने से कम-से-कम हजार स्थानीय परिवारों की रोज़ी-रोटी का ठिकाना हो ही जायेगा। तब शिवसाधन एक बार फिर मार्गरेट का हाल-चाल मालूम करने के लिए अचानक विदेश जायेगा। पिछले क्रिसमस को शिवसाधन को मार्गरेट की चिट्ठी भी मिली थी। उसने जानना चाहा था कि अपने को इस तरह समाप्त कर देने की उसकी इच्छा अब भी बलवती है या नहीं ? शिवसाधन को मार्गरेट से जो कुछ कहना था, बहुत दिन पहले कह दिया था। शिवसाधन को पता चला था कि मार्गरेट ने अब तक किसी से विवाह नहीं किया है। शिवसाधन भी तो मार्गरेट की यह अंध भारत-नीति पसन्द नहीं करता। फिर भी कहीं उसके मन में जैसे जलती बरफ़ की-सी दीप्तिमयी मार्गरेट के लिए विशेष दुर्बलता थी।

आर्थर न्यूमन शिवसाधन की ओर देखकर धीरे-धीरे हँसे। 'उसके बाद' का जवाब इस बीच निश्चित हो गया था। डेविड न्यूमन के अवकाश लेने पर आर्थर अपने देश लौट जायेंगे, और इस छोटे प्रतिष्ठान को बड़ा बनाने की सारी जिम्मेदारी तब शिवसाधन पर ही पड़ेगी। कुछ ही महीने बाद डेनवर इंडिया लिमिटेड के पहले भारतीय डायरेक्टर शिवसाधन बनेंगे।

आर्थर न्यूमन ने शिवसाधन के मुँह की ओर देखा। बोले, "बाद की एकमात्र बात क्या हो सकती है, उसका अंदाज लगाना तुम्हारे लिए मुश्किल न होना चाहिए, शिवसाधन ! इन द मीन टाइम, आई विश यू ऑल द बेस्ट," यह कहकर न्यूमन ने अपना दाहिना हाथ शिवसाधन की ओर बढ़ा दिया।

शिवसाधन के सहकर्मियों ने ठीक उसी समय उनके आगे पेस्ट्री, पैटीज और सैंडविच की प्लेटें रख दीं। आते समय ये चीज़ें शिवसाधन पार्क स्ट्रीट में 'क्यूरी' से खरीद लाये थे।

खाने की चीज़ों की ओर देखकर आर्थर बोले, "यह सब क्या किया, शिव ? सात समुद्र पार इस देश में निश्चय ही मैं पेस्ट्री और पैटी खाने नहीं

आया। व्हाई नॉट लोकल डिशेज ?"

शिवसाधन बोले, "कंपनी के साहब लोग इस देश में साहब ही बने रहते हैं। कलकत्ता जैसा ब्रिटिश नगर अब ब्रिटेन में भी ढूंढे नहीं मिलेगा। यहाँ डिनर के निमंत्रण में कपड़ों के बारे में कोई उल्लेख न रहने पर भी ईवनिंग जैकेट पहननी पड़ती है।"

"कम ऑन।" आर्थर न्यूमन हँसने लगे। "इंग्लैंड के लोगों की मजाक मत उड़ाओ। द राज इज लांग डेड, सो इज विक्टोरियन इंग्लैंड, दुनिया के सारे स्कूली लड़कों को यह पता है।"

आर्थर न्यूमन की यह सरलता शिवसाधन को बहुत अच्छी लगती है। और डर भी लगता है। लगता है, साम्राज्यवादी-संस्कृति के कलकत्ता का आदमी अब भी अँग्रेजों से तमाम अँग्रेजियत की आशा करता है। अँग्रेजियत न दिखाना आर्थर की महानता थी, लेकिन काम के मामले में यह कितनी सुविधाजनक थी उसे शिवसाधन चौधरी खुद भी नहीं जानते। दफ्तर में इन कुछ ही महीनों में ही उन्होंने जो जानकारी प्राप्त की थी, उससे संदेह होता था कि चुनाव का बक्सा छोड़कर और कहीं भी प्रजातांत्रिक बरतने और मनुष्य को समान दृष्टि से देखने की सर्वसामान्य इच्छा इस देश में ऊँचे या नीचे किसी स्तर पर नहीं है।

"क्या सोच रहे हो, शिव ?"

शिव इस समय सोच रहे थे कि बराबरी की इच्छा भीतर से न जागने से मनुष्य क्या कभी समान हो सकता है ? 'वी द पीपुल ऑफ इंडिया' नाम से इंपीरियल पार्लियामेंट के गोल घर में, मोटे पार्चमेंट पेपर पर सौ के लगभग लोगों के हस्ताक्षर करने से क्या करोड़ों असहाय लोगों के लिए प्रभुसत्तासम्पन्न प्रजातांत्रिक गणतंत्र सच हो गया ? लेकिन ये सब बातें विदेशी न्यूमन को सुनाने के लिए नहीं हैं, उससे उलझन और भी बढ़ जायेगी।

"बहुत सोचा नहीं करते, शिव ! हमारी पिछली पीढ़ी के लोगों ने ज्यादा सोचकर ही यूरोप-अमरीका को खो दिया। अब ईट ड्रिंक एंड बी मेरी। कल की बात कल सोचो। जर्मन इससे भी एक क़दम और आगे बढ़ गये। जर्मन कंपनियों को जर्मनी से बाहर भेजने के लिए, तलाश करने पर

भी लोग नही मिलते। जर्मन लोग देश के बाहर जाना पसन्द नही करते।"

अब आर्थर न्यूमन ने विदा ली। घडी की ओर देखकर बोले, "रास्ते में मैंने एक सुन्दर मन्दिर देखा था। वहाँ मैं कुछ देर रुकूँगा।"

विदा के लिए बाहर छोड़ने के लिए आने पर एक और आश्चर्य सामने था। "आर्थर, तुम्हारा ड्राइवर?"

"मैं खुद ही चलाकर आया हूँ, शिव! बताओ, अपने देश मे ड्राइवर कहीं मिलता है? आजकल तो गाड़ी भी नही मिलती। हाथ में छाता लेकर ट्यूब रेल से सारा रास्ता तय करना पडता है।" आर्थर न्यूमन ने गाड़ी स्टार्ट की।

फोरमन गणेश विश्वास बोला, "बड़ा खुले दिल वाला अँग्रेज है, सर! बड़े साहब लगते हो नही।"

दफ्तर के कमरे के पास लौटकर गणेश विश्वास बोला, "मुझे बहुत डर लग रहा है, सर!"

"क्यों डरने की सहसा क्या बात हो गयी?" शिवसाधन ने पूछा।

"यह साहब टिकेंगे न! हमारे जले भाग्य मे इतनी अच्छी चीज़ रहती ही नही।" गणेश विश्वास की बात ठाकुरपुर की इस कड़कती दुपहरी मे अजीब-से रहस्य से भरी सुनायी पड़ी।

पतितपावन पाइन अपने छोटे-से वातानुकूलित कक्ष मे बहुत अधिक व्यस्त हैं। सवेरे से एक बार भी साँस लेने की फ़ुरसत नही मिली।

कलकत्ता शहर को हो क्या गया है? सुना जाता है कि यह धीरे-धीरे मरता हुआ शहर है, इसमे कुछ नही होता। डॉक्टरो के दवाखानों मे लंबी लाइनें, वकीलों की परेशान हालत, आडिटरों को सिर उठाने की फुरसत नही, दर्जनो नये बैंक खुल रहे हैं, ज़मीनों के दाम और फ्लैटों की क़ीमतें धीरे-धीरे बढती जा रही है, कमरों के लिए व्यापारी लोग बड़ी-बड़ी पगडी दे रहे हैं। अभी कुछ पहले ही प्रेमस्वरूप ढोलकिया ब्रैबोर्न रोड पर रसोई-

घर जितने एक कमरे के लिए एक लाख रुपये खुशी से पगड़ी के दे रहे हैं। उसी के कागज-पत्तर तैयार करने थे।

इन्ही ढोलकिया ने कृष्णधाम मार्केट में उलटे-सीधे लगभग तीन लाख रुपये लगाये हैं। वच्चू का दिमाग खराब हो गया है। पूरा हाई राइज मार्केट ही मंजूरी के बिना गैरकानूनी ढंग से बन रहा था। तभी कोर्ट से इजक्शन ले लिया गया। काम-काज सब टप्प। ढोलकिया सिर पर हाथ रखे बैठ गये।

पिछले सप्ताह प्रेमस्वरूपजी को रात के साढ़े आठ बजे पतितपावन के पास आना पड़ा था। सोचते-समझते नही कि क़ानून में भी इमर्जेंसी होती है। अस्पताल की तरह सारी रात खुला रखने पर भी परामर्श लेने वाले आदमी नही मिलते।

प्रेमस्वरूपजी बोले, "सर्वनाश हो गया, मिस्टर पेइन ! कम-से-कम नौमंजिले पर छत डालने का काम मुझे किसी तरह खतम करना ही होगा।"

पाइन बोले, "प्रेमस्वरूपजी, हाईकोर्ट का यह इंजंक्शन वैकेट कराने से गोवर्धन पर्वत हटाना अधिक आसान है। नही कर सकेंगे। इससे अच्छा है कि कुछ धर्म-कार्य मे मन लगायें।"

"काम में जीत होने पर मुझे धर्म के काम मे किसी तरह की कोई आपत्ति नही है, पेइन सा'ब !"

"अरे बाबा, पेइन नही, पाइन ! मैं किसलिए इस आदमी को दुख दूं? दुख का नाश ही तो मेरा काम है।"

पतितपावन ने इसके बाद प्रेमस्वरूपजी को बहुत ही गोपनीय सलाह दी। अभी बेस्ट डेकोरेटर के पास जाकर रात-भर का पंडाल डालिये। उसके साथ ही बेस्ट कीर्तन-मंडली के साथ आठ पहर हरिकीर्तन का इतजाम कीजिये।

"कीर्तन से क्या भगवान का मन पिघलेगा ?" प्रेमस्वरूपजी के मन से अभी भी शक झांक रहा था।

"भगवान नहीं पिघलेंगे, लेकिन काम में जीत होगी। कृष्णधर्म मार्केट के नौमंजिले पाड़ के नीचे आठों पहर का हरिनाम और छत डालने

का काम एक साथ चले। कार्पोरेशन के आदमियों को बिलकुल मत घुसने देना। धर्म के काम मे रुकावट डालने का उनको कोई अधिकार नही है। और डेकोरेटरों से पिछली तारीख मे सर्टिफ़िकेट ले रखना, इजंक्शन से बारह घंटे पहले ही पाड़ पूरा ढल गया था और कीर्तन शुरू हो गया था।"

प्रेमस्वरूपजी बहत्तर घंटे मे छत डालने का काम पूरा कर, नौमंजिले पर दरवाजे-खिड़की लगाकर, आज धन्यवाद देने आये थे। "पेइन साब, आप सचमुच पतितपावन हैं।"

इसके बाद बैबोर्न रोड जायदाद को पट्टे पर देने से संबधित मसौदा तैयार कराना था। अत्यन्त आवश्यक काम। पतितपावन ने मिस सैमुअल को बुलाकर डिक्टेशन दी। मिस्टर ढोलकिया हाथों-हाथ दस्तावेज ले जायेंगे।

हाथों में दस्तावेज आने पर मिस्टर ढोलकिया खुश हो गये। हाथों-हाथ पाइन को भुगतान कर उन्होंने जाना चाहा। मिस्टर पाइन मजे-मजे में आँखें बंद किये बोले, "थैंक यू, पाँच सौ एक रुपये रख जाइये।"

ढोलकिया इस बात से सन्तुष्ट प्रतीत हुए। ज़रा हँसकर जेब टटोलते-टटोलते उन्होंने पूछा, "मिस्टर पेइन, इस ड्राफ़्ट को बनाने में आपको कितना समय लगा?"

मिस्टर पतितपावन पाइन ने आँखों पर से चश्मा उतारकर मेज़ पर रखा। "प्रेमस्वरूपजी, बिल के खर्चों को अलग-अलग करके दिखाने का मेरा अभ्यास बहुत दिन पहले से छूट चुका है। फिर भी आप जानना चाहते है कि मैंने कितनी देर में पाँच सौ एक रुपये का रोज़गार किया तो सुनिये, दस मिनट डिक्टेशन और पैंतीस बरस कानूनी सलाह देने मे।"

शरारती मुसकराहट के साथ प्रेमस्वरूप मेज पर सौ-सौ रुपये के पाँच नोट रख चुपचाप खिसक गये। लेकिन पतितपावन पाइन का सवेरे-सवेरे जी खट्टा हो गया।

मिस सैमुअल बंगाली क्रिश्चियन लड़की है। साँवली है, लेकिन हिरनी की-सी काली आँखें हैं उसकी। शरीर की शोभा दोषरहित है। मिस सैमुअल समझ गयी कि साहब का मिजाज ठीक नही है।

पतितपावन बोले, "जो क्लाइट भाव-ताव करते हैं, मैं उनका काम नहीं करता। मेरी वह स्टेज बहुत पीछे छूट गयी है। अगली बार ढोलकिया अपायटमेंट चाहे तो उसे कम-से-कम दो दिन तक चक्कर लगवाना, अनीता !"

मिस सैमुअल बोली, "सवेरे से आपने चाय नही पी, मिस्टर पाइन !"

पतितपावन बोले, "और दस मिनट रुको। पेनिनसुलर रबर कम्पनी का आदमी बैठा है।"

पतितपावन ने कार्ड की ओर देखा। सनातन सिद्धान्त, इंडस्ट्रियल रिलेशन मैनेजर, पेनिनसुलर रबर। पतितपावन ने एक बार होंठ बिचकाये। इंडस्ट्री नही, रिलेशन भी भाड़ में गया! फिर भी पेनिनसुलर कपनी मे बस यह आई० आर० एम० चन्द्रमा की कलाओं की तरह बढ़ता जा रहा है।

"आइये, आइये, मिस्टर सिद्धान्त ! हाल-चाल ठीक है ?" दांत निकाल हँसते हुए पतितपावन ने मुँह खोला।

"आपके आशीर्वाद से खबर बुरी नही है। मुझे अगला ऊँचा ग्रेड मिल गया है। पैंतीस लोगों की और छटनी किसी तरह करनी होगी। मिस्टर गाडोदिया की आपसे यह विशेष रिक्वेस्ट है।"

"इसमे फिक्र की क्या बात है ? पिछले साल भी तो चालीस पट्ठों की बलि की व्यवस्था कर दी थी। दिक्कत क्या है ? इससे पहले आपके गाडोदिया साहब ने तो लायन एंड पाल के विश्वंभर पाल से कानूनी सलाह ली थी; तीन महीने बेकार परेशान होने के बाद इस नाचीज की याद आयी।" पतितपावन पाइन के मुँह से व्यावसायिक सफलता का गर्व फूट पड़ा।

सनातन सिद्धान्त बोले, "ऐसे मामलों मे आप ही का तो एकमात्र भरोसा है, मिस्टर पाइन ! हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, लेबर ट्राइब्यूनल, कौंसिल—सब रहने पर भी कुछ न रहेगा अगर आप सभी कामो मे समन्वय न करें।"

"कोआर्डिनेशन की हिन्दी शायद समन्वय है ?" पतितपावन ने पूछा।

"हिन्दी नहीं सर, बँगला।"

"बँगला मुश्किल हो गयी है न—मुझे हिन्दी लगती है।" पतितपावन ने अपनी भाषा-ज्ञान की कमजोरी स्वीकार की।

सनातन ने तुरंत जिबह की चिट्ठियाँ पतितपावन को दिखायीं।

"वाह, छटनी का काम तो आपने अच्छा सीख लिया है। एकदम पक्का हाथ है। कहीं क़लम नहीं लगानी पड़ रही है," पतितपावन ने तारीफ की।

"यह छटनी की सर्जरी हमारी कार्मिक प्रबंध की लाइन में सबसे कठिन काम है, मिस्टर पाइन ! आप जैसे एक्सपर्ट की मदद लिये बिना तसल्ली नहीं होती। कहीं कोई गलती रह जाये और सुप्रीम कोर्ट में कंपनी को जुर्माना देना पड़े।"

पाइन को मन-ही-मन बहुत खुशी हुई। "क्या करें मिस्टर सिद्धान्त, जैसा देश वैसा भेस। दूसरे तमाम देशों में छटनी करने में तीन मिनट लगते हैं, मुस्लिम तलाक की तरह। 'यू आर फायर्ड' कहते ही छटनी हो गयी। यहाँ कुछ लोगों की छटनी के माने विश्वयुद्ध।"

सनातन सिद्धान्त हलके-से हँस पड़े। "मुँह से कुछ भी क्यों न कहे, मन में कोई दुख नहीं। इसीलिए तो इस देश में कार्मिक प्रबंध की लाइन में इतने लोग खाना पा रहे हैं। मैंने सुना है सर, प्रति सौ श्रमिकों के पीछे इतने पर्सोनेल-वेलफ़ेयर अफ़सर दुनिया में कहीं नहीं हैं।"

पतितपावन बोले, "छटनी का काम अच्छी तरह सीख लीजिये। रिटायर होने के बाद अगर कंसल्टेंसी प्रैक्टिस करेंगे तो बड़ी माँग रहेगी। नहाने-खाने का वक़्त भी नहीं मिलेगा।"

अब सनातन सिद्धान्त ने एक और दस्तावेज़ का मसौदा पतितपावन के आगे रखा।

दो-एक छोटे-मोटे संशोधन करते-करते पतितपावन बोले, "क़ानूनी मामलों में कभी ज़ोरों से मत खाँसियेगा, हमेशा गले में ज़रा-सी खाँसी रहने दिया कीजिये।"

"और सर, हमारा काम इन्सान से रिलेशन का है, इसलिए आदमी को सीधे-सीधे जो कुछ बताया जा सके, बता देते हैं।"

सनातन सिद्धान्त की बात से पतितपावन पाइन संतुष्ट न हुए। "दिन मे दफ्तर का काम निबटाकर शाम को रामकृष्ण मिशन में पहुँचने पर इस तरह का आदर्श बघारियेगा। कार्मिक रिलेशन के साथ कार्मिक का और पब्लिक रिलेशन के साथ पब्लिक का मामूली-सा भी सम्बन्ध नही है— यह बात सडकों पर घूमने वाले छोटे-छोटे लडके तक जानते है, मिस्टर सिद्धान्त !"

मिस्टर सनातन सिद्धान्त खिल्-से हँस पडे।

अब पतितपावन बोले, "यह जो हमारी क़ानूनी लाइन है, इसमे क़ानून से वचकर किस तरह गैरकानूनी काम किया जाये, इसकी राह न दिखाने पर लोग सलाह लेने नही आयेंगे।"

पतितपावन ने इसी बीच जल्दी से दो-एक और पत्रो के मसौदे पढ डाले। "अच्छा लिखा है। छुरी खूब तेज की गयी है और बकरे को पहले से दिखायी भी नही गयी।"

"यह सब आपकी गाइडेंस का फल है, सर! आपसे पहले ली गयी सलाह मैंने अच्छी तरह से याद कर रखी है।"

"यह क्या ? थोड़े-से कुछ रुपये बचाने के लिए पुरानी सलाह पर कभी काम मत करना। हमेशा क़ानून की ताजा सलाह लेनी चाहिए," पतितपावन ने फ़ौरन जवाब दिया।

"नही, सर, आपने बहुत ही कीमती और सच बात कही। जिबह की तरह छटनी दो तरह की होती है। कोई एक झटके से काटता है तो कोई ढाई पेंच मे। हमारा दाँव ढाई पेंच का है, सर! उस बार चालीस आदमी, इस बार पैंतीस और इसके बाद अगली बार स्वचालित क्रिया मे पच्चीस आदमी गये।"

छटनी सम्बन्धी काग़ज़ो को वापस करने के बाद पतितपावन को सनातन सिद्धान्त को विदा करने का खयाल आया। किन्तु सनातन ने मुँह फाड़ा। "बाद के काम ?"

"चिट्ठी हाथो में पकड़ाने पर आपका काम खत्म। इसके बाद मेरा बिल और आपका इन्क्रिमेंट।"

सनातन सिद्धान्त किन्तु-किन्तु करने लगे। "सभी सभ्य समाजो मे ऐसा

ही करना उचित है। किन्तु कलकत्ता तो धीरे-धीरे भयानक पशु होता जा रहा है। छटनी का कागज़ हाथ में पकड़ा देने के बाद क्या होगा, ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि अचानक काम ठप्प करके घेराव शुरू कर दिया जाये। घेराव रोग मलेरिया की तरह फिर से फैलता दिखायी पड़ रहा है।"

सनातन सिद्धान्त ने कागजों का एक और सेट पतितपावन की ओर बढ़ा दिया। "मैं सर, मेडिकल पेशेंट आदमी हूँ। अगर घेराव हुआ तो उसके लिए मैजिस्ट्रेट के नाम यह दरखास्त है। और उसके फेल होने पर, कंपनी के एक सौ गज़ के घेरे में कोई झगड़ा न खड़ा कर सके, उसके लिए हाईकोर्ट में दी जाने वाली दरखास्त के सारे कागजपत्तर पहले ही तैयार कर लिये हैं। राम के पैदा होने से पहले ही तो रामायण लिख दी गयी थी।"

सारे कागज़-पत्तरों पर पतितपावन ने तेज़ी से निगाह डाली। प्रशंसा के स्वर में बोले, "मिस्टर सिद्धान्त, आप यह काम कर सकते हैं।"

"यह क्या, सर ? यह भी तो आपका ही सिखाया हुआ गुर है। पिछली बार आपने उपदेश दिया था, लेबर के मामलों में हमेशा अगला क़दम तैयार रखा करो। दूरदर्शी लोग पाने के दिन ही खोने, मिलन के दिन ही वियोग और नियुक्ति के दिन ही छटनी के लिए खामोशी से तैयार रहते हैं।"

"ओ. मिस्टर सिद्धान्त, ठीक समय और युग में जन्म लेने पर आप कथामृत के थीम हो सकते थे। किससे बातों-बातों में कब क्या कह दिया, आपने वह सब याद दिला दिया।"

सनातन सिद्धान्त ने मैजिस्ट्रेट के नाम प्रार्थना-पत्र और हाईकोर्ट की पेटीशन के कागजों पर दस्तखत करके मिस्टर पाइन के पास रख जाना चाहा।

घेराव ! घेराव !! घेराव कभी हुआ था। कब क्या हो, ठीक नहीं। अकसर सभी मुवक्किलों के इस तरह के पहले से दस्तख़त किये कागज़-पत्तर पतितपावन ने अलमारी में भरकर रख रखे हैं। मजदूरों के टेढ़ा पड़ने पर उस समय कागज़-पत्तर की तैयारी का समय कहाँ रहता है ? बेहतर है कि कागज़-पत्तर हमेशा तैयार रहें। गड़बड़ का अंदेशा दिखते ही पतितपावन पाइन को ख़बर कर दो।

"वह जमाना था," सनातन सिद्धान्त ने याद दिलाया, "टेलीफ़ोन मिलते ही आप काउंसेल टुकाइ मिटर के पास भागे। महामहिम जस्टिस सामन्त से मजदूरों को हटाने का ऑर्डर ले दो घंटे में आप निकल आये। तब आपको कितनी मेहनत करना पड़ी थी, सर! सुना गया था कि काउंसेल टुकाइ मिटर तब सर सन्तोष प्रसन्न सिन्हा से अधिक कमाते थे।"

पतितपावन को याद आया कि उस वक़्त उन्होंने भी कोई कम अच्छी कमाई नहीं की थी।

लेकिन मिस्टर पाइन बोले, "मिस्टर सिद्धान्त, अब वह जमाना नहीं है। नामी कंपनी की चीफ़ होने पर मिस्टर मिटर काम के वक़्त मिलेंगे ही नहीं।"

"क्यों सर? उन्होंने भी क्या राजनीति ज्वाइन कर ली है? क्या बड़ी कंपनियों की उत्तरोत्तर उन्नति पसन्द नहीं करते? क्या वह चाहते हैं कि सब कुछ स्माल स्केल हो जाये?"

"अब हँसाइये मत, मिस्टर सिद्धान्त! बात बहुत ही मामूली है। बड़ी कंपनियाँ आजकल क्रास चेक के अलावा किसी और तरह से पेमेंट नहीं करना चाहती। इनकम टैक्स के डर से आजकल मित्तिर साहब को चेक से एलर्जी है। आप इधर घेराव में फँसे हैं और उधर देखेंगे कि मित्तिर साहब गुलाबमल रामकिशन के केस में अलीपुर मैजिस्ट्रेट के आगे नगद नारायण पर हाजिर हो रहे हैं।"

सनातन सिद्धान्त थोड़ा घबरा गये। "वैसा कुछ होने पर मित्तिर साहब के बिना हमारा काम नहीं चलेगा। कुछ-न-कुछ करना ही पड़ेगा, मिस्टर पाइन!"

"तब बिना वाउचर नगद नारायण के बारे में मुझे हिन्ट दे दीजियेगा। कोई जल्दी नहीं। दफ़्तर लौटकर अकाउटेंट से सलाह कर लीजियेगा।" मिस्टर पाइन ने साफ़-साफ़ समझा दिया।

"माँ का नाम लेकर आज तीसरे पहर ही हम छँटनी की चिट्ठी भिड़ाये दे रहे हैं, सर!"

"आज क्या कोई शुभ दिन है?" पतितपावन की तबीयत आज शाम पानू के घर अड्डा जमाने की थी। अचानक मजदूरों के इस मामले में पड़-

कर वह शाम बरबाद नही करना चाहते थे।

"आज मिस्टर ढोलकिया टाइगर्स नेशनल कान्फ्रेंस मे दिल्ली गये हैं। गड़बड़ के बजाय काम इसी वक़्त निबटा लेना अच्छा रहेगा।" जरा हँसते हुए सनातन सिद्धान्त कुर्सी छोडकर उठ खड़े हुए।

"नही, अब थोड़ी चाय पिये बिना नही," मिस सैमुअल ने चाय का इन्तज़ाम करते हुए कहा, "यू मस्ट हैव थोर टी फ़र्स्ट। मैं अब किसी को आपके चेम्बर मे घुसने न दूँगी। मिस्टर गोस्वामी आये थे, मैंने उन्हे आधा घटे बाद का टाइम दिया है।"

पतितपावन घबरा गये। "गोस्वामी का मामला बहुत अर्जेन्ट है, मिस सैमुअल !"

"चाहे अर्जेंट हो, किन्तु चाय ब्रेक से अर्जेंट नही। दूसरे विश्वयुद्ध के समय भी चर्चिल ने नाश्ता, लंच और दोपहर बाद का विश्राम नही छोडा था, मिस्टर पाइन !"

"लेकिन मिस सैमुअल, चर्चिल ने तो सिर्फ जर्मनों के साथ युद्ध किया था। यह इजंक्शन, पेटीशन, मोशन, रिवीज़न, रिट का एक साथ सामना नहीं किया था। इनका सामना किया होता तो मैं देखता, कैसे खाना-पीना न छूटता !"

मिस सैमुअल हँस पड़ी। पतितपावन पाइन को मन के मुताबिक बडे काम की लडकी मिली थी। गुड और गुड लुकिंग सेक्रेटरी ! साथ ही विश्वास योग्य ऐसी महिलाएँ अब गिनती की ही रह गयी है।

लेकिन गोस्वामी का नाम सुनकर पतितपावन पाइन को बेचैनी होने लगी थी।

चाय की चुस्कियां लेते-लेते मिस्टर पाइन सोचने लगे—मिस्टर गोस्वामी का तालाबदी का मामला है। ग्यारह महीने कारखाना बन्द कर मजदूरों के पैसे मनीआर्डर से भेज दिये हैं। लेकिन तांबे की प्लेटो का सरकारी कोटा हर महीने ड्रॉ किये जा रहे हैं। ब्लैक मे तांबा बहुत महँगा

चल रहा है। बेचकर अच्छा लाभ कमाया है। अब अचानक सरकार की नींद टूटी है। कोटा बन्द करके ठीक ही किया है।

"कारखाना बद कर दो और कच्चे माल का कोटा जारी रहे, यह कैसे हो सकता है?" मिस्टर पाइन ने उस बार गोस्वामी से पूछा था।

"होता है सर, कलकत्ता शहर मे यह सब हमेशा से होता आया है। आप सविधान का कोई एक आर्टिकल-फ़ार्टिकल देखकर सरकारी ऑर्डर ज़रा रुकवा देते. .वही जो आपका दो सौ बीस-चार सौ बीस क्या है।"

"आर्टिकल टू टुवेंटी सिक्स पवित्र चीज़ है। आपको पता है, इसमें क्या है?" मिस्टर पाइन थोड़ा बिगड़ उठे थे।

"सर, मैं यह सब नही समझता। आप बहुत सख्त दवा दीजिये। अगर दो सौ छब्बीस से काम न हो तो उससे भी कड़ी डोज़ दीजिये चार सौ बीस की। लेकिन मेरा स्टे करा दीजिये।"

"अगर किसी तरह वक़्त पर स्टे न हो सका तो? रात को दिन बताकर कितने दिन तक चला सकते हैं, मिस्टर गोस्वामी?"

"इस बारे मे आप अपने को परेशान न करें, सर! कुछ महीने साँस लेने का वक़्त मिल जाने से आप लोगो के आशीर्वाद से कुछ-न-कुछ इतज़ाम हो ही जायेगा। जिस अफ़सर ने मेरा यह सत्यानाश किया है, उसकी पेंशन होने मे देर नही है। उसके बाद जो उस कुर्सी पर बैठेंगे, उनके साथ एडवांस इतज़ाम कर रखा है।"

पतितपावन पाइन ने कहा था, "स्टे कराना बहुत कठिन काम है। टापमोस्ट काउंसेल के अलावा कोई और जस्टिस सामत का दिल नहीं पिघला सकेगा। उसके साथ ही 'फ़ॉर आववियस रीज़न' सुतपा हालदार को भी जूनियर के रूप मे रखना होगा।"

"वह क्या होता है?" मिस्टर गोस्वामी क़ानून का यह नुक़्ता नहीं जानते थे।

मिस्टर पाइन चिढ गये। आँखें बन्द कर बोले थे, "बँगला अखबार मे लिखते रहते है 'सहज समझने योग्य कारण से'। किन्तु 'फ़ॉर आवविमस रीज़न' का कोई भापातर नही है। माँ सरस्वती ने विशेष कृपा के रूप में अँग्रेज़ जाति को यह एक अत्यन्त मूल्यवान वाक्यांश दिया है। जो माने

समझें वह अपना काम करा ले। मुतपा हालदार और जस्टिस सामन्त के बारे मे कोई और सवाल न करें। इसका मौखिक उत्तर देना, लीगल लाइन मे किसी के लिए 'फ़ॉर आववियस रीजन' संभव नही।''

उस समय तो गोस्वामी विदा हो गये थे, लेकिन आज निश्चित रूप से मन स्थिर कर लौटे हैं।

अपने मुवक्किलों को लौटा देना, मिस्टर पाइन बिलकुल पसन्द नही करते। गोस्वामी को बाद में आना कहकर मिस सैमुअल ने अच्छा नहीं किया।

चाय पीने के बाद मिस्टर पाइन ने सिगरेट सुलगायी। 'आज तुमने क्लायट को घटे-भर के करीब घूम आने को कहा, लेकिन एक दिन ऐसा था जब एक-एक मुवक्किल के लिए इस पतितपावन को घंटों नही, कई-कई दिन बैठे रहना पड़ता था। मिस सैमुअल, तुम उन दिनों यहाँ नही थी। तुम्हें पता नही कि इस अभागे पतितपावन को इस प्रोफ़ेशन मे किस-किस तरह से लडना पड़ा है।

'पतितपावन का पूरा इतिहास मालूम होता तो तुम हर मुवक्किल को धूप देकर घटो पूजा करती।'

पतितपावन पाइन अपनी टिल्टिंग कुर्सी में हलका भार देकर थोडा पीछे की ओर लुढक गये। इस तरह लुढ़ककर ही वह वर्तमान से हटकर अतीत और भविष्य के संबंध मे सोच पाते थे।

पतितपावन जब ब्रीफ़लेस थे, उस समय सोच भी न सकते थे कि किसी दिन भाग्यलक्ष्मी उन पर इस प्रकार कृपा करेंगी। एक के बाद एक मुवक्किल उनके लिए इस तरह लाइन लगाकर राह देखेगा।

फिर भी कैसा आश्चर्य है? पतितपावन ने सोचा, ऐसी सफलता के बाद भी उनका डर दूर नही हुआ है, मन भी नही भरा है। अभी भी पतितपावन को यह आशंका बनी रहती थी कि अचानक ऐसा दिन आ जाये, कि पतितपावन की जरूरत किसी भी मुवक्किल को न रहे। मुवक्किल खो देने पर क्या क़ानून की कोई समस्या नही रहेगी?

मित्र पानू दत्त की गृहिणी पद्मावती बीच-बीच मे शिकायत करती थी, "आप दिन-भर मेहनत करने के बाद मित्र के घर अड्डा जमाने के

लिए आते समय ऐसा क्या सोचते हैं ?"

पतितपावन को यह कहने का साहस न होता था कि हमेशा ज्वार नहीं रहता। अचानक अगर भाटा आ जाये? लेकिन ये सब बातें पानू की पत्नी से कहने से कोई लाभ नहीं। उसे विश्वास ही न होगा कि पतितपावन पाइन फिर बेकार हो सकते हैं।

पतितपावन की तबीयत होती कि मिस सैमुअल को भोमला बोस की याद दिला दें। ज़मीदारी के ज़माने में भोमला बोस के पास बहुत-से कानूनी काम थे। उसके बाद ज़मीदारी प्रथा उठ गयी। भोमला बोस भी सिकुड़कर बैठ गये। तभी भोमला बोस ने कोयले की बहुत-सी खानें हाथ में ले ली थीं। लेकिन वह सुख भी न रहा। कोयले की खानों का राष्ट्रीयकरण करके सरकार ने भोमला बोस को मार दिया।

कोयला खानों को कानूनी सलाह देकर कभी बहुत पैसे कमाये थे। कानून के बाज़ार में कभी बड़ी धूम मची थी, फिर फुस-से वह गुब्बारा फूट गया। पतितपावन ने अपनी ही आँखों से देखा था कि ज़मींदारी गयी, लेकिन कंपनियों और ठेकेदारों के काम बढ़ने लगे।

उसके बाद मैनेजिंग एजेंसियों को खत्म करने की हवा चली। कानून की कृपा से तमाम मैनेजिंग एजेंसियों की बहुत दिनों से चली आ रही हवा खत्म करके नाबालिग कंपनियों ने रातों-रात अपने पैरों पर खड़े होने की व्यवस्था कर ली। पतितपावन को नहाने-खाने का वक्त भी नहीं मिल पाता था। उसके बाद क्या हुआ? पतितपावन सोच रहे थे।

सचमुच एक दिन ये सब काम भी समाप्त हो गये। बिलकुल उसी वक़्त चली घेराव की नयी हवा। वक़्त के मुताबिक़ लेबर मामलों को हाथ में लेकर हल न करते तो पतितपावन और क्या करते?

जय माँ काली, कलकत्ता वाली! *घेराव, लॉक-आउट, स्टे-इन, गो-स्लो,* क्लोज़र, सेक्शन हंड्रेड फोर्टी फोर, रांगफुल डिसमिसल, रिट पेटीशन—वाह-वाह, कानून वालों का स्वर्णिम युग आ गया! इतने मज़े कभी नहीं थे। उसके साथ ही पूँजी की उड़ान, जिसे अँग्रेज़ी अख़बारों में फ़्लाइट ऑफ कैपिटल या ऐसा ही कुछ कहा था। कलकत्ता में दो पैसे कमाकर

जो व्यापारी इतने बड़े हो गये थे, राजस्थान, हरियाणा, यू० पी०, तमिलनाडु मे नया कारबार शुरू करने के लिए उन्हे उतनी ही परेशानी होने लगी। फ़रीदाबाद, लुधियाना, कानपुर, पूना—मिस्टर पाइन न उस्तादी मे उस समय कई बार भाग-दौड की।

कलकत्ता मे मज़दूरों पर कितना ही गुस्सा हो, किंतु अनुभवी व्यापारी मानते है कि कलकत्ता के कानूनी सलाहकार का मुक़ाबला नही। दुनिया मे सभी को अँगूठा दिखाकर अपनी मर्ज़ी के मुताबिक काम-धधा चलाने की ऐसी श्रेष्ठ क़ानूनी अक़्ल भारत मे कही और नही मिलेगी।

उस बार एक पार्टी में मिस्टर दर्शनसिंह मेहता ने इस तथ्य को पतित-पावन के सामने ही स्वीकार किया था। यद्यपि मिस्टर मेहता उस समय गले तक शराब पिये हुए थे और वह थोडे अशालीन भाव से बोले थे: "बाहर रोजगार करके देख तो रहा हूँ। सब-कुछ कलकत्ता से बेहतर। लेकिन कलकत्ता का सन्देश, कलकत्ता की लड़कियाँ और कलकत्ता के लीगल एडवाइजर का मुकाबला नही—इतने सस्ते मे ऐसी अच्छी सप्लाई कहाँ नही मिलेगी?"

क़ानून की बस्ती में ऐसा अच्छा समय हमेशा नहीं रह सकता। पतितपावन पाइन ने सही अनुमान लगाया था। घेराव, तालाबंदी और हड़तालो की आंधी कलकत्ता से हटकर कही और खिसक गयी। सिर्फ लेबर मैटर्स पर निर्भर रहकर जो छडी घुमाते थे, उनका धधा रातो-रात बैठ गया। लेकिन पतितपावन ने विशेषीकरण की गलती नही की थी, इसी से मोटे तौर पर तैर रहे है।

घेराव, तालाबदी नही है, तो क्या हुआ? एन्फ़ोर्समेट विभाग, अनिवार्य वस्तु क़ानून और कोफीपोसा (विदेशी मुद्रा सरक्षण एवं स्मगलिग विरोध अधिनियम) तो है।

ओह! मदी के समय कोफ़ीपोसा के काम ने पतितपावन और टुकाई मिटर को बुरी तरह व्यस्त नही रखा था।

कैसा गंदा नाम है कोफ़ीपोसा!! बच्चे पालने वाले की तरह कोफीपोसा का कॉफी से वे साथ कोई सबध नही। स्मगलिग और विदेशी मुद्रा के तमाम गोलमाल। कजर्वेशन ऑफ फ़ॉरेन एक्सचेंज एड प्रिवेंशन ऑफ स्मगलिंग

ऐक्ट। बडी-बडी मछलियाँ जाल में पड़कर उस समय किस तरह छटपटाने लगी थी। कलकत्ता शहर मे व्यापार की लाइन मे रहें और एक-आध गडवड न करें तो कैसे चले ?

पुलिस के एक गुस्सैल अफ़सर को पतितपावन ने एक वार शान्त किया था। कहा था, "इतने परेशान न हो, मिस्टर सेन ! आपने वालज़क नही पढा ? आपकी पैदायश से वहुत पहले वह फ़तवा दे गये हैं : प्रत्येक आर्थिक सफलता के पीछे कोई अपराध रहता है। हिस्ट्री-फिस्ट्री घोटकर, बहुत देख-सुनकर ही बालज़क ने लिखा था : बिहाइड एवरी फारचून देयर इज ए क्राइम।"

विदेशों में अपराध के साथ गोलियाँ चलती है। हम अहिंसावादी देश के है। साथ ही एक मुसीबत और है। अपराध करें, लेकिन एक-आध बार भी जेल न जायें, यही है हरेक कोफीपोसा व्यापारी की बड़ी अभिलाषा।

दो दिन की हवालात से बचने के लिए मिस्टर भोगीलाल ने तीस हज़ार रुपये ख़र्च कर दिये थे। अच्छा भाई अच्छा, इस तरह की जितनी ही पार्टियाँ रहेंगी, पतितपावन के लिए उतना ही अच्छा है। जितना ही इन लोगों को लेकर पुलिस चोर-चोर खेलेगी उतना ही कानूनी लाइन और साथ ही डॉक्टरी लाइन खुशहाल होगी।

डॉक्टरी लाइन की बात सोचते ही मिस्टर पाइन के मुँह से दवी हँसी निकल गयी। ओह ! डॉक्टरी सहायता मिले बिना उस वार मिस्टर कानोडिया को किसी तरह बचाया न जा सकता था।

मिस्टर घनश्याम कानोडिया पतितपावन के बहुत पुराने मुवक्किल थे। हर घर मे एक-न-एक लक्ष्मी रहती है न ? उसी तरह मिस्टर पाइन के लिए घनश्याम कानोडिया साक्षात लक्ष्मी थे।

तब पतितपावन का नाम मशहूर न था। घनश्याम कानोडिया दालों के कुछ मामूली-से कारखानों के मालिक थे, तभी विधाता की विचित्र इच्छा से दोनों का मेल हो गया था।

सच कहे तो इन घनश्याम कानोड़िया के लिए मिस्टर पाइन के दिल में ख़ास कमज़ोरी है। जब केस के अभाव मे पतितपावन के जीवन में सकट चल रहा था, तो वकालत की लाइन छोड़कर उन्होंने कलकत्ता कार्पोरेशन

में वेतनभोगी असिस्टेंट होने का लगभग निश्चय कर लिया था। ठीक उसी समय बन्धुवर पानूदत्त के माध्यम से अचानक घनश्यामजी से मुलाक़ात हो गयी थी।

बड़ा मज़ेदार क़िस्सा है! यही पानू दत्त और घनश्याम कानोड़िया का। नाम तो घनश्याम है, लेकिन हैं गोरे-चिट्टे। पानू दत्त अगर घनश्यामजी से उस दिन न मिलाते तो पतितपावन पाइन न जाने कब से कलकत्ता के बाबू लोगों के जंगल में हमेशा के लिए खो जाते। कोई उन्हें तलाश न कर पाता और तब लायन एंड पाल के विश्वंभर पाल की भविष्यवाणी सच हो जाती।

नहीं, सुबह-सुबह काम के वक़्त बहुत दिनों पुरानी उन यादों के सूखे घावों पर क्यों हाथ फेरा जाये?

विश्वंभर पाल का नाम आते ही शान्ति की बात भी याद आ जाती है। पतितपावन के सेफ डिपाजिट वॉल्ट में पुराने कागज़ के एक टुकड़े पर अभी भी एक डरी हिरणी की हस्तलिपि है। लिखते-लिखते उसका हाथ मामूली-सा काँप गया था ' कुमारी शान्तिरानी पाल। कभी समय हुआ तो पतितपावन कागज़ निकालकर फिर देखेंगे। लेकिन उनकी आँखों के आगे वह हस्ताक्षर अभी भी इस तरह चमक रहे हैं कि पतितपावन चाहने पर शान्तिरानी के हस्ताक्षर नकल कर सकते हैं।

तब फ़ोटो का रिवाज न था। इस कागज़ को कितनी ही बार पतितपावन ने देखा था—कुमारी शान्तिरानी पाल।

पतितपावन ने टिल्टिंग कुर्सी सीधी कर ली। अब काम का समय है। आध घंटे बाद मुश्किल मामलों के मुवक्किल आने लगेंगे। इसके अलावा घनश्यामजी का वह केस भी मन में झाँक रहा था।

यही कुछ बरस पहले की ही तो बात है। घनश्याम कानोडिया को किसी विशेष गोपनीय सूत्र से पता चला था कि काफीपोसा की लिस्ट में उनका नाम आ गया है। गिरफ़्तारी में कोई देर नहीं है। उसके बाद बिना मुकदमे के क़ैदियों-सी हालत होगी।

पतितपावन के पास यह समाचार तुरंत चला आया था। आधे घंटे

में पतितपावन भागे-भागे मुवक्किल के पास पहुँचे थे। घनश्याम कानोड़िया से पतितपावन ने दबी आवाज़ में पूछा था, "आप क्या फ़रार होने की बात सोच रहे हैं?"

फरार होने में बहुत गडबड है । एल्गिन प्लेस के सामतानी की सारी जायदाद पुलिस ने कुर्क कर ली थी, यह बात घनश्याम कानोड़िया जानते थे।

मिस्टर कानोडिया फ़रार न होंगे, और जेल जाने की उनकी ज़रा भी तबीयत नही। बीच में कुछ ही घंटो का वक़्त है। कल दोपहर और शाम के बीच किसी समय घनश्याम के गले मे काफ़ीपोसा का फंदा पडेगा।

उस समय पतितपावन पाइन को विशेष दिमाग़ लगाना पडा। गोयनका के दफ़्तर के कमरे से सबको निकाल, दस मिनट तक पतितपावन सिर झुकाये चुपचाप चहलकदमी करते रहे। उसके बाद कमरे से निकल खुश-खुश पतितपावन ने घनश्यामजी से घोषणा की, "किसी साले की मजाल नही कि आपको हवालात या अलीपुर जेलखाने ले जाये। उसके बदले आप फ़ाइवस्टार होटल के आरामदेह कमरे मे जब तक जी चाहे रहें।"

बहुत जानकारी रखने वाले घनश्यामजी को इस घोषणा पर विश्वास न हुआ। वह सोच रहे थे, काउंसेल भोवलदास बनर्जी को खबर दें या नही? आँखें फाड़े असहाय भाव से वे पतितपावन की ओर देख रहे थे।

तब फुसफुसाकर पतितपावन बोले, "आज थोडी देर बाद ही आपको दिल का गभीर दौरा पडेगा। साथ-ही-साथ आपको गोल्डन वैली नर्सिंग होम मे ले जाया जायेगा। हृदय रोग के विशेपज्ञ नामी डॉक्टर कहेंगे कि आपकी हालत क्रिटिकल है। देखें, कौन साला पुलिस का सब-इन्सपेक्टर आपको टच करता है!"

सारी इमर्जेंसी व्यवस्था पतितपावन को ही करनी पडी थी। डॉक्टर की विशेप व्यवस्था सहित। रुपये फेंकने पर कलकत्ता मे क्या नहीं मिलता? जिन्दा आदमी को मृत्यु का सर्टिफिकेट, मुर्दे को विवाह का सर्टिफ़िकेट, भिखारी को संपत्ति-कर की रिटर्न, करोड़पति के नाम दिवा-

लिया होने का सर्टिफिकेट तुरंत बन जायेगा—यदि आप इतना जानते हों कि कहां कौन-सा बटन किस तरह किससे दबवाना है। कोई हील-हुज्जत नही, आपको खुद कुछ नही करना पडेगा। सिर्फ सही आदमी के पास पहुँचिए और खर्च के हिसाब में खींचतान न करें।

घनश्यामजी तो ताज्जुब में पड गये। आवेदन के साथ इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम की रिकार्डिंग लगायी हुई थी। गोल्डेन वैली नर्सिंग होम के स्पेशल कक्ष में प्रवेश कर पतितपावन ने उनसे मजाक किया था, "यह देखिये आपका ई० सी० जी० रेकार्डिंग। बडी खोजबीन करके कहीं से दूसरा हार्ट-पेशेंट पकड़ना पड़ा। साथ में कार्डियोलॉजिस्ट गणपति साहा, एम० डी०, एम० आर० सी० पी० की रिपोर्ट भी है। खींचतान करने पर मरीज़ घनश्याम कानोड़िया किसी भी क्षण हृदय-गति रुकने या कोरोनरी इनसफिसियेन्स से मर सकते हैं।"

पतितपावन के काम से घनश्यामजी बहुत खुश हुए थे।

नर्सिंग होम में घनश्यामजी को प्रवेश दिलाकर पतितपावन ने कहा था, "एक होलटाइम जूनियर डॉक्टर, दो स्पेशल नर्सें, रूम बॉय तैनात हैं। जो जी चाहे करें, सिर्फ बिस्तर न छोड़ें। लेटे-लेटे जितना चाहे व्यापार करें, बिस्तर के पास ही टेलीफोन से बातचीत करें।"

"होलटाइम जूनियर डॉक्टर क्यों है ?" घनश्यामजी ने जानना चाहा।

"जरूरत है। बेकार के लिए आपका एक पैसा भी बरबाद न करूँगा।" पतितपावन ने आश्वासन दिया।

"पहेली साफ नहीं हो रही है," कहते हुए मुँह खोले-खोले घनश्यामजी ने पतितपावन की ओर देखा था।

कान के पास मुँह ले जाकर फुसफुसाते हुए पतितपावन ने कहा था, "अगली रक्षा-पंक्ति के बारे में भी सोच रखा है। ईश्वर न करे, अगर कोई बदमाश पुलिस अफ़सर खींच-तान करना चाहे तो फट-से एक इंजेक्शन देकर डॉक्टर आपको सुला देगा। किसकी मजाल कि तब मरीज़ को तंग करे !"

बिलकुल इसी तरह साढ़े पाँच महीने गोल्डन वैली नर्सिंग होम में

पाल के मामले में तुम मुझे कुछ मदद देते। पानू, यानी पन्नालाल दत्त के बारे में पतितपावन के दिल में एक मिश्रित-सी अनुभूति है। घनश्यामजी से परिचय कराकर पानू ने बहुत बड़ा उपकार किया था, लेकिन शांतीरानी के मामले में अंत में क्या हो गया था !

'पानू, तुमने मेरे जीवन को सबसे बड़े उपकार और सबसे बड़े अपकार से जकड़ रखा है,' पानू से कहने की इच्छा होती है।

"व्यापार में हजारों असुविधाएँ हैं," मिस्टर गोस्वामी ने अपना कष्ट बताया। "अपना कोटा बेचकर दो पैसे देखने को मिलते थे, उसमें भी रुकावट आ रही है।" शरीफ़ आदमी के गले मे अभिमान का सुर था।

पतितपावन ने हिम्मत दिलायी, "दुखी मत होइये, मिस्टर गोस्वामी ! पेनल कोड, क्रिमिनल प्रोसिडयोर कोड, कपनी क़ानून, सविधान—सभी मे व्यापारी के प्राण जो चाहते है, उसे करने की विस्तृत व्यवस्था है। लेकिन केवल ख़ाली आँखो से अदृश्य कलपुर्जे नही देखे जा सकते। अच्छे वकील को ब्रीफ़ करने पर इच्छापूर्ति का मार्ग दिखायी देने लगता है।"

मिस्टर गोस्वामी का काम समाप्त कर आज छुट्टी लेने की तबीयत हो रही है। पानूदत्त के यहाँ जाकर मन ज़रा हलका करने की इच्छा है।

कैलेंडर में आज की तारीख पर पतितपावन की नज़र अचानक गयी। बत्तीस बरस पहले ठीक इसी दिन अभागे पानू ने कहा था, "ले, ज़रा सज-बज ले। शांतिरानी कपडे-लत्ते के मामले मे बहुत नकचढ़ी है। तुझे पहले से ही चेता रहा हूँ।"

पानू को निश्चय ही सभी बातें याद नही है। होती तो सवेरे ही बात उठाता। लेकिन आज फिर पानू से मिलने के लिए मन छटपटा रहा है।

गोस्वामी का काम भी समाप्त न किया जा सका। टेलीफ़ोन आ गया।

"हलो, हलो मिस्टर पाइन ! मैं कानोड़िया के यहाँ से बोल रहा हूँ। घनश्यानजी आपसे तुरत अत्यन्त आवश्यक काम से मिलना चाहते हैं। क्या आप आयेंगे ?"

घनश्यामजी के बुला भेजने पर पतितपावन कभी देर न करते थे। साक्षात लक्ष्मी ! जब पतितपावन को कोई पहचानता न था तब इन्हीं

घनश्याम कानोडिया ने उनको काम सौंपा था।

'अत्यन्त आवश्यक' बात बच्चों का खेल नहीं। डॉक्टरी से भी अधिक वकालती समस्या अत्यावश्यक हो सकती है। जो क़ानून के बारे में कुछ भी नहीं जानते, वे ही वकीलों का साल अठारह महीने का मानते हैं।

गोस्वामी को पतितपावन ने झटपट बिदा किया। आज सवेरे किसका मुँह देखा था! एक मिनट भी चैन नहीं मिला। इधर मिस सैमुअल ने जल्दी जाने का नोटिस दे रखा था। आज माँ-बाप के विवाह की पच्चीसवीं साल-गिरह है। लंच के वक्त लडकी को घर रहना ही होगा। यही आज का ख़ास फैशन है। बाप के ब्याह के लिए भी लड़के-बच्चों को भाग-दौड करना होगी। अखबार के व्यक्तिगत स्तंभ में विज्ञापन देना होगा। पहले ये सब दिखावे नहीं होते थे।

"अनीता, जब तुम्हारी तबीयत हो चली जाना। मैं घनश्यामजी के ऑफ़िस जा रहा हूँ।"

घनश्याम कानोडिया से अपायंटमेंट। मिस अनीता सैमुअल समझ गयी कि मिस्टर पाइन कब ऑफ़िस लौटें, इसका कोई ठिकाना नहीं।

"क्या बात है? ऐसा अर्जेन्ट बुलावा?" मिस्टर पतितपावन पाइन ने गुप्ताजी से पूछा।

मिस्टर रामनरेश गुप्ता, कानोड़ियाजी के दायें-बायें, दोनों हाथ हैं। उन्होंने ओंठ बिचकाकर सर हिलाया। कुछ पता नहीं। "पेइन साहब, आप ही तो घनश्यामजी के दिमाग हैं। कोई भी बात हो, पहले पेइन साहब को बुलाओ।"

"ओह! बडा जरूरी मुद्दा याद आ गया। घनश्यामजी का काफ़ीपोसा कार्डियोग्राम और गोल्डन वैली नर्सिंग होम के कागज-पत्तर मोहरबंद लिफ़ाफ़े में सावधानी से रख दिये हैं न?" पतितपावन ने पूछा।

उन्होंने रामनरेश को याद दिलाया, "बड़ा क़ीमती डॉकूमेंट है। मेरा एक और मुवक्किल तो काफ़ीपोसा की गड़बड़ से मुक्ति लेकर काग़ज़-पत्तर

के सहारे इलाज का बहाना कर दो बार स्विटज़रलैंड घूम आया है। रिज़र्व बैंक ने वाप-वाप कहकर विदेशी मुद्रा की मजूरी दे दी।"

रामनरेश गुप्ता ने बताया, "वे सारे कागज़-पत्तर घनश्यामजी ने अपने कैबिनेट में रख दिये हैं। आपके हुक्म की तामील वह उसी समय करते हैं, कोई खतरा नहीं लेते।"

पतितपावन पाइन हलके-से हँसे। "मामूली कानूनी सलाह देता हूँ। मैं हुक्म करने वाला कौन? हुक्म के लिए है घर में पत्नी, कारखाने में है यूनियन के प्रेसिडेंट और बाक़ी सब जगह सरकार है।"

पतितपावन के मज़ाक पर गुप्ताजी जोर-जोर से हँसने लगे। "पेइन साहब, आज बाबूजी को आप थोड़ा हँसाइये। दो दिन से मुँह फुलाये बैठे हैं।"

"क्यों? कोई टैक्स की गड़बड़ है?" पतितपावन ने पूछा।

"मारो गोली! टैक्स की गड़बड़ से बाबूजी कभी नहीं घबराते।"

"तो फिर?"

"शादी-वादी का झंझट है।" गुप्ताजी ने अंदाज़ लगाया। उसके बाद फुसफुसाकर बोले, "आपसे कुछ भी नहीं छिपाया। गोयनका परिवार में बाबूजी की लड़की की शादी की बातचीत चल रही थी। लेकिन वह संबंध टूट गया।"

शादी के मामले में मिस्टर पाइन विशेषज्ञ नहीं हैं। शादी कराने वाले पंडित का काम भी वह नहीं करते। फिर भी उनको क्यों बुलाया गया? इस बारे में सोच-विचार करने से पहले ही पतितपावन की पुकार हुई। और गुप्ताजी ने देखा कि बाबूजी के कमरे के आगे लगी लाल बत्ती नहीं जली। बाबूजी ने अपने ही हाथों से दरवाज़े का गोदरेज का ताला अन्दर से बन्द कर लिया।

थोड़ी देर बाद ही एक मिनिट के लिए गुप्ताजी की पुकार हुई। डेनवर इंडिया की दो बरसों की वार्षिक रिपोर्ट और बैलेन्स-शीट बाबूजी ने माँगी।

बैलेंस-शीट हाथ में लिये अन्दर जाकर गुप्ताजी ने देखा कि पतितपावन पाइन और घनश्याम कानोड़िया दोनों गम्भीर बने बैठे हैं।

पतितपावन कह रहे थे, "इस लाइन में मेरा कोई अनुभव नहीं है। मैं

बिलकुल अनाड़ी हूँ।"

"अक़्ल हो तो जानकारी की ज़रूरत नहीं होती, पतितजी!" घनश्याम कानोड़िया ने समझाया, "काफ़ीपोसा के मामले में भी तो आपको कोई अनुभव नहीं था।"

पतितपावन का जवाब सुनने की गुप्ताजी की बड़ी इच्छा थी। लेकिन उससे पहले ही घनश्याम कानोड़िया ने अपने सहकर्मी को कमरे से खिसक जाने का आँखों से इशारा किया।

जब पतितपावन ने प्रवेश किया तो उस समय पानू दत्त अर्थात पन्नालाल दत्त अपने मकान के सदर कमरे में लुंगी पहने चुपचाप पान चबा रहे थे।

"आओ ब्रदर!" पतितपावन को सादर सबोधित करते हुए पन्नालाल दत्त ने मुँह में थोड़ा *बाबा छाप 555 नम्बर का जर्दा डाला।*

"तुम अच्छे हो, पानू!" पतितपावन ने चुटकी ली। "बी० ए० पास किया, क़ानून पढ़ा, लेकिन किसी महत्वाकांक्षा के चक्कर में नहीं पड़े। बैंक की बाबूगीरी, मोहनबागान और रहस्य-रोमांच सीरीज़ पढ़कर बिना उत्तेजना के ज़िन्दगी बिता दी।"

पान की पीक निगलकर पन्नालाल दत्त फिस-से हँस पड़े। "भगवान की कृपा से बताओ तो मुझे क्या कमी है? सवेरे पूरी थाली-भर भात, रात *को आठ रोटियाँ, दाल, तरकारी—सभी मिलता है। तुम उससे ज्यादा* क्या खाते हो, पत्तू?"

"मैं टिफ़िन के वक़्त कुर्सी पर बैठे-बैठे आध घंटा सोता हूँ। तुम क्या सो सकते हो? तबीयत होते ही मैं शाम को कर्ज़न पार्क में घास पर लेटे-लेटे हवा खाता हूँ। तुम कर सकते हो? जब-तब रेडियो खोलकर फुटबाल की कमेंट्री सुनता हूँ। तुम सुन सकते हो? और रुपयों की बात? मुझसे ज्यादा रुपये कौन-सा वकील, बैरिस्टर, डॉक्टर हैंडल करता है? बैंक के रोकड़ विभाग में बैठकर बंडल-के-बंडल नोट गिनना मेरा काम है। कह सकते हो कि वे रुपये ले आने की मुझे इजाज़त नहीं है। लेकिन किसे है?

टाटा, बिड़ला भी तो जाते वक़्त रुपयों के बंडल नहीं ले जाते।"

पान की पीक संभालकर पानू दत्त फिर हँसे। "कह सकते हो कि रुपयों के बंडल बिड़ला, टाटा बाल-बच्चों को दे जायेंगे। लेकिन रुपये रहने पर भी तो मैं वैसा नहीं कर सकता था। मेरे गुड़ में तो रेत है, बाल-बच्चे हुए ही नहीं। इसलिए कुछ परवाह नहीं।"

"पानू, लड़कपन से लेकर अब तक तुम एक जैसे ही रहे, तुममें कोई परिवर्तन नहीं आया," पतितपावन ने हलकी-सी डाँट लगायी।

"मारो गोली परिवर्तन को! कोर्ट-कचहरी की बात भूलकर थोड़ा बाबा छाप 555 निगलकर मस्त रहो, पातू!"

"पानू, पतितपावन पाइन कोर्ट-कचहरी का वकील नहीं है। अदालत के क़रीब मुझे नहीं देख पाओगे।"

"पतू, ज़रा समझाओ। कोर्ट-कचहरी जाते नहीं। यहाँ आने में इतनी देर कर दी?"

पतितपावन बोले, "आजकल कानूनी सलाहकार निरोधी क़ानून के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। लोगों को कोर्ट न जाना पड़े, उसी की आगामी व्यवस्था करते-करते मैं पसीने-पसीने हो जाता हूँ। सभी अपनी प्रैक्टिस या बिज़नेस बढ़ाने की कोशिश करते हैं, लेकिन डॉक्टर, वकील—दुनिया के दो ही प्रोफ़ेशनल जान-बूझकर अपना रोजगार कम करने के लिए प्रयत्न करते हैं। निरोधी मेडिसिन और निरोधी कानून समझते हो, पानू?"

"पोर-पोर जानता हूँ। अपना सर्वनाश करना होगा, यह जानते हुए वकालत की डिग्री लेकर भी वकील न बना। फिर उसके अलावा, पतू, वकील कहो, डॉक्टर कहो, इंजीनियर कहो—अंत में तो वही रुपया-पैसा है। मौका देखकर एक छलांग में मैं अंत में रुपये-पैसे की जगह चला आया। आज मैंने साढ़े पाँच लाख रुपयों के करारे नोट गिने। तुम्हारा कोई वकील या डॉक्टर एक दिन में इतने रुपयों का मुँह देख सकेगा?"

पानू दत्त के चेहरे पर शरारती मुसकराहट थी। उसे लक्ष्य कर पतित-पावन बोले, "पानू, तुम्हारा बेहद शरारतीपन अभी तक नहीं गया। किसी को भड़का देने में छुटपन से तुम्हारा जोड़ नहीं।"

"वाह रे, मैंने कब किसे भड़काया?" पानू दत्त जैसे आसमान से

गिरे हो।

पतितपावन को याद आया। बत्तीस बरस पहले इस पानू ने ही उसे शांतिरानी पाल के बारे से कई दिन तक भडकाया था। कहा था, "असली हीरा है, मैं तुम्हें बता रहा हूँ, पतू! जिसके गले मे वह माला डालेगी, उसका बडा भाग्य होगा।" वह बात आज अचानक तीन युगो बाद याद आने पर पतितपावन को सकोच हो रहा था।

पतितपावन ने अपना माथा पोंछा। बोले, "बच्चा पानू, तुमने ही तो मुझे जोश दिलाकर वकालत के पेड़ पर चढा दिया था। मुझे अक़्ल नहीं थी। लालच मे कहा था, वकील बनूँगा। लेकिन मैं चुप्पा हूँ, यह जानकर भी तुमने जोश दिलाया, 'तुम जरूर सफल होगे, पतू! कानून की लाइन मे चढने के तुम्हारे बहुत चांस है।' उसके बाद जब पेड पर चढ गया तो सीढी खीचकर बोले, 'पतू, तुम्हारे लिए दिन-रात मुझे फ़िक्र लगी रहती है। वकालत की लाइन में अपने भाग्य का कितने लोग खाते हैं? पिता या ससुर के खाते मे बड़े-बडे नामी वकीलो के भी गडबड रहती है'।"

पानू चाय की तलाश में अन्दर गये। लौटकर देखा कि उनके दोस्त पतित-पावन बैग से डेनवर इडिया की वार्षिक रिपोर्ट निकालकर मन लगाकर पढ़ रहे हैं।

"पतू, तुझे क्या हो गया है? इतने दिनो बाद दोस्त के घर आकर भी धान कूटना शुरू कर दिया?"

मीठी हँसी हँसकर पतितपावन ने दोस्त के हमले को ओटने की कोशिश की। "यह क्या! तुम चाय के बहाने बीवी से प्रेम की बातें करने के लिए ग़ायब हो गये थे। पढाई का मैटर साथ मे था, और क्या करता?"

पानू बोला, "तुम क्या शेयर मार्केट मे भी कुछ ख़रीद-फ़रोख़्त करते हो? इतने ध्यान से डेनवर इडिया का हिसाब-किताब क्यों देख रहे हो?"

डेनवर का नाम आते ही पतितपावन दुगने सावधान हो गये। बोले, "शेयर? मेहरबानी करो, भाई! पितृदेव ने उसी लायंस रेंज मे अपने बारह बजा दिये थे। वह बात तुमसे तो छिपी नही है, पानू!"

इस बीच पतितपावन ने डेनवर लिमिटेड की जन्मपत्री देख ली थी।

छोटी कंपनी ! भारत मे यही कुछ बरसो से रोजगार चला रही थी। लेकिन मुख्य रूप से डेनवर् इटरनेशनल का बनाया सामान मँगाती है। धीरे-धीरे कई बरसो मे कारोबार बढ गया है। डेनवर इटरनेशनल के कल-पुर्जे तरह-तरह के कल-कारखानों और रेल आदि मे काम आते है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओ के परिणामस्वरूप इनकी माँग बढ़ रही है। खिदिरपुर में कंपनी का एक कारखाना है। वहाँ बडे स्केल पर उत्पादन का लाइसेंस है। लेकिन वह नाम के लिए है। विदेश से लाये कल-पुर्जे वहाँ जोड़ दिये जाते है, छोटे-छोटे कुछ हिस्से-पुर्जे बनते और मरम्मत का काम चलता है। इस तरह का एक छोटा-सा कारखाना बवई मे भी है।"

पतितपावन ने देखा कि डेनवर इटरनेशनल जैसा टेढ़ा सामान भारत मे किसी और के बनाने की संभावना नही, क्योकि गड़बड़ और पूंजी की तुलना में इन चीजों की इस तरह की कोई माँग न थी। उसके अलावा बाहर से मँगाये माल को जोड़कर और बहुत दिनो से सप्लाई किये कल-पुर्जो के रख-रखाव और मरम्मत से डेनवर इडिया लिमिटेड सुख-शाति से रोजगार कर रही है।

"तुम्हे क्या हुआ है, पतू ? ऐसे डूबे हुए हो कि लोग समझें कि व्योमकेश के रहस्य-रोमाच के किस्से मे खो गये हो। कौन कहेगा कि तुम कपनी की बैलेंस-शीट पढ़ रहे हो ? इन्हे कौन पढता है ? ऐसे बढिया-बढिया कागज पर सरकार ऐसी चीजें क्यो छापने देती है, भाई ? यह सब समझ में नही आता।"

पतितपावन ने सोचा, हमें तुम्हें-कितना मालूम है, पानू ? कपनी की ये रिपोर्टे बहुत-से लोगों के लिए उपन्यासों से अधिक अभिनव और नाटकों से अधिक नाटकीय हैं।

"तुम्हारे पिता के कुछ कपनियों मे शेयर थे। तुम वह सब नही देखते ?" पतितपावन ने पूछा।

"तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हुआ है ! मोटे कागज होने से रद्दी वाला भी दस सेर के भाव से नही लेता। मैं उन कागजों से रहस्य-रोमाच सीरीज की किताबों के मलट बना लेता हूँ।"

पतितपावन मुसकराये। "ऐसी लापरवाही मत बरतो, पानू ! यह

कंपनियाँ ही तो देश की रीढ हैं। यही तो दूध देती हैं, उसी दूध के ज़ोर से ही तो सरकार की ऐसी पूछ है। माननीय मंत्री लोग किसके पैसों से गाड़ी चला रहे है ?"

"कहो कहो, पनू ! बात-बात में बड़ी असभव बात को भी तुम किस तरह सभव बना देते हो," पानूदत्त ने वाहवाही की।

पतितपावन बोले, "पानू, पता हो तो इन बैलेंस-शीटो मे भी बहुत कुछ देखने को है। इस डेनवर इडिया की रिपोर्ट मे क्या देखने लायक है, बताओ तो ?"

"इसका मलट बहुत चिकना है ! नयी मशीन के पास एक कम-उम्र की लडकी को खडा कर विजय प्राप्त की है !" पानू दत्त ने जवाब देने में क्षण-भर की भी देर न की।

"ओह पानू ! ऑफ़िस में तो गड्डी-के-गड्डी नोट गिनते हो। देखो, यहाँ कितनी कम पूँजी में कंपनी कितने ज्यादा रुपयों का इन्तज़ाम करती है ?"

"अगर कर सकते हो तो उस मेरी पत्नी पद्‌मावती को दिखाओ। बाबा छाप ज़र्दे का ख़र्च छोड़कर मैं अपने हाथ मे कुछ नही रखता। फिर भी महीने के अत में पूँजी का अभाव उत्पन्न हो जाता है। धन ही मूल है, मुझे इस बुढापे मे भी बीच-बीच में मेरी पत्नी यही समझाने की कोशिश करती है !"

पानू चाय के जूठे कप अंदर रख आये। पगले पानू बाबू घर पर नौकर-नौकरानी नही रखते।

पतितपावन ने मौका पाकर देख लिया कि डेनवर इडिया के पचहत्तर अश शेयर विदेश की कई सस्थाओ के हाथ मे थे। यहाँ के शेयर भी अलग-अलग हाथो मे बिखरे पड़े थे।

पानू दत्त ने लौटकर बताया, "मारो गोली अपने शेयरों को ! ऊँची कोटि की दो-एक अप्रकाशित कहानियाँ सुनाओ। रहस्य-रोमाच सीरीज की किताबें मेरे पास ज्यादा नही है।"

पतितपावन मुसकराकर चुपचाप बैठे रहे। इस पानू से बचकर वह न

निकल सकेंगे। बचपन ही से पानू की बातें एकमात्र योगसूत्र हैं। इसके अलावा पानू में एक ऐसी आंतरिकता है, जो उन्हें क्लब में, टाइगर मीटिंगों में, कॉकटेल पार्टियों मे—कहीं नहीं मिलती। इसीलिए तो हज़ार कामों में फँसे रहने पर भी पतितपावन इस आदमी को पहले ही की तरह चाहते है। पानू और पानू की पत्नी भी उनको बहुत चाहते हैं। किन्तु अपने क्षेत्र मे नामी होने के कारण पतितपावन की कोई खास ख़ातिर नहीं करते।

पानू ने पूछा, "भाई पतू, बड़े आदमियों से इतना मेल-जोल कैसे करते हो? बड़े लोगो से आये करेंसी नोट मैं देखता रहता हूँ। वही एक जैसे। पहले राजा की तसवीर रहती थी और साथ में केले का पेड़ था। उसके बाद आयी नाव। हम कहते थे कि केला दिखा, नाव में माल उठाकर साहब चल दिये। उसके बाद तीन सिंह आये। अख़बारों में लिखते हैं कि शेर कम हुए जा रहे हैं। लेकिन सवेरे से शाम तक सिंह देखते-देखते मेरी आँखें भीतर धँस जाती हैं। कितने सिंह बढ़ गये हैं!"

पतितपावन बोले, "वाह पानू! तुमने ही तो मुझे बड़े आदमियों के बीच फेंक दिया था। तुम्हें घनश्याम कानोड़िया की बात याद नही है? उन दिनों तुम बैंक की बड़ा बाज़ार ब्रांच में काम करते थे। घनश्याम कानोड़िया दाल और तेल को गिरवी रखकर तुम्हारे यहाँ से उधार लेने आया करता था। एक दिन तुमने बैंक के काम से घनश्याम के गोदाम में जाकर देखा कि वहाँ बहुत तनाव है। घनश्याम मुँह लटकाये हुए कह रहा था, 'स्वास्थ्य-विभाग के इंस्पेक्टर गोदाम घेरकर मिलावटी माल की तलाश कर रहे हैं'।"

पानू बोला, "हाँ, याद तो है। मैंने उस समय भगवान की याद कर तुम्हारा नाम बता दिया था। उन लोगों को अर्जेन्टली वकील की जरूरत तो थी ही। वह बात तुम्हें अभी तक याद है, पतू?"

"भूलता कैसे? उसी वक़्त मैंने निर्णय कर डाला था कि हफ़्ते-भर मे केस न मिलने पर मैं यह लाइन छोड़ दूँगा। तुम उस समय भी बहुत बातूनी थे। कानोड़िया से कह दिया था, 'यह मिस्टर पाइन टॉप क्लास के वकील है। *तुम्हारी सारी गड़बड़ ख़त्म कर देंगे*'।" पतितपावन ने ज़रा थूक निगला। "और मेरी तकदीर भी अच्छी थी। तेल का सैम्पल

ठीक से सील न करके ले जाना, इसी टेक्निकल आधार पर घनश्यामजी को ससम्मान छुड़ा लाया था। घनश्यामजी मेरे ए-क्लास मुवक्किल बन गये।"

पानू दत्त ने इन बातों मे रुचि न लेकर कहा, "पतू, नाटक-नावेल पढ़कर बड़े लोगों का व्यापार मैं ठीक से समझ नहीं पाता। बहुत रुपये हो जाने के बाद भी आदमी को क्या सचमुच कोई तकलीफ़ रह जाती है?"

"तब तमाम तरह की नयी-नयी तकलीफ़ें पैदा हो जाती हैं," कहते हुए पतितपावन के कानों मे मिस्टर कानोडिया की आज की बातें फिर सुनायी पड़ने लगी।

"तुम कहते हो कि बड़े आदमियों को बड़े-बड़े दुख होते हैं।" पानू दत्त के मन मे बात से गुदगुदी लगी।

पतितपावन फिर घनश्यामजी की घटनाओं पर गौर कर रहे थे। नाम लिये बिना ही पतितपावन बोले, "किसे कब किस बात का दुख होता है, यह कहना बहुत मुश्किल है। समझ लो, बड़े बाज़ार मे तुम्हारा मोटे तौर पर आढ़त का काम है। तुमने कुछ बरसो से अपनी अक्ल लगाकर कुछ दाल और तेल की मशीनें खरीद ली। उसके बाद तुमने मौका देखकर हुगली मे एक वनस्पति का कारख़ाना खोल लिया। उसके साथ ही ऑयल केक का एक्सपोर्ट शुरू कर दिया।"

"साहब लोगों के केकों का भी एक्सपोर्ट ?" केक-भक्त पानू के लिए यह बुरी खबर थी।

"तुम्हारी अँग्रेज़ी हमेशा से कमजोर है, पानू ! किस परेशानी में पडकर हम फ्लूरी का केक बाहर जाने देंगे ? ऑयल केक—शुद्ध भाषा में जिसे कहते हैं खली।"

"ओह ! अँग्रेज़ी भाषा बहुत ही निर्धन है। खली को भी केक कहा जायेगा ! इतनी बडी डिक्शनरी मे एक और शब्द नही जोड़ा गया ?" पानू ने सिर खुजलाया।

पतितपावन बोले, "कारख़ानों के साथ ज़मीन-जायदाद का सट्टा। कलकत्ता के आस-पास कुछ जमीन का लेना। उसके बाद कुछ और कारख़ाने। बीच-बीच में विदेश घूम आना। फिर भी दुख।"

"हाय रे मुसीबत ! इसके बाद भी दुख ? इन लोगों का दुख तो कभी दूर न होगा। कंगाली का बीज देकर भगवान ने इन्हे कलकत्ता शहर मे भेज दिया है," पानू दत्त अपने मन की बात रोक न सके।

"इतना मत चिढो, पानू ! दुख पाने का कोई कारण जरूर होता है। नही तो आदमी को दुख क्यों हो ?"

पतितपावन ने फिर शुरू किया। "लडकी का रिश्ता करने मे आदमी ने चोट खायी है।"

"वाह, बड़ा नाटकीय लग रहा है। यह कहानी मून थियेटर के मालिक के हाथों में पड़ जाती तो इसे बढा-चढाकर हाउस फुल कर देता।" पानू को पतितपावन का जुमला बुरा न लगा।

पतितपावन बोले, "आपकी लडकी देखने मे बुरी नही है। लिखना-पढ़ना जानती है। ऐसी शिक्षा मिली है कि क्षण-भर मे सोलहवी सदी के अन्त:पुर से बीसवीं सदी के क्लब मे जा सकती है और डेढ घटा बाद खुश-खुश फिर सोलहवी सदी मे लौट सकती है। बराबरी का घर है, फिर भी सबध नही हुआ।"

"शायद किसी ने भाँजी मार दी ?"

"बिलकुल नहीं। बडा बाजार के खरीद-फरोख्त के व्यापारी शादी के मार्केट मे थोडा नीची श्रेणी के होते है। लेकिन जिनकी बात कह रहा हूँ, उनके तो मिलें और कल-कारखाने हैं। पुराने चितपुर या सेंट्रल एवेन्यू में रहना भी उस समाज मे ब्याह के मामले में प्रतिकूल ठहरता है। लेकिन इन लोगों ने वक्त के मुताबिक अँग्रेज बस्ती में ऊँची दीवारो से घिरा मकान बनवाया है।"

"तब फिर ?"

"सुनो पानू, अब कलकत्ता के बड़े उद्योगपतियो का अगर किसी विदेशी कंपनी के साथ मेल न रहे तो वे कुलीन नही माने जाते। संक्षेप मे, ऊँची श्रेणी मे होने के लिए विदेशी सहयोग का होना लाजिमी है।

"इस लड़की के बाप ने बहुत दुख पाया है। मिस्टर गोयनका के लडके के साथ उनकी लड़की का सबध नही हुआ, क्योंकि लड़के वालों को पता चल गया कि लड़की के पिता अभी भी समाज में ऊपर नही उठे है,

उनके हाथ मे कोई विदेशी कंपनी नही है।"

"वाह, दुख पाने की बात तो है। बिना अपराध के यह अपमान!" पानू द नेत्त दुख प्रगट किया।

पतितपावन ने पूछा, "लेकिन दुख की भी किस्में होती हैं, पानू! दुख आने पर मध्यवर्ग का बंगाली क्या करता है?"

"मुँह लटकाकर बैठ जाता है। उसे ब्लड-प्रेशर हो जाता है। कभी-कभी लडकी की माँ के साथ आँसू बहाता है।"

"ऊँचे बिज़नेस सर्किल में यह बात नही मिलेगी। लड़की का बाप मन ख़राब करके बैठ नहीं जाता। छोटी-मोटी किसी विदेशी कपनी को खरीदने के लिए परेशान हो जाता है," पतितपावन ने बताया।

'यह भी क्या पन्तुआ मिठाई है कि सड़क पर निकलते ही विदेशी कपनी ख़रीद ली जाये?' पानू दत्त ने मन की बात मन में दबा रखी।

"पानू, अब वही हवा आ गयी है। कब कैसी हवा चले, कोई नही जानता। विदेशी मुद्रा नियंत्रण क़ानून का सक्षिप्त रूप 'फ़ेरा' नहीं सुना?"

"फ़रार आसामी, घर फेरा, यह सब सुना है। लेकिन कौन-सी ऐसी मुसीबत है कि हम साहबी या अँग्रेज़ी फेरा लेकर दिमाग़ खपायें, पतू?"

"जिनके दिमाग है, वे ख़ूब खपाते हैं, पानू! 'फ़ेरा' ने बहुतों के दिमाग फिरा दिये है, पानू! सरकार ने कह दिया है, विदेशी कपनियों को शांति से देश मे बने रहने के लिए ज़रूरी है कि सौ में से चालीस हिस्से से अधिक विदेशी न हो। उसका नतीजा हुआ कि चाय-बागान, कॉफ़ी के बागीचे, चाकलेट कम्पनियाँ, बिस्कुट कंपनियो मे हिस्से लेने के लिए देशी व्यापारियो में भाग-दौड़ मच गयी। तुम्हे बताने में कोई हर्ज नही है, पानू! हमारी कानूनी लाइन मे घेराव और काफ़ीपोसा के बाद आजकल यही सबसे गरम हवा है। एक-एक कंपनी का मालिकाना बदलने में कानूनी-सलाहकार पसीने-पसीने हो रहे हैं। फिर समझो कि इस मौके पर जो व्यापारी एक विलायती कपनी अपने हाथ में नही कर पा रहा है, वह बिलकुल ही अभागा है। इन सब चालीस प्रतिशत विदेशी रक्त की कपनियों के नाम भी नये हो चले हैं। क़ानून की आँखों में यह अब स्वदेशी

हैं। लेकिन ऐंग्लो-इंडियनों की तरह इन सब फ़ॉरेन इंडियन कंपनियों को फ़िडियन कहा जाता है।"

"सीधी-सादी बँगला मे ट्यांस—यूरेसियन—कहो न, भाई ! एक ट्यांस रखैल न रहे तो स्वदेशी व्यापारी समाज मे मुँह दिखाने लायक नही रहता—यही न ?" पानूदत्त ने सीधी व्याख्या कर दी।

"पानू, तुम्हारा टेलीफ़ोन ठीक है न ?" पतितपावन ने जानना चाहा।

"टेलीफ़ोन ऑफिस मे मेरा साला है। ठीक न रहने का सवाल नही। एक यही मेरी अय्याशी है। मेरी तरह के आदमी के पास टेलीफोन नहीं फबता, फिर भी बीवी के बाप के घर के साथ मेल रखने की बात सोचकर फ़ोन हटाया नही।"

पानू दत्त फिर फ़ोन को कान से लगाकर बोले, "बिलकुल जिन्दा है। हमेशा गरगर आवाज करता रहता है। यहाँ भी फ़ोन की बात क्यों ? क्या किसी को नम्बर दे आये हो ?"

पतितपावन ने कुछ न कहा। पानू दत्त ने टेलीफ़ोन रखकर कहा, "मारो गोली इस टेलीफ़ोन को ! अच्छा पातू, तुम्हारे सबसे अधिक दुख के और सबसे अधिक सुख के दिन कब थे ?"

पतितपावन मन-ही-मन बोले, 'मेरी सबसे बडी दुखद घटना के साथ तो तुम जुडे हो। इतने दिन बाद यह बात कहने पर दुनिया-भर के लोग हँसेंगे। तुम तो जानते हो कि शान्तिरानी को देखने गया था तो वह मुझे बहुत ही अच्छी लगी थी। तुम्हारी जान-पहचान के पाल के मकान में लडकी देखने के बाद, विदा लेते समय मेरी ओर देखकर शान्तिरानी का चेहरा कैसी अजीब मुसकराहट से खिल गया था ! तुमने शरारत के साथ कहा था—पतितपावन, अच्छी तरह देख लो, शरमाओ मत। लड़की की बनावट कैसी है, देखना कैसा है, बातचीत कैसी है—इन सब बातो का जवाब मैं बाद मे न दे सकूँगा।

'लड़की को मामूली-सा देखना था। तमाम लोग ढेरों लड़कियाँ देखने जाते हैं। लेकिन मैदान में उतरकर मैं पहली ही बॉल पर आउट हो गया। मैं शान्तिरानी की वह मुसकराहट नही भूल सकता। वह दमकता

मतलब था—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, लेकिन अब कितने दिन शेष है ?

'मैंने उस दिन शान्तिरानी की आँखों मे अपने सपनो का प्रतिविम्ब देखा था, पानू ! शान्तिरानी से कहा था—आपके पिता आज मेरी माँ के पास आये थे। कही कोई असुविधा न होगी।

'शान्तिरानी बहुत शरमा गयी थी। लगता है, उसे पता चल गया था कि ब्याह का दिन तय करने के बारे मे मेरी माँ के साथ उसके बाबा की बातें हुई हैं।

'किन्तु बहुत दिनों तक बातचीत पक्की रहने पर भी जाने कैसे सब-कुछ गड़बड़ा गया था। तुम्हारा चेहरा गभीर था, पानू ! तुम्हारे कुछ कहे बिना भी भीतर की बात मेरे कानों तक पहुँच रही थी। शान्ति के दूर के संबंध के एक भाई वकील मिस्टर विश्वभर पाल ने आकर रुकावट डाल दी थी—किसके साथ शादी ? जिसके हाथ मे एक भी केस नही। जिसका कोई भविष्य नही। चुप्पा पतितपावन ? जो मुँह लटकाये कानूनी बस्ती में घूमता फिरता है !' लायन एंड पाल के वकील विश्वभर पाल महाशय का दिमाग़ उस समय दूसरे किस्म का था। ख़ूब काम था उनके दफ़्तर मे। क़ानून की बस्ती मे काले को सफ़ेद करने वाली प्रैक्टिस उस समय लायन एंड पाल की थी।'

सहसा पतितपावन का गला रुँध गया। पानू दत्त घबरा उठा, "पानी लाऊँ ?"

पतितपावन क्षण-भर मे संभल गये। पानी की कोई जरूरत नही। मन-ही-मन बोले, 'पानू, उस दिन तुमसे उन्हे समझाने के लिए केवल इतना कहा—विश्वभर पाल की बातो से न डरें, मैं अपना भविष्य जरूर ठीक कर लूँगा।

'तुम चुप रहे, कितनी समझाने की कोशिश की थी। वह सब तुम्हें मालूम है। मैंने जानना चाहा था कि शान्तिरानी का इस मामले मे क्या कहना है ?

'तुमने फिर भी कुछ न कहा। मैं उस समय शान्ति को खोने की बात भी न सोच सकता था। मिलन के पहले ही वियोग की पीड़ा से मैं जला जा रहा था। मन की उसी हालत में मैंने एक दुस्साहस का काम कर

शरीर, उन भोली आँखों की नाजुक चितवन ने मुझे वशीभूत कर दिया था। नीले कागज पर पात्री के अपने हाथो का लिखा था—कुमारी शान्ति-रानी पाल। मेरे सपने मे कुमारी की बात क्रमशः घुलती गयी। मैं शान्ति-रानी की माँग मे लाल सिन्दूर देख रहा हूँ। शान्तिरानी पाइन, वाइफ ऑफ पतितपावन पाइन, बी० ए०, एल-एल० बी०।

'पानू, ये बातें पतितपावन आज भी तुमसे खुलकर नही कह सकता। तुम सोच रहे होगे कि तुम्हारे चेहरे की ओर चुपचाप क्यों देख रहा हूँ? तुम प्लीज मुझे क्षमा करो। उस दिन तुमने मेरे कलेजे की आग मे दो-एक लकडी और लगा दी थी। मुझसे कहा था—बहुत सीक्रेट खबर है, पतू, शान्तिरानी तुमको देखकर बहुत खुश हुई है। कसम से बहुत सौभाग्य-शाली हो।

'देने-लेने, सोने-चाँदी, किसी भी तरह के लेन-देन के चक्कर मे मैं न पड़ूँगा—शान्तिरानी के लिखे पुर्जे से मैंने अकेले मे कहा था—मैं तुम्हारे लिए ही दिन गिन रहा हूँ, शान्ति!

'पानू, तुम्हारे मुँह से शान्तिरानी की पसन्द की खबर ने मुझे पागल बना दिया था। मैं सपने मे भी शान्तिरानी को देखने लगा था। नया वकील। बार-लायब्रेरी मे बैठे कानून की किताबों में भी मैं शान्तिरानी को देखने लगा था।

'उसके बाद उस दिन मैं कोर्ट से सीधे तुम्हारे घर पहुँचा। पानू, तुमने मुझे मधुर आश्चर्य मे डाल दिया था। कहा था कि देखो, हमारी रसोई मे माँ से कौन बातें कर रहा है!

'वह एक अद्भुत रोमांचक क्षण था। शान्तिरानी कुछ देर के लिए मेरे आगे आकर खड़ी हो गयी थी। रोजमर्रा पहनने वाली घरेलू साड़ी, कही कोई ख़ास सजावट नहीं। फिर भी कैसी श्री थी। प्रतिमावत् प्रेमिका की तरह मेरी ओर देखकर शान्तिरानी ने पूछा था—कोर्ट से लौट रहे हैं?

'आप कैसी हैं? मैंने पूछा था।

'शान्ति ने शर्म के मारे कोई जवाब न दिया, लेकिन बड़ी-बड़ी आँखों को कमल के फूल की तरह खिलाकर मेरी ओर देखा था, जिसका

मतलब था—मैं प्रतीक्षा कर रही हूँ, लेकिन अब कितने दिन शेष हैं ?

'मैंने उस दिन शान्तिरानी की आँखों मे अपने सपनों का प्रतिबिम्ब देखा था, पानू ! शान्तिरानी ने कहा था—आपके पिता आज मेरी माँ के पास आये थे। कहीं कोई असुविधा न होगी।

'शान्तिरानी बहुत शरमा गयी थी। लगता है, उसे पता चल गया था कि ब्याह का दिन तय करने के बारे में मेरी माँ के साथ उसके बाबा की बातें हुई हैं।

'किन्तु बहुत दिनों तक बातचीत पक्की रहने पर भी जाने कैसे सब-कुछ गड़बड़ा गया था। तुम्हारा चेहरा गंभीर था, पानू ! तुम्हारे कुछ कहे बिना भी भीतर की बात मेरे कानों तक पहुँच रही थी। शान्ति के दूर के संबंध के एक भाई वकील मिस्टर विश्वभर पाल ने आकर रुकावट डाल दी थी—किसके साथ शादी ? जिसके हाथ में एक भी केस नहीं। जिसका कोई भविष्य नहीं। चुप्पा पतितपावन ? जो मुंह लटकाये कानूनी बस्ती मे घूमता फिरता है !' लायन एंड पाल के वकील विश्वंभर पाल महाशय का दिमाग़ उस समय दूसरे किस्म का था। खूब काम था उनके दफ्तर में। कानून की बस्ती में काले को सफेद करने वाली प्रैक्टिस उस समय लायन एंड पाल की थी।'

सहसा पतितपावन का गला रुँध गया। पानू दत्त घबरा उठा, "पानी लाऊँ ?"

पतितपावन क्षण-भर में संभल गये। पानी की कोई जरूरत नहीं। मन-ही-मन बोले, 'पानू, उस दिन तुमसे उन्हें समझाने के लिए केवल इतना कहा—विश्वभर पाल की बातों से न डरें, मैं अपना भविष्य जरूर ठीक कर लूँगा।

'तुम चुप रहे, कितनी समझाने की कोशिश की थी। वह सब तुम्हें मालूम है। मैंने जानना चाहा था कि शान्तिरानी का इस मामले में क्या कहना है ?

'तुमने फिर भी कुछ न कहा। मैं उस समय शान्ति को खोने की बात भी न सोच सकता था। मिलन के पहले ही वियोग की पीड़ा से मैं जला जा रहा था। मन की उसी हालत में मैंने एक दुस्साहस का काम कर

डाला। अपने हाथ से शान्तिरानी को एक गुप्त चिट्ठी लिखी। मेरा मन कह रहा था कि शान्ति के साथ एक बार मुलाकात होने से मामला ठीक हो जायेगा। लेकिन पानू, तुम ख़बर ले आये कि शान्ति का दूसरी जगह ब्याह ठीक हो गया है।

'तुमने मेरी पीठ पर हाथ रखकर कहा—पतू, वे भविष्य के कंगाल हैं। वे लड़की की सुरक्षा चाहते हैं। मध्यवर्ग की मानसिकता समझ सकते हो।

'लेकिन ये सब बातें याद रहने पर भी तुम्हारा यह पूछना उचित नहीं है, पतितपावन के जीवन में सबसे अधिक दुख के दिन कौन-से थे? बत्तीस बरस बाद भी तो वह दुख धुला नहीं। इतनी कोशिश, इतने दिनों के बाद भी क़ानून का गंदा नाला पार करके भी पतितपावन उस नीले कागज़ के पुर्ज़े को फेंक न सका। मुझे याद है, आज के ही दिन बत्तीस बरस पहले तुम्हारे पास बैठकर मैंने शान्तिरानी को पहले-पहल देखा था। लगा था, यह तो मेरी अपरिचिता नहीं है। अनादिकाल की धारा में तैरते दो प्राण हैं।

'किन्तु आज मैं तुम्हें कुछ भी समझने न दूंगा, पानू!' पतितपावन को अपनी पराजय की बात उठाने की बिलकुल तबीयत नहीं हो रही थी।

"पानू, सुनो, मेरा सबसे अधिक दुख का दिन वह था जिस दिन मैं इस कानून की लाइन में चला आया था। उसी दिन ऊँट की कँटीले पेड़ों के साथ पहली मुलाकात हुई थी।"

"सबसे अधिक सुख की बात तो बतायी नहीं, पतू?" पानू दत्त ने फिर सवाल किया।

"अभी तक वह दिन आया नहीं है, पानू!"

पतितपावन का जवाब सुनकर ज़र्दे की पीक पानू ने फेंकी। पानू दत्त समझ रहे थे कि मित्र पतितपावन प्रोफ़ेशनल सफलता के नशे में डूबे हुए हैं।

"समझता हूँ, पतू! ताड़ का पेड़ एक पैर पर खड़ा होकर सब पेड़ों को पीछे छोड़ आसमान में झाँक रहा है।"

पतितपावन ने सोचा, लायन एंड पाल के विश्वभर पाल के वकालत की लाइन छोड़कर चले जाने पर ही सबसे अधिक सुख के दिन तक पहुँचा जा सकेगा। 'मिस्टर पाल, मैंने तो आपका कोई नुकसान नही किया। फिर भी आपने बेकार एक वकील के भविष्य की बात उठाकर मेरा शांति-स्वप्न तोड़ दिया व्यर्थ मे।'

पतितपावन मन-ही-मन अपने से बातें किये जा रहे थे। 'मिस्टर विश्वंभर पाल, आप अच्छी तरह जानते है कि पतितपावन पाइन इस समय कैसी प्रैक्टिस कर रहा है। वह आपसे कम नही चल रहा है। आप अब धीरे-धीरे नीचे उतरते जा रहे हैं और पतितपावन ऊपर चढ रहा है। ठहरो, मिस्टर पाल, कुछ ही दिनो मे पतितपावन और भी ऊपर उठ जायेगा। एक-एक करके अंग्रेज कपनियों का बिस्तर बँध रहा है और आपकी प्रैक्टिस कम होती जा रही है।'

मिस्टर घनश्याम कानोड़िया ने कहा था, "मिस्टर पाइन, आपको एक चैलेंज दिया है। कुछ इन्तजाम कीजिये। मुझे डेनवर इडिया लिमिटेड चाहिए, किसी भी कीमत पर। मैं आपको डेनवर के बोर्ड मे लूंगा। आप उसके चेयरमैन बनेंगे, मिस्टर पाइन !"

इस वक्त डेनवर का चेयरमैन कौन है, यह पतितपावन ने थोड़ी देर पहले देख लिया था। पहले कुछ रुचि नही हो रही थी, लेकिन रिपोर्ट में चेयरमैन विश्वंभर पाल का नाम देखते ही बत्तीस बरस पुराना घाव टीसने लगा। पतितपावन पाइन को जोश आने लगा। डेनवर का चैलेंज उन्हे अपना चैलेंज लगने लगा।

'क्रि-क्रि-क्रि !' पानूदत्त ने टेलीफोन उठाकर पतितपावन की ओर बढा दिया।

"लो, श्याम की वशी बजी। गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब के श्याम बाबू तुम्हारी तलाश कर रहे हैं।"

टेलीफ़ोन के स्पीकर पर हाथ रखकर पानू दत्त ने जरा शरारत की। "किस नाम का सिरी बाबा !"

पतितपावन ने व्याख्या की, "वही ब्रिटिश स्टाइल था। अँग्रेज़ी मामले

में बिलकुल स्थानीय नाम—टालीगंज क्लब, बगाल क्लब, बाँकीपुर क्लब, मद्रास क्लब।"

"पाइन हियर। कोई खबर, श्यामबाबू? क्या कहा? मिस्टर न्यूमन छह बजकर पाँच मिनट पर खेलने उतर रहे है। आप प्लीज़ उस वक़्त ही मिस्टर घनश्याम कानोडिया प्लस वन का नाम लिख लें। मिस्टर कानोडिया थोडी देर मे ही कन्फ़र्म कर देंगे।"

टेलीफ़ोन रखते ही पानू दत्त बोले, "हैरत मे डाल दिया, पतू! तुम्हे गॉल्फ़ खेलने का शौक कब से हुआ?"

"क्या मन से खेलता हूँ, भाई? धक्के के ज़ोर से खेल रहा हूँ। खेल के मैदान मे ही तो आजकल बड़े-बड़े सौदे हो रहे हैं। यह जो टूटी-फ़ूटी टी-गार्डन है, स्टर्लिंग चाय बागान है—गोविन्दपुर गॉल्फ कोर्स में ही बाजोरिया के हाथ मे चले आये थे। अठारह बरस का नौजवान मुकुन्द उर्फ़ लेपर्ड बाजोडिया के नाइन्थ होल मे होल-इन-वन देखकर टूटी-फ़ूटी के ब्रिटिश चेयरमैन सर डेविड कास्टिंग ऐसे खुश हुए कि लेपर्ड के पिता को ही बागानो के चालीस प्रतिशत शेयर पानी के दाम बेच दिये। बोले, 'वेरी लकी गॉल्फ़र, किस्मतवर खिलाड़ी की बिजनेस क़िस्मत अच्छी होनी चाहिए'।"

पानू के यहाँ से ही पतितपावन ने घनश्याम कानोड़िया को फोन किया। कल सवेरे छह बजकर पाँच मिनिट पर चिड़िया आकर बैठेगी।

कानोडिया अवाक हो गये। "पेइन साहब, आप क्या जादू जानते हैं? मुझे तो किसी तरह की कोई ख़बर नही मिली?"

"आइ एम लकी, घनश्यामजी! मैं लोगो की वफ़ादारी पा लेता हूँ। उसके बदले आदमी को कुछ छोड़ना पडता है। क्लब नाइट में श्यामबाबू के नाम दो बोतल बीयर पर दस्तख़त कर दिये थे—व्यक्तिगत खपत के लिए।"

'छह बजकर पाँच' सुनकर घनश्यामजी लेकिन-लेकिन कर रहे थे। लेकिन कोई चारा न था।

पतितपावन बोले, "सुनहरा मौका है, मिस्टर कानोड़िया! गोविन्दपुर क्लब मे अच्छे-अच्छे इस्पात भी मक्खन की तरह मुलायम हो जाते हैं। साथ

में आनन्द को ले जाइये। इतना ख़र्च और शोर-शराबा कर इनको खेल क्यों सिखाया था, अगर ऐसे मौक़ों पर थोड़ा-सा फ़ायदा न दें तो ?"

घनश्याम कानोड़िया अभी तक दूसरी तरह का व्यवसाय करते रहे थे। थोड़ा अटपटा लग रहा था।

पतितपावन बोले, "घनश्यामजी, आपका तमाम रुपया, तमाम कारोबार, बेतहाशा विदेशी मुद्रा, दो नबर का माल आपके पास है। आप किससे किस बात मे कम हैं ? आप सिर्फ़ याद रखें, केवल पन्द्रह दिन पहले टूटी-फूटी गार्डेन्स गोविन्दपुर में ही इधर से उधर हुआ है।"

पानू दत्त ने सारी उम्मीदें छोडकर सिर हिलाया। "पतू, तुम्हारे खुरों को नमस्कार है। खेल के मैदान को भी तुम लोगों ने शेयर मार्केट बना दिया।"

"यह तो पूर्वनिर्धारित समझो, पानू ! हम तो निमित्त मात्र हैं," निष्काम कर्मयोगी की तरह पतितपावन ने जवाब दिया।

"बहुत बचा। तक़दीर से वकील नही बना। जिन्दा रहे मेरा बैंक का कैश डिपार्टमेंट। नोट गिन-गिनकर ही ज़िन्दगी सुख-शाति मे कट जायेगी," पानू दत्त मानो वकालत के बोझ से मुक्ति पाकर बड़े खुश हुए।

पतितपावन कुछ न कहकर चुपचाप हँसने लगे। उसके बाद बोले, "उद्यम के अभाव मे ही तो बंगाली जाति पिछड़ी जा रही है, पानू ! सभी शाति चाहे तो अशाति का काम कौन करेगा ?"

पानू बोले, "मेरा दिमाग ख़राब हो गया है, पतू ! यह क़ानूनी सलाहकार क्या बला है ?"

"नया कुछ नही है, पानू ! गीता में ही लिख दिया गया है : 'यथा नियुक्तोस्मि तथा करोमि'। मैं तो यंत्र हूँ—मुझे जिस तरह काम में लाओगे मैं उसी तरह चलूँगा।"

दफ़्तर जाते वक़्त आज सवेरे पतितपावन ने डेनवर इंडिया लिमिटेड के भवन को एक बार फिर देखा। आज ट्रैफ़िक जाम होता तो अच्छा होता।

वह भवन को और अच्छी तरह गौर से देखते।

मन में एक दबी कामना का चूल्हा धीरे-धीरे गरम हो रहा है। डेनवर इंडिया चाहिए। चाहते हैं घनश्याम कानोड़िया, गोयनका-परिवार में अपने सामाजिक अपमान का बदला लेने के लिए। लेकिन चेयरमैन के पद का प्रसंग उठाकर पतितपावन को भी मिस्टर कानोड़िया ने ख़ूब मतवाला बना दिया है।

कंपनी का चेयरमैन—नैवेद्य में बढ़िया केला। कोई अधिकार नहीं, कोई पैसा-कौड़ी भी नहीं। फिर भी सामाजिक सम्मान। लूले जगन्नाथ की तरह, फिर भी बरस में एक दिन अख़बार में तसवीर छपती है। हिस्सेदारों की सभा में चेयरमैन साहब बोलते हैं: "माई कंपनी, तुम्हारे लिए इस प्रकार काम करने के लिए मैं प्रतिज्ञाबद्ध हूँ।"

विश्वंभर पाल का अध्यक्ष-भाषण कुछ महीने पहले अख़बारों में फैलाव के साथ निकला था। लेकिन डेनवर के चेयरमैन बेचारे विश्वंभर को अभी तक पता नहीं कि यह भाषण उनका आख़िरी भाषण है।

'पेड़ में कटहल मूँछों तेल,' पतितपावन ने आप-ही-आप अपने पर फब्ती कसी।

लेकिन भीतर का अहं बोल पड़ा, 'मूँछों में अगर तेल लग गया है तो कटहल भी लगेगा। तुम घनश्याम कानोड़िया को नहीं पहचानते। बरगद के तले लगे दाल के उस कारख़ाने के ज़माने से अभी तक कभी नहीं हारे। घनश्याम-पतितपावन जोड़ी के सामने असंभव नाम की कोई चीज़ नहीं।'

कल शाम पानू दत्त के यहाँ से निकलकर पतितपावन पाइन टाइगर इंटरनेशनल की मीटिंग में गये थे।

कानूनी अधिकारों के सम्बन्ध में जस्टिस सामन्त ने टाइगरों को संबोधित किया। बड़ी-बड़ी किताबों से जस्टिस सामन्त ने कैसे सुन्दर-सुन्दर उद्धरण दिये। कानूनी अधिकारों ने प्रकृति के नियमों की तरह ही समाज *को बाँध रखा है। कानून की नज़र में सब बराबर हैं। और भी बहुत-कुछ* कहा। 'आबजिक्स रीजन' की काले किनारे की साड़ी पहने अनुभवी एडवोकेट मुक्ता हालदार को पास बैठे देखकर पतितपावन फ़ार आबजिक्स रीजन हलके-हलके हँसने लगे।

पतितपावन बेकार वक्त बरबाद न कर डेनवर इंडिया लिमिटेड के क्रयअफ़सर टाइगर हरविलास शर्मा के पास बैठ गये।

टाइग्रेस हरविलासिनी मिस्टर पाइन की ज़रा विशेष खातिर करती थी। उनकी लडकी रचना के शादी-सम्बन्धी झगड़ों में वह भी कभी-कभी मुफ्त परामर्श देते रहते हैं। पतितपावन शादी-सम्बन्धी केस नही करते, नगेन रक्षित के पास भेज देते है।

"गुड न्यूज़, मिस्टर पाइन !" हरविलासिनी बोली।

पतितपावन ने सोचा, लड़की-दामाद का समझौता हो गया है। "अच्छा ही तो है," पतितपावन बोले।

टाइग्रेस हरविलासिनी ने फुसफुसाकर बताया, "वे विवाह-विच्छेद के लिए राजी हो गये है। गुड फॉर रचना।"

तलाक कैसे अच्छा हो सकता है, यह पतितपावन न समझ सके। ज़रूर होता होगा, नही तो रचना की माँ यह बात क्यों कहती ?

नही, टाइगर हरविलास शर्मा से ऑफिस की बात उठाने का ज़रा-सा भी मौका टाइग्रेस न देंगी। "मिस्टर पाइन, डाइवोर्स के बाद फिर शादी के लिए, कितने दिनों तक इन्तज़ार करना होता है ? रचना ने पूछा था। मैंने कहा, अंकिल से आज टाइगर मीटिंग मे पूछ आऊँगी।"

"मुझे ठीक से याद नही है, शायद छह महीने।"

"सिली ! डिवोर्स के बाद फिर प्रतीक्षा क्यों ? भारत बहुत धीमा देश है, मिस्टर पाइन ! मेरा एक कज़िन कोलोरेडो मे है। वहाँ किसी मामले मे कोई प्रतीक्षा नहीं। हरविलास अगर किसी काम के होते तो हमें यह मुसीबत न उठानी पड़ती। मिस्टर पाइन, तुम्हें पता है, व्हिस्की के दाम फिर बढ़ रहे है ? मेरा कज़िन तो सोच ही नहीं सकता, हम कैलकटा मे कैसे रह रहे है !"

मिस हलदर की ओर छिपी नज़र से देखकर जस्टिस सामन्त अब सर हेनरी मेन के लेख से एक उद्धरण दे रहे थे। पतितपावन उस मौके पर क्रय-ऑफ़िसर हरविलास शर्मा की ओर झुक गये।

हरविलास अभी दिल्ली से लौटे है। डेनवर इंडिया के दिल्ली का काम वही देखते हैं, इसकी ख़बर पतितपावन ने पहले ही लगा ली थी।

"दिल्ली-अभियान कैसा रहा ? सुना है, वहाँ सबको आपने मुट्ठी में कर रखा है।"

"वहाँ अब ठीक नहीं रहा, मिस्टर पाइन ! फ़ॉरेन शेयर कम करने के लिए दिल्ली बहुत दबाव डाल रहा है," हरविलास शर्मा ने फुसफुसाकर बताया।

"आपके नये मैनेजिंग डायरेक्टर तो बड़े काम के आदमी हैं," अंदाज से पतितपावन ने ढेला मारा।

धुरधर शर्मा ऐसे हँसे, जिसका मतलब हाँ या न—दोनों ही हो सकता था। बहुत दिनों की जानकारी से शर्माजी ने सीखा था कि ऊँचे सर्किल में ऊँचे अफ़सर के बारे में गलत राय देना खतरे से ख़ाली नहीं रहता।

लेकिन टाइग्रेस छोड़ने वाली बंदी नहीं थी। बोली, "मुझसे सुनिये, मिस्टर पाइन ! हैंडसम यंगमैन—मैनेजिंग डायरेक्टर लगता ही नहीं। थोड़ा कवियों का-सा ढंग है, आँखें रोमांटिक, मुझे तो ज़रा-भी अच्छा नहीं लगता। पहले के मैनेजिंग डायरेक्टर लोग सबको रोब में रखते थे, किसी को खबर न होने देते थे। इस आदमी को देखना बहुत ही 'सिम्पुल' है। ये लोग इंडिया में बिजनेस कैसे चलायेंगे ?"

मिस्टर पाइन ने और भी कई बातों का पता लगा लिया। आर्थर न्यूमन चित्र बनाता है, पार्टी में गाने गाता है, फ़ोटोग्राफी का शौकीन है।

"रसिक कहो, रसिक," पतितपावन ने सावधानी से फिर फिकरा कसा।

"रसिकता कहाँ ? भारत आकर हर वक़्त उदास रहता है। अकेला आदमी, किसी से मिलने का साहस नहीं होता।"

"वाइफ़ कैसी है ?"

"अभी तक तो वाइफ़ का 'व' तक नहीं दिखायी पड़ा है। दो तरह की अफ़वाहें सुनने में आयी हैं। कोई कहता है वाइफ़ बहुत सुन्दर है—देखने में मोम की गुड़िया-सी कोमल। लेकिन गल जाने के डर से मोम की गुड़िया भारत नहीं आती। बहुत बड़े परिवार की लड़की है, कोई गोल-माल-ओलमाल चल रहा है।"

एक और गोलमाल की बात भी टाइग्रेस हरविलासिनी शर्मा ने

बतायी : "एक और न्यूज है, सीधी-साधारण ! वाइफ़ को बच्चा होने वाला था, इसी से नहीं आयी। भारत में चाइल्ड डेलीवरी हो, यह कौन-सा साहब-मेम चाहेगा ? चान्स हो तो हम भी इंडियन मेटर्निटी से बचें।"

यह ख़बर नयी थी। भारतीय मदर लोग आजकल विदेशी धरती पर सन्तान भूमिष्ठ कराने का स्वप्न देखती हैं, इसका पतितपावन को पता न था।

आर्थर न्यूमन की अंतरग तसवीर अभी तक मन में नहीं उभर पा रही थी। लेकिन लग रहा था कि आदमी कुछ अलग किस्म का है, तमाम अँग्रेजों से कुछ अलग।

पतितपावन पाइन ने ऑफ़िस में आते ही गोस्वामी के केस मे मझोले आकार की डिक्टेशन दी। मिस सैमुअल ने जल्दी-जल्दी डिक्टेशन ली।

इसके बाद ही घनश्याम कानोड़िया का फोन बज उठेगा, यह पतितपावन सोच भी न सके।

"हलो मिस्टर पेइन, अरे आपके टेलीफ़ोन का क्या हाल है ! चार बार कोशिश करने पर मिला है," उधर से रामनरेश गुप्ताजी की आवाज़ सुनायी दी।

"क्या इतनी जल्दी ? घनश्यामजी तो अभी भी गोविन्दपुर गॉल्फ कोर्स में होंगे," पतितपावन ने जवाब दिया।

"यही सोचकर सवेरे दो-एक प्राइवेट काम मैं भी करने वाला था। लेकिन घनश्यामजी दफ़्तर आ गये है और हस्बेमामूल आपको खोज रहे है।"

स्विंग दरवाज़ा ठेलकर कमरे मे घुसते ही पतितपावन को लगा कि घनश्याम कानोडिया का चेहरा गंभीर है।

पतितपावन बोले, "गोविन्दपुर क्लब में ही स्नान से निबटकर सीधे ऑफिस चले आये ?"

"यह कैसे जाना ?" घनश्यामजी जरा ताज्जुब में पड़ गये।

"आपके माथे पर जो चंदन की बिन्दी रहती है वह आज नहीं है, घनश्यामजी !"

"आपकी आँखें जासूस लोगों से ज्यादा तेज है, पतितपावनजी," घनश्यामजी ने कहा।

"खेल कैसा रहा ? क्या स्कोर रहा ?"

पता चला कि जिस असली खेल के लिए घनश्यामजी गये थे, उसमें स्कोर करने का मौका नहीं मिला।

"यह न्यूमन बहुत हाईक्लास का अँग्रेज नहीं है," घनश्यामजी बोले, "खुद गाडी चलाकर मैदान तक आया था।"

"उसके बाद ?"

"व्यवहार में बहुत ही खराब है। साथ में एक आदमी था, कोई मिस्टर शिवसाधन चौधरी। फर्स्ट होल से टी-ऑफ कर उसने उसके साथ कुछ फिल्मी किस्म की बातें शुरू कीं। सात्‌जित्‌ रे और आलतू-फालतू। नाइन्थ होल के पास जाकर हमें चान्स मिला। आनन्द से उन्होंने गोविन्द-पुर की पुरानी हिस्ट्री मालूम की। आनन्द तो छोटा-सा लड़का है, उससे पुराने कलकत्ता का पता क्या मिलेगा ? फिर भी आनन्द ने विक्टोरिया मेमोरियल जाने को कहा। वहाँ सारी पुरानी हिस्ट्री मौजूद है।"

"उसके बाद ?"

उसी मौके पर घनश्यामजी ने जरा व्यापार की बात छेड़ी। कहा, डेनवर इंडिया के थोड़े-बहुत शेयर उनकी फ़ैमिली के पास भी हैं। कंपनी के बारे में दो-एक बातें पूछते ही साहब भड़क उठे। मुँह पर ही बोले, "यहाँ कोई बिजनेस की बात नहीं। बिजनेस की जगह है ऑफ़िस।"

घनश्याम कानोड़िया का चेहरा तमतमा उठा था। वह आज बहुत अपमानित महसूस कर रहे थे, यह बात पतितपावन आसानी से समझ गये।

"बिजनेसमैन की बेइज्जती करके किसी को कभी नफ़ा नहीं हुआ, पतितजी ! आपने घनश्यामजी बिड़ला की जीवनी पढ़ी है ? ऑफ़िस में लिफ्ट में चढ़ते समय कलकत्ता के एक इंग्लिशमैन से अपमानित हुए थे। तभी अँग्रेज व्यापारी समाज को शिक्षा देने के लिए उन्होंने उद्योग-व्यापार

शुरू किया था। और अब लोग कहते है कि बिडला भारत का सबसे बडा उद्योगपति-घराना है। लेकिन दफ़्तर से लिफ़्ट में चढते समय की अपमान की सामान्य घटना बहुत पीछे छूट गयी है।"

पतितपावन चुप रहे। उन्हे पता था कि घनश्यामजी अभी और भी कुछ कहेंगे।

घनश्यामजी बोले, "खेल पूरा किये बिना ही मैं चला आया। लेकिन आनन्द को छोड़ आया हूँ।"

घनश्यामजी थोडा रुके। "आप लोगों और हम मे फरक है, पतितजी! आप लोग खफा होते ही सीटी बजाना शुरू कर देते है। सारी स्टीम निकल जाती है। दूसरी पार्टी को भी चेतावनी मिल जाती है। गुस्सा होने पर हमें क्या-क्या करना है, हम यही ठीक करते है।"

पतितपावन सुने जा रहे थे। घनश्यामजी बोले, "मैंने ऑफिस लौटकर मिस्टर न्यूमन को अपनी एक सेट डायरी, कैलेंडर और स्पेशल गिफ़्ट आइटम—क्रोकोडाइल लेदर का लेडीज़ हैंडबैग और पर्स भेज दिया। बहुत क़ीमती आइटम है—हार्दिक शुभकामनाओं सहित।"

एक टुकड़ा सूखा आँवला घनश्यामजी ने मुँह मे डाला।

"लेकिन पतितजी, डेनवर इडिया मुझे चाहिए। शेयर कैपिटल मामूली ही है। मैंने आज ही बाजार से धीरे-धीरे डेनवर शेयर उठाने के लिए ब्रोकर से कह दिया है।"

"पता नही चल जायेगा?"

"बिलकुल नही। जो ब्रोकर ख़रीदेंगे उनके साथ मेरा कोई कनेक्शन नही है।"

"ब्रोकर को तो पता चलेगा," पतितपावन बोले।

घनश्यामजी ने नमक लगा आँवले का टुकडा थोड़ा चूसा। खट्टे रस का स्वाद लेते-लेते वह बोले, "यहाँ के ब्रोकरों को पता चलेगा, तो? उन्हें तो हिदायत मिली है, बाम्बे ब्रोकर्स से आया टेलेक्स। वे सोचेंगे कि कोई बबई में ख़रीद रहा है। कलकत्ता मे जो ख़रीद चल रही है उसमें कौन दिलचस्पी ले रहा है, यह वह नही समझेंगे।"

"आपका दिमाग़ भी अजीब है!" पतितपावन को मानना ही

पड़ा।

"आप शेयर मार्केट का आपरेशन मुझ पर छोड दें। लेकिन उस गॉल्फ कोर्स, उस मैनेजिंग डायरेक्टर का इन्तजाम कीजिये। ज़रूरत हो तो आप विदेश जाइये। रामनरेशजी आपके लिए हवाई जहाज़ के टिकट का इन्तज़ाम कर देंगे। हुंडी पर विदेशी मुद्रा लें लीजियेगा।" घनश्याम कानोडिया सचमुच घबराये हुए है, खूब समझ में आ रहा था।

घनश्याम कानोड़िया ने पतितपावन को ब्लैंक चेक दे दिया। "आपका और मेरा यह *ज्वायंट चैलेंज है, मिस्टर पेइन! मैं पूरे अठारह गंडे* खेल खेलूंगा। जिस कुर्सी पर आज न्यूमन हैं, वहाँ मैं हनुमान को बैठा दूंगा।"

मिस अनीता सैमुअल ने देखा कि उनके साहब ठडे कमरे मे चहलकदमी कर रहे हैं। इस तरह बेचैनी से अपने कमरे में मिस्टर पाइन को टहलते अनीता ने कभी नहीं देखा था।

"सर, आपके घर पर क्या कुछ हो गया है ?" अनीता ने कमरे मे आकर पूछा।

"नही अनीता, घर पर कुछ नहीं हुआ। मेरी तबीयत भी ठीक है। मैं सिर्फ़ एक समस्या का हल तलाश कर रहा हूँ।"

"नॉर्मंडी लैंडिंग के पहले मित्र-सेनाओं के प्रधान जनरल आइज़नहावर भी इसी तरह ऑफ़िस के कमरे मे चहलकदमी करते थे, सर !"

पतितपावन अनीता की बात पर थोड़ा हँसे। जनरल आइज़नहावर के पास काफी सैनिक सरदार थे, पतितपावन पाइन के पास अपने दिमाग और एक जोड़ी हाथों के सिवाय कुछ नही। लेकिन डेनवर इडिया के इस मामले ने उनको परेशान कर दिया था।

एक बार पतितपावन को लगा था कि कौरव-पांडवों के बीच मे वह बेकार मे क्यों पड गये हैं? डेनवर इडिया लिमिटेड ने भी उनसे कई बार सलाह ली थी। लेकिन घनश्यामजी ने उनके दिल मे आग लगा दी है, विशेष रूप से उस विश्वंभर पाल की जगह कंपनी का चेयरमैन बनने की संभावना ने। बत्तीस बरस बाद हिसाब-किताब बराबर करने का ऐसा

मौका मिलेगा, यह किसे पता था ?

फिर पतितपावन ने अपने को समझाया कि वह नहीं करेंगे तो कोई और घनश्यामजी की मदद करेगा। कलकत्ता शहर मे भोजन बिखेरने पर कौओं की कमी न होगी। मिस्टर घनश्याम कानोडिया हाथ समेटने पर भी शान्त होंगे या नहीं, कहना मुश्किल है। बाजोरिया भी शायद छिपे तौर पर दिलचस्पी ले रहे हैं, क्योकि सुरेन लाहिड़ी कुछ सक्रिय लग रहे थे।

फिर टेलीफ़ोन बज उठा। घनश्यामजी ने ख़ुद फ़ोन किया था, "पतितजी, डेनवर इडिया लिमिटेड की फ़ाइल दिल्ली मे टॉप लेवल पर चली गयी है। बहुत सभव है, कुछ दिनो मे वे कपनी के विदेशी शेयर कम करने को कहें।"

"यह सारी ख़बर इतनी जल्दी कैसे मिली ?" ताज्जुब मे पडे पतितपावन ने पूछा।

"दिल्ली में एक बहुत अच्छा ज्वायंट सेक्रेटरी मिल गया है। बहुत दिनो तक जो सरकार का स्वार्थ देखता था, अब रुपये पाकर हमारा काम देखता है। उसी विभाग मे था, इसी से बडी आसानी हो गयी है। हुक्म करने से सरकारी फ़ाइल की पूरी नकल भेज देगा। किस अफ़सर ने क्या लिखा, किस मत्री ने क्या झंझट लगा दिया, सब पता चल जायेगा।"

"कहते क्या हैं ? देख रहा हूँ कि दिल्ली कलकत्ता से भी आगे बढ गया है," पतितपावन ने विस्मय व्यक्त किया।

घनश्यामजी बडी मधुर हँसी हँसे। बताया, दिल्ली में अब बम्बई स्टाइल से काम हो रहा है। अफ़सर, क्लर्क, चपरासी—सभी बडे व्यापारिक दिमाग के हो गये है। "दिल्ली मे कोई परेशानी नही," घनश्यामजी बोले। थोड़ा स्पेशल पेमेंट करने पर होटल मे बैठे-बैठे ही आपको सरकार की मूल फ़ाइल उलट-पलट कर देखने और नोटवोट करने के लिए मिल सकती है।"

पतितपावन बोले, "मुझे जरा शतरंज की कोई चाल सोचने दें, घनश्यामजी ! डेनवर के बारे मे सरकारी ऑर्डर का पता लग जाने से नुकसान हो सकता है। काम ऐसे करना होगा कि दूसरी पार्टियों को जब

शिवसाधन कल रात के सन्नाटे में इस छते हुए कमरे मे बैठे सोच रहे थे, आत्मविश्वास के अलावा इस जाति मे और किसी चीज़ की कमी नही है। शिवसाधन ने कही पढ़ा था कि प्राणिजगत मे मनुष्य ही सबसे गया-गुजरा प्राणी है। सबसे दीर्घजीवी होता है कछुआ, आकार में विशालतम होता है हाथी, सबसे शक्तिशाली सिह, सबसे तेज़ धावक हिरन, सबसे तेज़ उडता है चमगादड़, सबसे टेढा-मेढ़ा रास्ता खोज निकालती है मधुमक्खी और सबसे तेज़ घ्राणशक्ति कुत्ते की होती है। फिर भी मनुष्य ही इस ससार का मालिक बना। अपनी बुद्धि और विश्वास के बल पर। मनुष्यों के बीच कोई फ़र्क नही होता। एक जाति का मनुष्य एक काम कर सके और दूसरी जाति का न कर सके, इसका कोई प्रमाण इतिहास में नही मिलता। बंगाली लोगों में इच्छा हो तो सब-कुछ कर सकते है और भविष्य में कर भी सकेंगे।

शिवसाधन को लग रहा था कि वह धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ रहा है। कारख़ाने के लडकों से वह आज कुछ बातें करेगा। कहेगा : "एक मिनी पम्प हम सबने मिलकर कितनी आसानी से बना लिया। बड़े-बड़े प्रतिष्ठान ही अच्छा काम कर सकते है छोटे नही, यह बिलकुल सच नही है। इस बात को तुम अपनी आंखो से देख रहे हो।"

इस देश के लडके केवल राजनैतिक और सामाजिक इतिहास पढ़ते हैं—कब कहाँ कौन-सा युद्ध हुआ, कौन-कौन से राजा हुए, कौन मंत्री हुए, कौन किस प्रजातंत्र का राष्ट्रपति बना—इस सबका उनको पता होता है। लेकिन इस बात का किसी को पता नही कि मोटरगाड़ी के इजन का आविष्कार सबसे पहले किसने किया था, डीज़ल साहब ने दुनिया को क्या दिया, मानव सभ्यता की प्रगति मे माइकेल फ़ैरेडे का योगदान कितना है, बिजली की लैम्प का आविष्कार कैसे हुआ था, ट्रांज़िस्टर बनाने का सपना किसने सबसे पहले देखा था? प्रयोगों के इतिहास सबंधी अज्ञान ने ही हमे दूसरो के सहारे छोड़ दिया है।

शिवसाधन को लगता, इस देश के लडकों को, फिल्मी और क्रिकेट स्टारों की जीवनियाँ न जानकर, वैज्ञानिक अनुसधानों मे रुचि लेने की जरूरत है। छोटे-छोटे लोगों के वैज्ञानिक आविष्कारों से बड़ी-बड़ी

कंपनियाँ बनी हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ ही हमेशा बड़े-बड़े आविष्कारों का कारण नही हैं।

उसके बाद शिवसाधन को ध्यान आया कि आज छुट्टी का दिन है। आज यहाँ कोई नही आयेगा। वक़्त बरबाद न कर शिवसाधन फिर काम में जुट गये।

"हैलो शिव, तुम छुट्टी के दिन यहाँ क्या कर रहे हो?" ठाकुरपुर में अचानक आर्थर न्यूमन का स्वर सुनने के लिए शिवसाधन तैयार न था।

शिवसाधन एक बेकार-सी साइकिल पर बैठकर बड़ा जोर लगाकर पडल चला रहा था। इस तरह की निकम्मी साइकिलें चला-चलाकर न्यूमन के देश में बहुत-से लोग घर पर ही व्यायाम करते हैं।

"हैलो आर्थर," शिवसाधन जल्दी से साइकिल से उतर पडा। ध्यान आया कि आज सवेरे दाढी भी नही बनायी है।

शिवसाधन को दाढ़ी पर हाथ फेरते देखकर आर्थर ने उसे इसके लिए परेशान होने से मना किया। "अपने देश मे छुट्टी के दिन मैं भी दाढी नही बनाता हूँ। देहातों की सैर पर निकलने पर मैं नंगे पाँव घूमता फिरता हूँ।"

आर्थर आगे बोले, "शिव, तुम अगर वजन कम करना चाहते हो तो मैं तुम्हारे कलकत्ता के फ़्लैट मे एक स्पेशल साइकिल उपहार मे भेज दूँगा।"

"वजन के बारे में मुझे कोई परेशानी नही है। तुम शायद नही जानते कि पति के शरीर पर थोडी चर्बी न रहने से भारतीय पत्नियों को फिक्र पड जाती है।"

"ओ हाऊ लवली! और मेरी पत्नी लीज़ा ने लिखा है कि तुम्हारा वजन एक पौंड भी बढा देखूँगी तो बहुत खराब लगेगा। तब मैं तुम्हे पन्द्रह दिन बिना खिलाये रखूँगी।" आर्थर न्यूमन छोटे लड़कों की तरह हँसने लगे।

इसके बाद शिवसाधन ने इस साइकिल का रहस्य बताना शुरू किया। "मेरे अनुसंधान के दूसरे खड में काम शुरू हो रहा है, आर्थर! इस देश के गाँवों के बारे में जितना सोचता हूँ, उतनी ही मेरी फ़िक्र बढती जाती है।

इस मिनी मोटर-पंप को इस्तेमाल करने की सामर्थ्य कितने लोगों में होगी ?"

"तुम डर रहे हो कि इस डेनवर-पम्प के खरीदार नही मिलेंगे ?" आर्थर न्यूमन थोड़ा परेशान हो गये ।

"कुछ लोग तो मिल ही जायेंगे । वे कीमती रेडियो खरीदते हैं । गाँव मे टी० वी० सेट तक खरीदे जाते है । क्या इस मिनी मोटर-पम्प को नही खरीदेंगे ? लेकिन ज्यादातर लोगों की बात सोचकर मेरा मन परेशान हो उठता है, आर्थर ! हम किसी भी तरह उन तक नही पहुँच पायेंगे । वे बेबस हालत मे हमारी ओर देख रहे हैं ।"

"शिव, इडिया के प्रति मेरा झुकाव है । यह अद्भुत देश मेरी कुतूहल प्रवृत्ति को जगा देता है । लेकिन इस देश की गरीबी मेरी समझ से बाहर है । कभी कोई उन्नति होगी, विश्वास नही हो पाता ।"

"हम सबको एक ही डर है, आर्थर ! कुछ नही होगा, यही सोचकर अपने सुख के पीछे इस देश के भाग्यवान लोग परेशान रहते हैं । लेकिन पता है, आर्थर, इसी कलकत्ता की एक पतली सडी गली मे एक आदमी पैदा हुए थे । पराधीन, निर्बल जाति से उन्होने कहा था, 'उठो, जागो ।' वे कुल उन्तालीस वर्ष जीवित रहे थे । जाने से पहले घोषणा कर गये कि भारतवर्ष जाग रहा है । तुम क्या अपनी आँखों से नही देख पा रहे हो कि अब नीद टूट रही है ?"

"किसी दिन उस तंग टूटी-फूटी गली में मुझे ले चलना, शिव ! मैं तो ऐसे असाधारण भारत को देखने के लिए ही कलकत्ता आया हूँ । लेकिन यहाँ मैं एक क्लब से दूसरे क्लब में, एक होटल से दूसरे होटल मे, एक कॉकटेल से किसी और कॉकटेल में जाने के अलावा कुछ भी नही कर रहा हूँ ।"

शिवसाधन बोला, "आर्थर, मैं सोच रहा हूँ कि मिनी मोटर-पंप तो हो गया । लेकिन *किस तरह से तेल के दाम बढ़ रहे हैं ! विदेशो से आये* तेल पर पूरी तरह निर्भर कर इस देश के करोडो गरीबों की सिंचाई का काम किस तरह चल सकता है ?"

आर्थर बोले "कम ऑन शिव, छुट्टी के दिन अपने बारे मे भी कुछ

फ़िक्र किया करो। तुम तो ऐसे नही थे। विदेश मे वीक-एंड में तुम नाचते, गाते, पाल की नाव चलाते थे।"

शिवसाधन के कानो में जैसे वे बातें गयी ही नही। वह बोला, "आर्थर, मैने नये रास्ते पर सोचना शुरू कर दिया है। डेनवर पप के साथ यह बाइसिकिल लगा दी जा सकती है या नही। गाँव के लोगो को साइकिल चलाने का बडा शौक रहता है। बाइसिकिल की बिजली की शक्ति से छोटे पप का चलना इस देश मे कैसी विचित्र बात होगी!"

आर्थर ने अब घड़ी की ओर देखा और सोचा कि इस भारतवर्ष मे कैसे-कैसे विचित्र लोग है। एक ओर शिवसाधन की-सी साधना है, जिसे कोई घमड नही, कोई प्रत्याशा भी नही। और दूसरी ओर टिपिकल व्यापारी है। अपनी व्यापारिक संस्कृति के साथ जो रातों-रात औद्योगिक युग की मिल्कियत निगलने को बैठे है। इसी तरह के एक आदमी के साथ सवेरे गॉल्फ़ क्लब मे भेंट हुई थी। क्या कहना चाहता था, डेनवर कपनी के इंडियन शेयर।

डेनवर कपनी के इंडियन शेयर तो वैसे भी लालच के योग्य नही है। "शिव, तुम अपने इस काम के बारे में बाहर तो किसी को नही बता रहे?"

"मैं अभी पागल नही हुआ हूँ, आर्थर," शिवसाधन ने जवाब दिया।

तो अचानक मिस्टर कानोड़िया क्यो डेनवर शेयर के बारे मे जोश दिखा रहे हैं? आर्थर न्यूमन ठीक से समझ नही पा रहे है। इस मामले मे आर्थर का मन स्थिर है। लेकिन विदेशी शेयर छोडने ही पड़ें तो इस कपनी के कर्मचारियों मे बराबर-बराबर बाँट देंगे। शिवसाधन अपने प्रियजनो को भी कुछ शेयर दे सकते हैं। डेनवर की कोई इतनी बड़ी पूँजी नही है। आर्थर इस आशय की चिट्ठी पिता को लिखेंगे। उसके अलावा शिवसाधन का प्रयत्न सफल होने पर और भी बहुत-से कर्मचारी कपनी में शामिल होगे। उनको सुखी रखने का एक आसान तरीका उन्ही को कंपनी के शेयर बेचना है। डेनवर इटरनेशनल को ऐसी कोई जल्दी नही है। धीरे-धीरे रुपये मिलने पर भी कोई असुविधा न होगी।

"आर्थर, तुम आये हो इसलिए धन्यवाद," शिवसाधन कुछ समय बाद

बोला।

आर्थर ने जवाब दिया, "सवेरे-सवेरे हाई-वे पकड़कर निकल पड़ा था। अचानक ठाकुरपुर का साइनबोर्ड देखकर रुक गया। यहाँ तुमसे मुलाक़ात होगी, यह सोचा भी न था।"

आर्थर के कुछ देर और बैठने पर शिवसाधन खुश होता। लेकिन शिवसाधन को वह कुछ उत्तेजित नजर आ रहे थे।

कारखाने का गेट पार कर, सड़क तक आर्थर न्यूमन को विदा करने के लिए आने पर अचानक शिवसाधन क्षण-भर के लिए ठिठककर खड़ा हो गया। स्टीयरिंग के पास ही साड़ी पहने एक युवती काला चश्मा लगाये सीट पर उठंगी बैठी थी।

आर्थर कुछ कहे बिना गाड़ी स्टार्ट करने जा रहे थे। गाडी के स्टार्ट होने से पहले, कुछ सोचकर आर्थर बोले, "दिस इज़ अलका। फ़िल्म में अभिनय शुरू किया है। फिल्म रिलीज होने पर भीड़ लग जायेगी। सटजित रे की अगली फ़िल्म में तुम लोग शायद अलका को देख सकोगे।"

शिवसाधन ने सौजन्यता से नमस्कार किया। किन्तु सुवेशिनी अलका ने कोई ध्यान नहीं दिया। किस तरह अजीब स्टाइल से उसने ओंठ बिचकाये, पूरे वक़्त काले चश्मे की ओट रहने की बात भी ठीक से समझ में न आयी।

शिवसाधन को बहुत अटपटा लगा। आर्थर न्यूमन की गाड़ी इस बीच लाल सुर्खी की हद पार करके हाई-वे पर आकर कलकत्ता की ओर मुड़ गयी।

"व्हाट ए लवली डे, अलका!" गाडी की चाल कम कर आर्थर न्यूमन ने अपनी सहचरी की ओर देखा।

"इस प्रकार क्षितिज तक फैली मखमली हरियाली मैंने कभी नहीं देखी।" न्यूमन ने फिर एक बार सहचरी की ओर देखकर सोचा कि काले चश्मे में से तो इस हरियाली का आनन्द मिलेगा नहीं।

अलका ने चेहरे पर सलज्ज मुसकराहट लाने का प्रयत्न कर क्षण-भर के लिए चश्मा उतारकर फिर पहन लिया। टूटी-फूटी अँग्रेज़ी में बोली, "मुझे शर्म आती है।"

भारतीय युवतियों की संसार-विख्यात लज्जा के बारे में आर्थर न्यूमन ने सुन रखा था, लेकिन देखा पहली बार। अपने देश में कमर तक कपड़े पहने बेदिंग ब्यूटी और इस देश में शर्म में लाल ब्लशिंग ब्यूटी। आर्थर न्यूमन ने लक्ष्य किया कि अलका ने अपनी साड़ी का पल्लू विपुल छाती पर फैला रखा था।

आर्थर न्यूमन ने यह भी लक्ष्य किया कि सूर्य के सुनहरे प्रकाश में बंगाल की उर्वर धरती लहराती है।

'लैंड ऑफ़ ग्रीन एंड गोल्ड !' आर्थर न्यूमन ने मन-ही-मन कहा।

अलका क्या समझी, किसे पता ? दाहिना हाथ आर्थर की ओर बढ़ाकर अपनी चूड़ियों की ओर उसने उसकी दृष्टि खींची। "गोल्ड," अलका को अपनी भाषा पर विश्वास नहीं हो रहा था।

आर्थर न्यूमन ने देखा कि सूर्य की स्वर्णाभा ने बंगाल की इस बालिका को भी हिरण्मयी कर दिया है। अलका के हाथ के सोने के गहने और सुनहली हँसी ही जैसे बंगाल के स्वर्ण-पटल पर प्रतिफलित हो रही थी।

"मेरी आँखें तृप्त हुई जा रही हैं। तुमको क्या लग रहा है ?" आर्थर न्यूमन ने सहयात्रिणी से अँग्रेज़ी में पूछा।

"नॉट मच इंग्लिश," अँग्रेज़ी के अपने सीमित ज्ञान के बारे में अलका ने संकोच के साथ बताया।

"इसकी फ़िक्र क्यों ? मैं तुम्हारे हाथों की चूड़ियों की गोल्डेन भाषा समझ सकता हूँ। तुम बिलकुल चिंता मत करो, अलका ! बँगला में बातें करती चलो, मैं तुम्हारी भाव-भंगिमा देखकर ही सही-सही अंदाज़ लगा लूँगा।"

"मिस्टर न्यूमन, आपने कैसी अच्छी बात कही," शर्मीली अलका का कुंठित स्वर अब धीमा हो गया।

"मुझे आर्थर कहो।"

"अरे बाप !" अलका ने जीभ काटी।

न्यूमन समझे कि साथिन को कुछ शर्म लगी है। अगर आर्थर कहने में कोई असुविधा हो तो वह क़तई आपत्ति न करेंगे।

न्यूमन ने सोचा कि अलका से परिचय करा देने के लिए वह बाजोरिया कंपनी के मिस्टर सुरेन लाहिड़ी के कृतज्ञ है।

दफ़्तर से निकलकर आर्थर न्यूमन पार्क स्ट्रीट के फुटपाथ के स्टाल पर कोई अँग्रेज़ी किताब खोज रहे थे। उसी समय सुरेन लाहिड़ी से मुलाकात हो गयी। "गुड ईवनिंग, मिस्टर न्यूमन ! मुझे जरूर पहचान रहे होंगे।" मैं गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब की हैंडिकैप कमेटी में हूँ।"

प्रसन्न कंठ से आर्थर न्यूमन ने शुभ-संध्या लौटायी।

सुरेन लाहिड़ी बोले, "आपसे एक दिलचस्प पर्सनैलिटी का परिचय करा दूँ। मिस अलका, हमारी सिनेमा की, दुनिया की भावी नायिका।"

भारतीय नर्तकी की मनमोहिनी भंगिमा मे सुदेहिनी अलका ने नमस्कार किया। साथ ही होंठों पर हलकी मुसकान भी थी।

सुरेन लाहिड़ी बोले, "बड़ी प्रतिभा-संपन्न युवती हैं। भारतीय संगीत जानती हैं, नाच जानती हैं।"

"उहूँ," हलकी-सी आपत्ति की अलका ने।

"यह देखिये, कैसी शर्मीली हैं ! मेरे कथन पर आपत्ति प्रगट कर रही हैं," सुरेन लाहिड़ी ने मजाक किया।

"न, आपको अटपटा लगने का कोई कारण नहीं है। नयी पीढ़ी की भारतीय स्त्रियाँ सर्वगुण-सम्पन्न हो गयी है, यह बात मुझसे छुपी नहीं है," आर्थर न्यूमन ने अलका से कहा।

"आप उस दिन मिस्टर रे की पिक्चर के प्राइवेट शो मे गये थे," सुरेन लाहिड़ी दिल खोलकर हँसे। "मुझे नहीं मालूम था, अभी मिस अलका से सुना।"

"हाउ इंटरेस्टिंग !" आर्थर न्यूमन बोले।

"वहाँ अलका ने आपको देखा था। आज दूर से आपको देखते ही कहा, इनको उस दिन शो मे देखा। हा.. हा...मैंने साथ ही आपका परिचय करा दिया।"

"मैं बहुत सम्मानित हो रहा हूँ।" न्यूमन ने जवाब दिया था।

"हा-हा !" सुरेन लाहिड़ी का हँसना बंद नहीं हो रहा था। "समझता हूँ कि आपकी पर्सनैलिटी ही ऐसी है कि फ़िल्म-स्टार सम्मेलन में भी आपकी उपेक्षा नही की जा सकती। मन मे कहीं कोई चिह्न रह जाता है।"

आर्थर न्यूमन व्यापार के दायरे से बाहर के किसी व्यक्ति से परिचित होने से संतुष्ट हुए। कभी-कभी उन्हे लगने लगा था कि कलकत्ता के सब इन्सान शायद व्यवसायी और प्रत्येक औरत कंपनी अफ़सरों की पत्नी है।

"बिजनेस से बाहर की किसी महिला से परिचय होने से खुश हूँ," सरल मन से आर्थर न्यूमन ने अपने मनोभाव व्यक्त किये।

सुरेन लाहिड़ी बोले, "बड़ी शर्मीली लड़की है अलका। और यह लज्जा भारतीय लड़कियों का गहना होता है। गुप्त रूप से बता रहा हूँ, मोस्ट प्राबेब्ली रे की अगली तसवीर में भी इन्हें देख सकेंगे।"

"आपके सौभाग्य की कामना करता हूँ," आर्थर न्यूमन ने कहा था।

उस दिन सुरेन लाहिड़ी ने पार्क होटल की कॉफ़ी शॉप मे एक कप कॉफी पीने की बात कही थी। लेकिन आर्थर न्यूमन ने उस निमंत्रण को स्वीकार करने में संकोच प्रगट किया था।

इसके बाद एक दिन सवेरे-सवेरे आर्थर न्यूमन के घर का टेलीफोन बज उठा था। बिस्तर पर लेटे-लेटे खुद आर्थर ने ही फोन उठाया था।

उधर से भारतीय नारी-कंठ की सुललित झंकार थी। "सॉरी, आपको नींद से उठा दिया !"

"बिलकुल नहीं। जरा पहले ही तो लंडन से बातचीत की थी।"

"ओह ! हाउ लकी यू आर ! बिस्तर पर लेटे-लेटे कितने दूर देश से बातें की। अच्छा लंडन से फोन पर की गयी बातें सुनायी पड़ जाती हैं ?" अलका की सरलता आर्थर न्यूमन को छू गयी।

"उसी तरह जैसे आपकी बातें सुन रहा हूँ। कोई फ़र्क नही होता," न्यूमन ने जवाब दिया था।

कलकत्ता में अकाडेमी में इकाबेना की प्रदर्शनी हो रही है। मिस अलका जापानी ढंग से फूल सजाने की यह प्रदर्शनी दिखाने के लिए आर्थर को ले जाना चाहती थी। आर्थर न्यूमन जापानियों से विशेष खुश नहीं।

व्यापार और उद्योग में जापानी इस पीढी के अँग्रेजो के असतोष का कारण बने हुए हैं। फिर भी जब एक महिला ने खुद फोन किया है तो इनकार नही किया जा सकता है।

प्रदर्शनी के अन्त में आर्थर ने एक कप कॉफी पीने का आग्रह किया था। अपना अँग्रेजी ज्ञान सीमित होने पर अलका को शर्म आयी थी। लेकिन वह बहुत-सी जापानी बातें अच्छी तरह जानती थी। अँग्रेजी के बदले जापानी भाषा से उसका परिचय किस तरह हुआ, यह जिज्ञासा न्यूमन के मन मे जागी थी। लेकिन अजीब तरह से ग्रामबालिका की मुसकराहट से अलका उस प्रश्न को बचा गयी थी।

आर्थर ने बात-ही-बात मे कहा था, शनिवार को सवेरे के वक़्त छुट्टी के दिन दिल्ली रोड पकड वह रूपसी बँगला की हाट देखने जायेंगे। तभी अलका अनुरोध कर बैठी, "मुझे साथ में ले चलने मे आपको निश्चय ही असुविधा होगी?"

विदेशों में स्त्री-पुरुष के सहज सपर्क के अभ्यस्त आर्थर न्यूमन विशेष चिन्तित नही हुए। एक भारतीय महिला का सामान्य अनुरोध टालने में सुविधा भी हुई थी।

अलका ने कहा था, "मिस्टर न्यूमन, गाडी न रहने से दुनिया की कोई भी चीज़ नही देखी जा सकती। मैंने बहुत दिनों से गांव के बाज़ार, मदिर, पोखरे नही देखे है।"

आज सवेरे मेट्रो सिनेमा के सामने से सजी-धजी अलका को आर्थर न्यूमन ने ले लिया था। न्यूमन को अलका के घर जाने मे आपत्ति न थी, लेकिन अलका ने मेट्रो के आगे ही राह देखने का आग्रह किया था।

कई घटे बहुत अच्छे बीते। आर्थर न्यूमन ने अपनी पत्नी का रंगीन चित्र अलका को दिखाया था। अपने देश की बातें बतायी थीं।

आर्थर न्यूमन को कोई कष्ट न था। अलका की बातचीत भी उन्हें अच्छी लगी थी। यद्यपि एक चीज़ आर्थर न्यूमन ने लक्ष्य की थी कि भारतवर्ष के सबध मे तमाम सामान्य बातें भी स्थानीय भारतीयों को नही मालूम थीं। इस देश के सामाजिक और धार्मिक आचरण के सम्बन्ध मे भी

विभिन्न मत थे। यह अवश्य था कि इस पर आर्थर न्यूमन को आश्चर्य नही हुआ। शिवसाधन ने एक बार बताया था : "भारतवर्ष इतना विचित्र है, इतना विशाल और परस्पर विरोधी है कि साधारण प्रश्न का भी सीधा उत्तर देना अकसर कठिन हो जाता है।"

"जैसे शादी को ही ले लो," शिवसाधन ने कहा था, "भारतीय लोग कितनी शादियाँ करते हैं? इसका उत्तर क्या होगा? द्रौपदी के पाँच पति थे। एक कुलीन ब्राह्मण की बारह पत्नियाँ थी। और तो और, अभी भी क्या हालत है? कानून मे एक से अधिक विवाह दडनीय अपराध है। लेकिन करोडों भारतीय मुसलमान जब चाहें तीन पत्नियाँ कर सकते हैं और दस मिनट मे जिसे चाहें तलाक़ देकर फिर शादी कर सकते है।"

दिन-भर घूमकर आर्थर न्यूमन की गाडी अन्त मे मेट्रो सिनेमा पर फिर लौट आयी। पथ की साथिन की चमकती आँखें काले चश्मे के बुर्के से मुक्त होकर कुछ क्षणों के लिए बाहर निकल आयी और एक कृतज्ञतापूर्ण शान्त धन्यवाद जताकर फिर काले चश्मे के अधकार मे खो गयी।

अलका ने न्यूमन के हाथों में एक छोटा-सा फूल थमा दिया। "फूल ठाकुरपुर के आपके ही बाग से लेकर बड़ी सावधानी से आपके लिए छिपा रखा था," अलका ने कहा, "मैंने इसे सूँघा नही है। बिना सूँघे ही आपको दिया है।"

"एक मिनट," आर्थर न्यूमन ने कुछ सोचा। उसके बाद गाडी का बूट खोल कानोड़िया का भेजा मगर के नरम चमड़े का सुन्दर हैंडबैग निकाल लाये। "फूल की तुलना मे यह कुछ नही है। मामूली-सा उपहार है।"

"इसके तो बहुत दाम होगे।" अलका को लेडीज फैशन की चीज़ों के दाम मालूम थे।

"दाम के लिए परेशान होने का यह वक्त नही है, अलका! यह तो लेने और देने का समय है," यह कहकर उपहार को अलका के गर्म हाथों मे रख दिया।

डेनवर इंडिया के पूरे भुगतान वाले साधारण शेयरों के बहुत दिनों तक खर्राटे लेकर सोने के बाद दो दिनों के अन्दर ही फट-से डेढ़ रुपया चढ़ जाने से घनश्यामजी बहुत परेशान हो गये।

"इस साले कलकत्ता में कोई काम नहीं किया जा सकता," घनश्याम कानोड़िया ने रामनरेश गुप्ता से अपनी नाराजी प्रगट की। मार्केट में इक्कीस दिन तक डेनवर शेयरों की कोई माँग न थी। उसके बाद ज्यों ही घनश्यामजी थोड़े-से कुछ शेयर उठाने के लिए मैदान में उतरे कि मलेरिया बुखार की तरह डेनवर के दाम बढ़ने लगे।

किसी की दिलचस्पी से खरीददारी चल रही है, यह जानकर घनश्याम जी को बड़ी चोट लगी।

पतितपावन भी घनश्यामजी की बात सुनकर थोड़ा चिन्तित हुए थे। लेकिन आज सवेरे उन्होंने देखा कि डेनवर का बुखार उतर गया है। शेयर के दाम फिर उतार की ओर थे।

घनश्यामजी ने अपने दफ्तर में बैठे-बैठे ऐसी मुसकराहट फेंकी कि जैसे वह शेयर-चिकित्सा के बी० सी० राय हों।

ओह! काफ़ीपोसा के उसी धक्के से गोल्डन वैली नर्सिंगहोम में चित्त होकर लेटे रहने के समय से घनश्यामजी ने कैसी आश्चर्यजनक आत्मोन्नति की है! कौन कहेगा कि दोनों आदमी एक ही हैं? कौन कहेगा कि इसी आदमी ने जेल जाने के डर से रुआँसा होकर कहा था, "पेइन साब, थोड़ा कुछ बन्दोबस्त कीजिये।"

"डेनवर के दाम किस तरह कम हुए?" पतितपावन ने पूछा।

घनश्यामजी ने बताया, "दाम क्या कम हुए? इंजेक्शन देकर कम कराने पड़े।"

"इंजेक्शन!"

"हाँ, इंजेक्शन," घनश्यामजी हँसने लगे। "उसी के साथ मार्केट के सिर पर आइस बैग रखना पड़ा।" घनश्यामजी बहुत खुश थे।

घनश्यामजी ने कुछ छिपाया नहीं। बोले, "मार्केट को बेवकूफ़ बनाने के लिए डेनवर के अकाउंट्स डिपार्टमेंट के दो लोगों के नाम से कुछ शेयर बाजार में बेचे गये। दलाल तो जानते हैं कि अन्दर की बातें इन डिपार्टमेंटों

को ही पता रहती है। निश्चय ही रिपोर्ट अच्छी नही है। साथ ही प्रतिक्रिया शुरू। डेनवर के शेयरो को बेचने की बाढ़ आ गयी।"

"तो अकाउट्स डिपार्ट मे आपका अच्छा मेलजोल है?" पतितपावन बोले।

"मामूली-सा," घनश्यामजी ने सिर हिलाया। "बिजनेस माने ही मेलजोल। मेलजोल न रहने से बंगाल आयरन-सा सोना भी मिट्टी हो जाता है।"

चमचमाते दाँत निकालकर घनश्यामजी बोले, "भिभेकानन्द ने कहा है, जो काम करो अच्छी तरह से करो। भीतर से इंतजाम कर मैंने डेनवर के सारे शेयर-होल्डरो की लिस्ट मँगा ली है। बहुत-सी बंगाली विधवाओं के शेयर है उनमें। विधवाएँ यह लकड़ी रखकर क्या करेंगी? डेनवर के शेयर ढाई रुपये तक बढ़ सकते हैं। मैंने आदमी लगा दिये हैं, पूरे दाम पर विधवाओं के शेयर खरीदने के लिए।"

अपनी कार्य-क्षमता के प्रति पतितपावन की धारणा कुछ ऊँची थी। लेकिन आज घनश्यामजी की बातें सुनकर उनका घमड फुस हो गया। घनश्यामजी सचमुच कर्मयोगी है।

घनश्यामजी बोले, "यह डेनवर तो छोटी-सी कंपनी है। मात्र सत्तर लाख रुपयों के आर्डिनरी शेयर—मेरे तेल और दाल के बिजनेस मे इससे बहुत बेशी रुपये लगे हुए हैं, लेकिन खाते में सब-कुछ नही दिखा सकता।"

इसके बाद जल्दी-जल्दी बहुत-सी रकमो का लम्बा-चौड़ा हिसाब घनश्यामजी देने लगे। पतितपावन ने कहीं पढ़ा था कि हिसाब-किताब मे *घनश्यामजी का इस दुनिया मे कोई जोड़ नहीं। किसी बंगाली व्यापारी से* रोज़गार के हिसाब की बात करने पर सुनेंगे कि तीन महीने से खाता खतियाआ नहीं गया है। किसी अँग्रेज से पूछिये, वह फौरन चीफ अकाउटेंट को बुलाकर आध घटे में आपको हिसाब देने को कहेगा। किसी गुजराती से हिसाब पूछें तो वह जेब से छोटी वही निकालकर दो-एक रकम जोड़-घटा कर बिना किसी मुश्किल के हिसाब बता देगा। लेकिन इन घनश्यामजी से पूछिये। खाता-पत्तर कुछ नही निकलेगा, खटाखट सारा हिसाब जबानी बता देंगे।

घनश्यामजी बोले, "सुनिये, पतितजी ! मैं इस सप्ताह में बाज़ार से सात लाख रुपये के शेयर उठा लूंगा।"

"बाज़ार में शोर नहीं मच जायेगा ?"

पतितपावन को इस प्रचार से बड़ा डर लगता है। इस मामले में अंग्रेज़ों की नीति का कोई मुकाबला नहीं—जो करो, चुपके-चुपके करो। अमेरिकन बिलकुल उल्टे है—बैंक में डाका डालने से पहले डाकू लोग प्रेस-कान्फ्रेंस बुला सकते हैं। इस अतिशय प्रचार के लिए वह जाति बार-बार अच्छे खेलों मे हार जाती है।

घनश्यामजी बोले, "कतई चिंता न करें। ख़ुद मिस्टर न्यूमन भी न समझ पायेंगे कि हम शेयर ख़रीद रहे है। सभी छोटी-छोटी लाटों में, बहुतेरे चैरिटेबल नामो में लिये जा रहे हैं। ठीक समय पर मेरे पास चले आयेंगे।"

मुंह में आंवले का एक टुकड़ा डालकर घनश्यामजी बोले, "एक बहुत अच्छी खबर है। बहुत सारे नॉन-रेजीडेंट शेयर विलायत में हैं। मेरा भतीजा राधेश्याम स्विटज़रलैंड में बिज़नेस करता है। उसे लिस्ट भेज दी है। राधेश्याम की याद है न ? काफ़ीपोसा के समय उसे भी पकड़ने की कोशिश चल रही थी। आप ही एडवांस ख़बर लाये थे। इसके बाद एयर-पोर्ट पर दस हज़ार रुपया देकर राधेश्याम ठीक समय पर भाग गया था। अब राधेश्याम विदेश में बहुत अच्छा काम कर रहा है।"

आंवला चबाते-चबाते घनश्यामजी बोले, "राधेश्याम ठीक दस प्रतिशत शेयर विदेशी खाते मे खरीद लेगा।"

विनय-विगलित घनश्याम कानोड़िया ने अब पतितपावन की ओर देखा। "लेकिन मिस्टर पेइन, बाकी सब आप पर निर्भर करता है। छोटे न्यूमन साब के थोड़ा आपकी तरफ़ आ जाने से कोई दिक़्क़त नहीं रहेगी।"

"वह आदमी जरा सख़्त स्वभाव का है," पतितपावन ने अप्रिय समाचार दिया।

"आप जो हैं, सख़्त को नरम बना दीजिये," घनश्याम कानोड़िया ने प्रार्थना की।

"चिंता न करें। कुछ तो करूंगा ही," पतितपावन पाइन ने आश्वासन दिया। उन्होंने घनश्यामजी को समझाया, "अनादि काल से धर्म और न्याय

की कल जरा देर से ही हिलती आयी है।"

पानू दत्त बोले, "आओ ब्रदर ! धीरे-धीरे गूलर के फूल से भी अधिक दुर्लभ होते जा रहे हो। तुमसे तो मिलना ही मुश्किल हो गया है।"

पतितपावन ने हलकी मुसकराहट के साथ जवाब दिया, "मिलना तो एकमात्र यही होता है। बीच-बीच में लगता है कि मेरी चोटी यही बँधी हुई है।"

"पतू, तुम धीरे-धीरे बहुत ऊँचे स्तर पर उठे जा रहे हो। काली इम्पाला गाड़ी पर चढकर तुमको जाते देखा है।"

"वह क्या मेरी गाड़ी है, मुवक्किल की गाड़ी है," हलकी मुसकान के के साथ पतितपावन ने जवाब दिया। "लेकिन कह सकते हो कि मुवक्किल की गाडी मेरी गाड़ी जैसी। मुवक्किल जब पेंच में पडते हैं तो मर्सिडीज, इम्पाला लेकर मेरे लिए सड़क पर पाँच-पाँच घटे खड़े रहते हैं।"

पानू दत्त बोले, "तुमसे बातें करते-करते मुवक्किलों के बारे में मेरा ख़याल ही बदल गया। मुवक्किल यानी बहुत बड़ा मकान, बड़ी-बड़ी गाडियाँ। हाँ जी पतू, गरीब मुवक्किल भी तो होते हैं?"

"पता नहीं भाई, होते होगे। लेकिन वह सब लेकर दिमाग परेशान करने का समय कहाँ है? मैं तो पैसा देने वाले मुवक्किलों के मामलों को ही नही संभाल पाता हूँ।"

"वह तो है ही। गरीब लोग बहुत मुश्किल मे पड़ने पर मदिर जाते हैं, सीढियों पर हत्या के लिए बैठ जाते हैं। कोर्ट मे जाने की तो उन्हें राह ही नही मिलती है।" पानू दत्त सर खुजलाने लगे।

वकालत के लिए नही ?" पानू दत्त ने मजाक किया।

"वाह, खूब समझे," पतितपावन प्रसन्न हुए।

पानू दत्त बोले, "बचपन मे एक गलत सूचना से आदमी बन गया था। प्रभु यीशु के सेवक, वकील, डॉक्टर, उच्च स्तर की साधना मे मग्न रहते हैं—मानव-सेवा ही उनका स्वप्न रहता है। सो इतने दिनों यही नोट गिन-गिनकर और कलकत्ता शहर का व्यापार-स्यापार देखकर समझ लिया कि वह सब झूठ है। बड़े लोगो के बच्चो को अँग्रेज़ी सिखाने, उनको छींक आने पर चिकित्सा और उनकी तमाम इच्छाओं को पूरा करने के लिए थलसेना, वायुसेना और नौसेना के स्टाइल मे पादरी, डॉक्टर और वकीलों की सेवाएँ सदा मौजूद हैं।"

पतितपावन कमरे के एक कोने में रखा टेलीफोन उठा लाये। काउंसेल टुकाई मित्तिर से ज़रूरी बातें करनी थी। टुकाई मित्तिर का बहुत ज़ोर चल रहा था। 'फेरा' और 'एम० आर० टी० पी०' की कृपा से साँस लेने का वक्त न था। सलाह के लिए रात साढे ग्यारह बजे का समय देना चाहते थे। टुकाई मित्तिर सवेरे बाथरूम में लगाये समय को छोड़कर बाकी हर समय कमाई कर रहे थे।

पतितपावन ने टेलीफ़ोन रखा और देखा कि पानू इस बीच अँग्रेज़ी पेपरबैक में डूबे हुए हैं।

"मगर की तरह क्या निगले जा रहे हो, पानू ?" पतितपावन ने हलकी-सी लताड़ लगायी।

"इन सारी चीज़ों का मज़ा तो मिला नही, ब्रदर ! बहुत सीरियस मामला चल रहा है। इसी बीच एकदम अंतराल पड़ गया।"

पानू कुछ देर और किताब मे डूबे रहे।

"तुम तो ढूँढने पर भी नही मिलते, पानू !" पतितपावन अधीर हो उठे।

पानू किताब के पन्नों से नज़र हटाये बिना ही बोले, "यह रहस्य-रोमांच के उपन्यास तुम्हारे लिए पढ़ना उचित रहेगा पतू, वकालत की नयी दिशाएँ खुल जायेंगी।"

"सहसा इतनी दुर्घटनाएँ क्यों हो रही हैं, पानू ?" मामूली ढंग से

की कल जरा देर से ही हिलती आयी है।"

पानू दत्त बोले, "आओ ब्रदर ! धीरे-धीरे गूलर के फूल से भी अधिक दुर्लभ होते जा रहे हो। तुमसे तो मिलना ही मुश्किल हो गया है।"

पतितपावन ने हलकी मुसकराहट के साथ जवाब दिया, "मिलना तो एकमात्र यहीं होता है। बीच-बीच में लगता है कि मेरी चोटी यहीं बँधी हुई है।"

"पनू, तुम धीरे-धीरे बहुत ऊँचे स्तर पर उठे जा रहे हो। काली इम्पाला गाड़ी पर चढ़कर तुमको जाते देखा है।"

"वह क्या मेरी गाड़ी है, मुवक्किल की गाड़ी है," हलकी मुसकान के के साथ पतितपावन ने जवाब दिया। "लेकिन कह सकते हो कि मुवक्किल की गाड़ी मेरी गाड़ी जैसी। मुवक्किल जब पेंच में पड़ते हैं तो मर्सिडीज, इम्पाला लेकर मेरे लिए सड़क पर पाँच-पाँच घंटे खड़े रहते हैं।"

पानू दत्त बोले, "तुमसे बातें करते-करते मुवक्किलों के बारे में मेरा ख़याल ही बदल गया। मुवक्किल यानी बहुत बड़ा मकान, बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ। हाँ जी पनू, गरीब मुवक्किल भी तो होते हैं ?"

"पता नहीं भाई, होते होंगे। लेकिन वह सब लेकर दिमाग परेशान करने का समय कहाँ है ? मैं तो पैसा देने वाले मुवक्किलों के मामलों को ही नहीं संभाल पाता हूँ।"

"वह तो है ही। ग़रीब लोग बहुत मुश्किल में पड़ने पर मंदिर जाते हैं, सीढ़ियों पर हत्या के लिए बैठ जाते हैं। कोर्ट में जाने पर तो उन्हें राह ही नहीं मिलती है।" पानू दत्त सर खुजलाने लगे।

पतितपावन बोले, "देखो पानू, इन सब छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर दिमाग परेशान करने का हम लोगों के पास समय कहाँ है ? लेकिन गरीबों के वे वकील-उकील क्या करते हैं ? दो-चार वकील उनकी बातें करते हैं, लेकिन वे असल में राजनैतिक होते हैं।"

वकालत के लिए नही ?" पानू दत्त ने मज़ाक किया।

"वाह, खूब समझे," पतितपावन प्रसन्न हुए।

पानू दत्त बोले, "बचपन मे एक ग़लत सूचना से आदमी बन गया था। प्रभु यीशु के सेवक, वकील, डॉक्टर, उच्च स्तर की साधना में मग्न रहते हैं—मानव-सेवा ही उनका स्वप्न रहता है। सो इतने दिनो यही नोट गिन-गिनकर और कलकत्ता शहर का व्यापार-स्यापार देखकर समझ लिया कि वह सब झूठ है। बड़े लोगों के बच्चों को अँग्रेजी सिखाने, उनको छीक आने पर चिकित्सा और उनकी तमाम इच्छाओं को पूरा करने के लिए थलसेना, वायुसेना और नौसेना के स्टाइल मे पादरी, डॉक्टर और वकीलो की सेवाएँ सदा मौजूद हैं।"

पतितपावन कमरे के एक कोने मे रखा टेलीफोन उठा लाये। काउंसेल टुकाई मित्तिर से जरूरी बातें करनी थी। टुकाई मित्तिर का बहुत जोर चल रहा था। 'फेरा' और 'एम० आर० टी० पी०' की कृपा से साँस लेने का वक्त न था। सलाह के लिए रात साढे ग्यारह बजे का समय देना चाहते थे। टुकाई मित्तिर सवेरे बाथरूम मे लगाये समय को छोडकर बाकी हर समय कमाई कर रहे थे।

पतितपावन ने टेलीफोन रखा और देखा कि पानू इस बीच अँग्रेजी पेपरबैक में डूबे हुए है।

"मगर की तरह क्या निगले जा रहे हो, पानू ?" पतितपावन ने हलकी-सी लताड़ लगायी।

"इन सारी चीजो का मज़ा तो मिला नही, ब्रदर ! बहुत सीरियस मामला चल रहा है। इसी बीच एकदम अंतराल पड़ गया।"

पानू कुछ देर और किताब में डूबे रहे।

"तुम तो ढूँढने पर भी नही मिलते, पानू !" पतितपावन अधीर हो उठे।

पानू किताब के पन्नों से नजर हटाये बिना ही बोले, "यह रहस्य-रोमांच के उपन्यास तुम्हारे लिए पढना उचित रहेगा पतू, वकालत की नयी दिशाएँ खुल जायेंगी।"

"सहसा इतनी दुर्घटनाएँ क्यो हो रही है, पानू ?" मामूली ढग से

पतितपावन ने पूछा।

'जय बाबा अमेरिका ! सचमुच तुम्हारी कोई तुलना नहीं है।' पानू दत्त ने मन-ही-मन कहा।

"एक प्रसिद्ध अमरीकन कपनी का रिसर्च मैनेजर—मोटर का नया मॉडल लेकर उसने कैसे-कैसे गोपनीय काम किये। उसके पास से गोपनीय खबरो का सकेत पाने के लिए जापानी मोटरगाडी की एक कपनी ने मिस हाताहाती को भेजा है।" पानू दत्त प्रकट मे बोले।

"और यह हाताहाती कौन हैं?" पतितपावन ने पूछा।

"पासपोर्ट में लिखा है आर्टिस्ट। लेकिन वास्तव में कमाडो है।" पढते-पढते पानूदत्त बहुत उत्तेजित हो उठे।

"जापानी कमाडो जानते हो न? वह एक बडी खतरनाक चीज होती है। निर्धारित काम के लिए यह लोग जान तक देने को प्रतिज्ञाबद्ध रहते है।"

एक मिनट के लिए पानू दत्त ने किताब से चेहरा ऊपर किया। "ओह, कितना उत्तेजनापूर्ण दृश्य है। अमरीकन साहब के साथ मिस हाताहाती का खूब मेल हो गया है। हॉटेल हिल्टन के डबल बेड कमरे में दोनों बहुत पास आ गये है। लेकिन साहब का सदेह अभी भी दूर नही हुआ है। चूमना शुरू करने से पहले साहब सर्च करता है कि कमरे मे कही कोई टेप आदि तो नही।"

पानूदत्त और आगे पढने लगा। उसके बाद धारावाहिक विवरण शुरू हुआ। "ओह पतू! साहब ने बिस्तर, तकिया, पलंग के नीचे, बाथरूम, मेज की दराजें—सब उलट-पलटकर देखा। कुछ भी नही मिला। वन मिनिट...," फिर चुप होकर पानू दत्त जुगाली करने लगे।

"अब साहब ने अनुमति लेकर मिस हाताहाती की सर्च शुरू की। ओह, कैसा उत्तेजक विवरण है। सिर के बाल, कानो के बुंदे, गले का लॉकेट—कुछ बाकी नही रहा। अब साहब ने मिस हाताहाती को निरावरण कर पूरी तलाशी ली, लेकिन कुछ न मिला।"

"हा-हा...!" पानू दत्त जोर-जोर से हँसने लगे। "अमेरिकन साहब, आप जापानी बुद्धि के आगे हार गये।"

"क्यों, क्या हुआ ? पानू इतने उत्तेजित क्यों हो ?" पतितपावन समझ न सके।

"उत्तेजित न होऊँ, पतू ? प्लास्टिक सर्जरी से अपने एक स्तन में यंत्र रखकर मिस हाताहाती अपनी मुहिम पर आयी थी। किसकी सामर्थ्य थी कि उसे पकड़ता ? ओह, कमाल का आइडिया !"

पानू दत्त ने किताब का पन्ना मोड़ उसे रख दिया। "कहाँ तुम्हारा 'फ़ेरा', 'एम० आर० टी० पी०', कंपनी कानून और कहाँ यह सारी चीज़ें ! पतू, ज़िंदगी को एकदम वरबाद मत करो। थोड़ा-बहुत मज़ा भी लो।"

पतितपावन को अचानक प्रकाश की एक झलक दिखायी पड़ी। विदेशी परिवेश में मिस हाताहाती का मामला बुरा नहीं लग रहा था।

पतितपावन उठ खड़े हुए।

"क्या हुआ ? तुम्हारी अक़्ल ठिकाने नहीं है क्या ? अभी आये, अभी चले जा रहे हो ?" पानू दत्त ने टोका। "मिस हाताहाती का मामला ख़राब लगा ? अच्छा भाई, यह सब रहस्य-रोमाच के प्रकरण तुम्हारे आगे नहीं उठाऊँगा।"

"नहीं, नहीं।" पतितपावन धीरे से हँसे। "तुम्हारी उन मिस हाता-हाती का अन्त मे क्या हुआ ?"

"अभी तक पता नहीं, पतू ! लेकिन फ़िक्र नहीं, कुछ तो होगा ही। उस स्वर्णकलश का रहस्य...स्वर्णकलश जानते हो, पतू ? तुम तो बँगला कविता के आस-पास से भी कभी नहीं निकले...।"

"सोने की कलसी बीच मे कहाँ से घसीट लाये हो ? वह सब तो गुप्त-धन की कहानियों में रहता है," पतितपावन बोले। उनका बँगला ज्ञान सचमुच सीमित था।

"ओह, पतू ! धन, किन्तु गुप्त नहीं। अपनी छाती के स्वर्णकलश मे ही तो मिस हाताहाती इलेक्ट्रॉनिक रहस्य छिपाये हुए थी। आख़िरी पन्ने पर पहुँचने पर मामला ज़रूर किसी अमेरिकन मेटल डिटेक्टर से पकड़ा जायेगा।"

"मैं फिर आऊँगा," पतितपावन यह कहकर पानू दत्त के पास से उठ-कर सीधे अपने दफ़्तर लौट आये।

इस समय दफ़्तर में किसी के रहने की बात न थी। मिस सैमुअल कब की चली गयी। आजकल शाम होते ही भद्रमहिला कैसी परेशान रहती है! प्राय उम्र है, कहीं शायद कोई खड़ा रहता हो।

दफ्तर का मालिक बेयरा त्रिनाथ घरेलू काम से छुट्टी लेकर जमीन-जायदाद का मामला निपटाने के लिए देश गया था।

पतितपावन चुपचाप अकेले बैठे हैं।

दो-एक दिन पतितपावन ने सारी रात इसी कुर्सी पर काटी हैं। उस बार जब गाड़ोदिया कंपनी के कारखाने की कस्टम्स अधिनियम में तलाशी हुई थी। पता था कि कस्टम्स को कुछ न मिलेगा, क्योंकि मिस्टर गाड़ोदिया ने पहले से खबर पाकर सारे कागज और सामान वक्त रहते चुपचाप हटा दिये थे। फिर भी मिस्टर गाड़ोदिया ने नहीं माने। बोले कि तलाशी खतम होने तक दफ्तर में ही रहें। जो फ़ीस होगी, दे दूंगा।

परिश्रम की तुलना में यह फ़ीस कितनी है? फिर भी सेवा के रूप में तकलीफ़ उठानी पड़ती है। 'मुसीबत में पड़ा मुवक्किल सोने की खान की तरह होता है,' यह कथन टुकाई मित्तिर का है।

सोने की खान का ध्यान आते ही पानू से सुना स्वर्ण संबंधित वह खराब शब्द फिर पतितपावन को याद आ गया। मिस हालाहाती के स्वर्ण-कलश से पतितपावन जैसे गंभीर और व्यस्त आदमी के चेहरे पर भी दबी हँसी आ गयी थी।

मिस हालाहाती कैसी लगती होगी, पतितपावन ने अपने मानस-पटल पर एक बार वह दृश्य अंकित करने का प्रयत्न किया। मिस हालाहाती की बात पतितपावन को याद आ रही है। अट्ठाईस बरस के युवक मिस्टर हरतन का चेहरा बहुत ही सरल था। बात-बात में मिस्टर हरतन कैसा सुन्दर हँसते थे। भारत में सामरिक कार्यों के लिए आये थे। आकर एक लड़की के मामले में बहुत उलझ गये। मिस्टर पाइन को छुप-छुपकर सब-कुछ सभालना पड़ा था।

मिस्टर हरतन की बात उठते ही जमालउद्दीन दूर न रह सका। वह भी एक कैरेक्टर था।

पतितपावन को याद आया कि करीब एक महीना पहले ही जमाल-

उद्दीन उनसे मिलने आया था। उसे बहुत देर बिठाये रखने के बाद पतित-पावन ने कहला दिया था कि आज काम मे बुरी तरह से फँसे है, बाद में किसी दिन मुलाकात हो सकेगी।

काम में फँसे होने की बात झूठ न थी। उस दिन कमरे में बैठकर डेविडसन का बहुत ही गोपनीय काम करना था। पर्सोनल मैनेजर मल्लिक खुद नौकरी से हटाने के एक मामले को लेकर आये थे। केस थोडा दूसरी तरह का था। भवतारण नाम का एक मेहतर की-होल में से औरतो के टॉयलेट-रूम मे झांकने का गन्दा काम करता था। एक दिन पकड़ा गया। जाँच करने पर भवतारण दोषी पाया गया। उसे 'प्रेमपत्र' थमाने से पहले मल्लिक पतितपावन की सलाह लेने आये थे। और किसी के इस तरह पकड़े जाने पर पतितपावन तुरंत हरी झंडी दिखा देते। कार्मिक मैनेजरों की इच्छाओ के विरुद्ध, बहुत ही लाचार हुए बिना, वह नही जाना चाहते थे।

लेकिन पतितपावन को याद है कि उस केस का अहम पहलू था भवतारण स्वीपर। जान-बूझकर झांकने पर भी बदमाश राजनैतिक वकील लेबर-कोर्ट में कहेंगे कि ड्यूटी पर झांका था। इसलिए कपनी की जाँच के आधार पर वह प्वायट शुरू मे ही मार खा जायेगा। उससे स्वीकार कराना होगा कि उसने जान-बूझकर गलती की है।

क़ानूनी बारीकी का मामला है। कही बाद मे हिन्दुस्तान डेविडसन मार न खा जाये, यही देखने के लिए ही तो पतितपावन है। इसीलिए बहुत वक़्त लग गया था। जमालउद्दीन से मिस सैमुअल ने कह दिया कि पता नही कितनी देर लगे!

सौभाग्य से उसका पता लिखी स्लिप मौजूद थी। उसी स्लिप को पतितपावन ने निकाला। मुलाकातियो के सभी कार्ड और स्लिपें पतित-पावन संभालकर रखते थे।

जमालउद्दीन एक दूकान का टेलीफ़ोन नबर भी दे गया था। कह गया था कि जमाल का नाम लेते ही बुला देंगे। पतितपावन ने टेलीफ़ोन उठा लिया।

आध घंटे बाद पतितपावन के दफ़्तर में जमालउद्दीन हाज़िर हुआ।

जमालउद्दीन ने पतितपावन को नमस्कार किया।

"मुझे अफ़सोस है जमाल, कि उस दिन आपको समय न दे सका। आज ज़रा वक़्त पाकर बुला भेजा है।"

"मैंने तो सोचा था सर, आप बुलायेंगे ही नहीं।"

"तो आपको क्या ज़रूरत थी?"

"सर, उन्हीं हरतन साहब का मामला है। ग़रीबों का बड़ा नुकसान कर दिया। पाँच सौ रुपये आप दिला दें न, सर! जापानी साहबों के लिए पाँच सौ रुपये क्या हैं? लड़की तकलीफ़ में है। साहब ने बहुत बार मौज की है।"

"उसके लिए इस तरह से विदेशी आदमी को मुसीबत में डालोगे?"

"अल्लाह कसम, यह नहीं पता था कि आपका-सा वकील उनके पीछे है। नहीं तो उस रास्ते जाता ही नहीं।"

जमालउद्दीन पश्चात्ताप में सर खुजलाने लगे। पतितपावन बोले, "कुछ लिखना-पढ़ना आता है? इस तरह क्यों ज़िन्दगी बरबाद कर रहे हो?"

"आप लोग तो यह कहकर बच गये। मुसलमानों को नौकरी कहाँ है? अनुसूचित जाति, जनजाति, हिन्दू रिफ्यूजी, हिन्दुस्तानी, बंगाली—हिन्दू को नौकरी मिलने के बाद ही तो हमारा नम्बर आता है?"

पतितपावन ने चेहरा ऊपर उठाकर जमाल की ओर देखा। जमाल-उद्दीन बोलता जा रहा था, "बीड़ी की दूकानें, दर्ज़ी की दूकानें, बकरों की दूकानें कलकत्ता में और कितनी होंगी, बताइये? मेरे छोटे भाई ने तो लिलुआ में मिठाई की दूकान भी की थी। चली नहीं। मुसलमान की दूकान की मिठाई तो आप ख़रीदेंगे नहीं।"

"क्या नाम था लड़की का? जसमीन या अनवरी?"

"अनवरी।"

पतितपावन ने लड़की को देखा नहीं था। लेकिन लिखा-पढ़ी के दौरान कायदे से परिचय हो गया था। मिस्टर हरतन ने पतितपावन को इस केस की पाँच हज़ार रुपये फीस दी थी।

"सर, ज्यादा नही, पांच सौ रुपयों का इंतज़ाम कर दीजिये। अनवरी तकलीफ़ में है," जमालउद्दीन कातर भाव से बोला।

"अनवरी क्या कर रही है ?" पतितपावन ने शान्त भाव से सवाल किया।

जमालउद्दीन सर खुजला रहा था। "जानते तो है, सर ! वही छोटा-मोटा काम।" यह भाषा भी अजीब है। मामूली-सा, छोटा-मोटा काम ! समझने मे असुविधा नही होती कि अनवरी क्या कर रही है।

पतितपावन का मन अशांत हो उठा। लेकिन उन्होंने अपने को सभाला। सीधे-सीधे ऐसी किसी गंदगी में पतितपावन नही पड़ेंगे।

"कुछ सोच रहे हैं, सर ?" जमालउद्दीन सर खुजला रहा था।

"मिस्टर गुप्ता कल आपसे मिलेंगे।"

"आज तक किसी मर्द ने अनवरी को नापसन्द नही किया, सर ! मैं खुद अनवरी को लेकर गुप्ताजी से मुलाकात कर सकता हूँ, पता दे दीजिये," जमालउद्दीन ने जोश से कहा।

पतितपावन पाइन पता बताने वाले इन्सान नही थे। रामनरेश का पूरा नाम भी उन्होने नही बताया। गुप्ता तो कलकत्ता में लाखों हैं।

जेब से एक सौ रुपये का नोट और दराज से वाउचर फ़ार्म निकालकर पतितपावन बोले, "दस्तखत कर दीजिये।"

अकाउंट मिस्टर हरतन—लिखकर पतितपावन ने दस्तख़त किया कागज दराज़ में रख दिया। मिस हाताहाती का केस पूरी तफसील से जानने की उत्सुकता पतितपावन को होने लगी थी। अमरीकी लेखक लोग बनावटी कहानियाँ नही लिखते। जीवन में जो होता है, उसी को गल्प के रूप में रख देते हैं।

पानू ने उस दिन कहा था : "दुनिया बहुत जटिल हो गयी है, पतू ! चोर साहू बनकर, वेश्या सती बनकर इस कलिकाल में घूम रहे हैं। कहानी के रूप में अखबार के पन्नो पर घटना घटती है। समझे पतू, क्या मैं यों ही कहानी के पीछे पागल हूँ ? ऐसे दिन आ रहे हैं, जब उपन्यासो के अलावा तुमको सच्ची घटनाएँ तलाश करने पर भी और कही नही मिलेंगी। कहानी के अलावा दुनिया में सब-कुछ फ़िक्शन हो जाने का खतरा

दिखायी दे रहा है।"

जमालउद्दीन विदा हुआ। अब पतितपावन रामनरेश गुप्ता का टेलीफोन नम्बर डायल करने लगे।

जमालउद्दीन और अनवरी के बारे में रामनरेश के साथ बहुतेरी गोपनीय बातें हुई।

आर्थर न्यूमन के आगे मेज के काले शीशे पर दो निमन्त्रण कार्ड पड़े है। कॉकटेल एट सुतानटी क्लब। टु मीट मिस्टर हैरी फ्रैंक श्री मोहनलाल जाजोदिया रिक्वेस्ट द प्लेजर ऑफ द कम्पनी ऑफ़ मिस्टर आर्थर न्यूमन...।

यह हैरी फ्रैंक कौन है? यह मोहनलाल ही कौन है? आर्थर न्यूमन की इस कॉकटेल उपस्थिति से उनका प्लेजर ही क्या है? तीस वरस अपने देश मे जितनी कॉकटेल पार्टियों में आर्थर निमंत्रित न हुए, उससे चौगुने निमत्रण भारत मे कुछ सप्ताहों में ही उन्हे मिल गये। कलकत्ता पहले 'महलो का शहर' था। उसके बाद जवाहरलाल नेहरू ने इसका नामकरण किया 'जुलूसों का शहर'। अब निश्चित रूप से कहा जा सकता है, 'कॉकटेलों का शहर'। एकमात्र इस देश मे ही शायद बिलकुल अपरिचित आदमी को डिनर और कॉकटेल पर निमंत्रण करने की अभद्रता प्रचलित है। निमत्रण-कर्ता को खुद पता नही होता कि किस-किस को बुलाया गया है! ये सारे काम दफ़्तर के निम्नपदस्थ अफसर ही निबटा देते है। निमत्रण और स्वायत्त की पवित्रता व्यावसायिक भारत में नष्ट हो गयी है। आर्थर न्यूमन ने कुछ दिन पहले यही बातें पिता को लिखकर भेजी थी।

यह जाजोदिया कौन है? जानने के लिए ऑफ़िस के लोगों से पूछना पड़ा था। उसके बाद आर्थर को जब यह पता चला कि शरीफ़ आदमी ट्रक-लॉरी का रोजगार करते है और डेनवर की लिस्ट में उनका नाम है तो खेद का पत्र भेज दिया। मिस्टर आर्थर न्यूमन ने मिस्टर मोहन-लाल जाजोदिया को कॉकटेल-निमत्रण की कृपा के लिए असंख्य धन्यवाद

दिये थे और गहरे दुख के साथ कहा था कि पूर्व निर्धारित अपायंटमेंट के कारण उनका आना सभव न हो सकेगा।

दूसरे निमन्त्रण-पत्र पर भी आर्थर न्यूमन की नजर पडी। काउलून बैंकिंग कार्पोरेशन के कलकत्ता मैनेजर जेरी हाजेस ने रात के खाने पर आर्थर न्यूमन को निमन्त्रित किया है। इसका मतलब कि रात के बारह बजे तक ताश खेलना और सवेरे तीन बजे तक शराब और खाना और जेरी की अधेड़ औरत का अंतहीन लेक्चर सहन करना। जेरी हाजेस की पार्टी मे कुछ श्वेतागों के अलावा कोई न रहेगा और वहाँ रेसकोर्स, ताश और व्हिस्की के अलावा किसी और विषय पर चर्चा नही होगी। बीच-बीच में जेरी हाजेस बैंक फाइनेंस के बारे मे दो-चार सवाल करेंगे और व्हिस्की के नशे में आर्थर न्यूमन जो जवाब देंगे, वह दूसरे दिन सवेरे अक्षरश. काउलून बैंक के दक्षिण-पूर्वी प्रादेशिक कार्यालय में चला जायेगा।

सुन्दर-सुन्दर तगडे श्वेताग पुरुषो की अधेड़ जीवन-सगिनियाँ जेरी हाजेस डिनर के अलावा आर्थर न्यूमन को कही और देखने को नही मिलीं। कुछ ही दिन पहले इसी तरह की पार्टी में न्यूमन उपस्थित थे। किन्तु एक सप्ताह बाद ही फिर से इनकी शक्ल देखने की तबीयत न थी।

इसीलिए आर्थर ने यहाँ भी एक चिट्ठी हाथ से लिखकर भेज दी : माई डियर जेरी, तुम्हारी और आगाथा की बड़ी उदारता है। रात के खाने पर आ सकता तो कैसा अच्छा रहता। लेकिन बहुत ही बुरी तरह से फँसा हुआ हूँ, समझ सकते है। माफ़ करें और आगे आने वाले सुअवसर से वचित न करें। अफसोस न करना। प्यार। इति—आर्थर।

जेरी को कतई अफसोस न होगा, आर्थर खूब जानता था। बैंक-मैनेजरो को कभी दुख नही होता। फिर अँग्रेजी भाषा ही ऐसी है कि अफसोस की बात हर एक को लिखनी पडती है—किसी को टाइप कराकर बिना दस्तखत के, किसी को अपने हाथ से छोटे प्राइवेट लेटर-हैड पर। इस तरह की स्टेशनरी दफ़्तर मे ज़रूरत के हिसाब से छापी जाती है।

यह चिट्ठी न लिखकर आज शाम साढे छह से रात साढे तीन तक आर्थर न्यूमन पूरे तौर पर ध्वस्त रह सकता था। लेकिन उस थकाने वाले आनन्द के लिए वहाँ जाने की आर्थर न्यूमन की जरा भी इच्छा न हुई।

पाँच बजे के करीब आर्थर न्यूमन घर लौट आया। स्नान से निवटकर पत्नी को चिट्ठी लिखी। वही पथेर पाँचालि, वही अपराजिता, वही जलसाघर। और तो और, महानगरों के भारत को कलकत्ता शहर मे इतने दिनो तक रहने पर भी न खोजा जा सका। यह फ़िनडियन इंडिया गचपच है—जो फ़ॉरेन भी नही है, इंडियन भी नही।

फिर सिगरेट सुलगाकर आर्थर एक किताब पढने की सोच रहे थे। तभी बेडरूम का फ़ोन बजा।

"हलो अलका ! गुड ईवनिंग !" उस दिन की मुलाकात के बाद अलका की कोई खबर ही नही थी।

"भूल गये ?" अलका ने औरतों की तरह शिकायत की।

"भूलता क्यों ? आपका दिया फूल तीन दिन तक रखा था।"

"उसके बाद भूल गये," अलका ने हलका-सा आक्रमण किया।

"लगता है कि आप रे की स्क्रिप्ट से डायलाग बोल रही है। मेरे पास तो आपका फ़ोन नम्बर नही है। किस तरह पता मालूम करता ?" आर्थर न्यूमन ने आत्मरक्षा का प्रयत्न किया।

"इस समय आप क्या कर रहे है ?" मधुरहासिनी अलका ने जानना चाहा।

"अभी तो कुछ नही। वैसे दुनिया को यही पता है कि मैं कुछ कामों मे व्यस्त रहूँगा।" आर्थर न्यूमन ने मजाक किया।

"तब फिर न्यू एम्पायर। आज ही यह तसवीर दिखाना चाहती हूँ। बिलकुल नयी फिल्म है।"

बहुत दिनों से किसी गोरी चमडी वाले ने इस कलकत्ता शहर में बिना सूचना के अचानक इस तरह का आमत्रण स्वीकार नही किया। लेकिन आर्थर न्यूमन को इस तरह की बातें ही पसन्द थी।

न्यूमन जब सिनेमा-हॉल मे पहुँचे तो अदर की रोशनियाँ बुझ गयी थीं और विज्ञापन की तसवीरें शुरू हो गयी थी।

उसके बाद हिन्दी फिल्म शुरू हुई। वास्तव मे यह फिल्म अजीब जानकारी से भरी हुई थी। जागते हुए स्वप्न देखने के लिए यह तसवीर

बम्बई में बनी थी। घुटनों तक कपड़ा लपेटे बड़े-बड़े नितंबों वाली नायिका ने सूटधारी बड़े-से नायक की मर्सिडीज़ के आगे नाचना शुरू कर दिया।

दबी आवाज़ मे आर्थर ने अपनी साथिन से पूछा, "यह देश कहाँ है ?"

अलका ने फुसफुसाकर जवाब दिया, "पुरुषपुर।"

उसके बाद बादल, वर्षा, धूप, नृत्यगीत, समुद्र के किनारे युवतियो की जलक्रीडा, युद्ध, प्रेम, प्रतिशोध, मिलन, पुर्नमिलन, वियोग—कुछ भी बाक़ी न रहा।

आर्थर न्यूमन को लगा कि उसकी खूब सजी-धजी साथिन बड़े मनोयोग से एक के बाद एक दृश्य का आनन्द ले रही है। उसे शायद ध्यान ही नही कि वह कहाँ है, क्योंकि अचानक एक गर्म कोमल हाथ आर्थर के हाथ के ऊपर आ गया।

सौजन्यवश अपना हाथ हटा लेना उचित था। लेकिन इस देश की रीति-नीति का अभी भी उन्हें पता न था। इसीलिए आर्थर न्यूमन साथिन के हाथ का बोझ लेकर पत्थर की तरह स्थिर थे।

एक नाटकीय दृश्य के परिवर्तन के बाद जब तार-सप्तक मे विलेन का गाना शुरू हुआ तो मानो होश में आकर अलका ने अपना हाथ हटाकर दबी आवाज़ में कहा, "ओह, आई ऐम सॉरी !"

"अफ़सोस की कोई बात नही," अलका के संकोच से हाथ छुड़ाने पर आर्थर न्यूमन बोले, "इट वाज़ ऑल राइट।"

शरारत से अपना हाथ फिर एक बार आर्थर के हाथ पर रखकर अलका बोली, "थैंक यू ! थैंक यू !"

तभी रजतपट पर फिर बादल बरसने शुरू हो गये। बलवान विलेन की दुष्ट आँखें अब नायिका के उठे हुए वक्षों पर लगी थी।

आर्थर न्यूमन ने अचानक अलका का कंठस्वर सुना, "यू नॉटी मैन !"

झट-से आर्थर ने अपनी साथिन की कोमल हथेली को हटा दिया।

अलका ने कहा, "आपसे नही, उस पाजी सुखदेव सिंह से कह रही हूँ।" हटे हुए हाथ को अलका ने फिर यथास्थान पर पहुँचा दिया। किसी की निगाह उनकी तरफ़ नही थी।

सिनेमा-हॉल से निकलकर आर्थर अपनी गाडी में तेज़ी से आ बैठे

आज वह और कोई बात न सुनेंगे, अलका को अवश्य ही उसके घर पहुँचा देंगे।

लेकिन अलका को कॉफ़ी की प्यास लगी थी।

आर्थर किसी रेस्तराँ में जाने की बात सोच रहे थे। लेकिन अलका कह बैठी, "क्या आपके घर कॉफी नहीं है?"

"अपने देश में मैं बहुत अच्छी कॉफी बनाता था," न्यूमन ने बताया।

"देखा जाये कि आप कहीं झूठा दावा तो नहीं कर रहे," कहकर अलका खिलखिलाकर हँसने लगी। अभी कुल सवा आठ बजे थे।

आर्थर न्यूमन का नौकर बहुत पहले ही चला गया था। सिनेमा या थियेटर जाते समय आर्थर उसे छुट्टी दे जाते थे। थियेटर से निकलकर किसके साथ कहाँ बैठेंगे, कब तक ड्रिंक करेंगे, इसका कोई ठिकाना नहीं। एक दिन रात के एक बजे लौटकर देखते हैं कि नौकर उस समय भी जागा हुआ बैठा है। न्यूमन बहुत लज्जित हुए। न्यूमन ने सुना था कि यहाँ के बावर्ची, बॉय, खानसामे इसी तरह साहबों की सेवा करने के अभ्यस्त हैं। गाड़ी के शोफर इसी तरह सारी रात सड़क पर प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कब पार्टी खत्म हो और साहब निकलें। लेकिन आर्थर न्यूमन यह सब नहीं करना चाहते। दो दिनों के बाद ही स्वदेश लौटना होगा। कुछ महीनों के सुलतान बनकर जीवन-भर के लिए आदत बिगाड़ना ठीक नहीं।

अलका को मुलायम सोफे पर बिठाकर, कॉफ़ी का पानी हीटर पर रख आर्थर न्यूमन ने सौजन्यवश पूछ लिया, "और कुछ? यहाँ दूसरे ड्रिंक्स भी हैं।"

अलका बोली, "थोड़ी-सी जिन। तब तक कॉफी का पानी भी गरम हो जायेगा।"

वैसी कोई योजना थी। कहाँ गया गरम पानी? शराब के रंगीन नशे मे अलका ने तैरना शुरू कर दिया। स्काच व्हिस्की लेकर आर्थर न्यूमन भी साथ दे रहे थे।

अलका को शराब की विशेष आदत नहीं है और इसीलिए आसानी से ही मामूली-सी टिप्सी हो गयी है—आर्थर यह समझ गये।

अलका बोली, "मुझे बड़ी भूख लग रही है, आर्थर !"

आर्थर ने हॉट-बाक्स से खाना निकाल हाज़िर किया। आर्थर को अपने हाथों से अलका ने थोड़ा-थोडा खाना खिलाया।

"अलका, तुम बहुत स्नेहमयी हो। इस तरह कभी किसी ने मेरे मुँह में खाना नहीं दिया।" अनभिज्ञ आर्थर न्यूमन ने इस अस्वाभाविक स्नेह की भारतीय अभिव्यक्ति का उपभोग कभी नही किया था।

अलका ने अचानक अपनी साड़ी के आँचल से आर्थर का मुंह पोंछ दिया। "हम जिन्हे चाहते हैं, उनको खिलाना हमें अच्छा लगता है, मिस्टर न्यूमन !"

अनादि-अनन्तकाल के असीम रहस्यों से भरे भारतवर्ष के स्त्री-समाज का सामान्य-सा रहस्य मानो अब न्यूमन की आँखों के आगे उद्घाटित हुआ था।

अर्द्धजागृत अवस्था में एक अबाधित मोहजाल मे पश्चिम के आगन्तुक आर्थर न्यूमन धीरे-धीरे फँसते गये।

साढे पाँच गज कपड़े से लिपटा अनाविष्कृत देह-द्वीप-पुंज न्यूमन की विस्मित सत्ता के आगे नयी तरह से आविष्कृत होने के लिए ही मानो एक रहस्यमयी रात मे चचल हो उठा।

आर्थर के मुंह मे अलका ने फिर ग्रास देना चाहा। न, वह अब न खायेंगे। लेकिन हाथ उठाकर अलका को रोकने पर मुसीबत खडी हो गयी। अचानक उसकी सुडौल छातियों पर से आँचल खिसककर दोनों स्वर्णकलशों का साम्राज्य उन्मोचित हुआ।

आर्थर न्यूमन ने लक्ष्य किया कि कलकता की साड़ी पहनने वाली स्त्रियो का मुख्य काम है, शिथिल आँचल को बीच-बीच मे अपनी जगह से सरकाकर और फिर वक्षो पर लाकर उन्हें पुरुष-दृष्टि से बचाना।

आज आर्थर ने यह क्या किया? उससे संघर्ष के फलस्वरूप साथिन अलका का आँचल स्थानभ्रष्ट और स्खलित हुआ। वक्ष-सम्पदा से संपन्न अलका उनकी ओर एकटक देखते हुए नीरव भाषा मे शायद उनकी भर्त्सना कर रही थी, 'आर्थर, तुमने यह क्या किया?'

थोड़े सुराक्रान्त आर्थर ने कहना चाहा, 'मैं बहुत दुखित हूँ। असाव-

धानी से, तुमको रोकने में यह ग़लत काम हो गया।"

आर्थर न्यूमन ने माफ़ी चाही। उन्होंने महसूस किया कि जो चीज अपनी जगह से उनके कारण हट गयी है, उसे वापस उसी जगह रखना उनकी ज़िम्मेदारी है।

आर्थर ज़रा पास आ गये। अलका की नाभि के पास इकट्ठा हो आये कपड़े को मुट्ठी मे लेकर उसे उसकी जगह रखने की व्यर्थ कोशिश की।

अब अलका ने बनावटी गुस्से से आँखें लाल कर ली।

डरते हुए आर्थर न्यूमन ने देखा कि वह आँचल को यथास्थान नही लौटा सके हैं। चिकने और कोमल कपड़े ने अलका के पर्वत-शिखरों से गिरकर ब्लाउज़ की निम्न सीमा में आत्मसमर्पण कर दिया है।

अलका कुछ न बोली। लेकिन आर्थर को लगा कि उसे फिर कोशिश करनी चाहिए। साड़ी के छोर को उसकी जगह फिर से रखे बिना आर्थर को क्षमा करने का शायद सवाल ही नही उठता।

आर्थर ने और पास जाकर दोनों हाथों से नाभिदेश से आँचल को बटोरने और ऊपर उठाने का प्रयत्न किया और ठीक उसी समय अलका के अचानक आगे की ओर झुक पड़ने से इलास्टिक फ़ीतों में कैद उसके कोमल अंगों से उसका अप्रत्याशित गरम सम्पर्क हो गया।

आर्थर न्यूमन को लग रहा था कि एक आवारा आदिम मानव उसे पूरी तरह खाये जा रहा है।

आर्थर न्यूमन ने कातर भाव से कहना चाहा, 'अलका, तुम मुझे बचाओ। तुम मेरे सामने बिजली की तेजी से उठकर खड़ी हो जाओ और अपने को संभाल लो। मुझे झिड़को, मिस्टर न्यूमन यह क्या कर रहे हैं? छि:, मैं आपकी अतिथि हूँ न? सिनेमा देखकर घर लौटते समय एक कप कॉफ़ी के लिए साथ आयी थी।'

लेकिन किसी ने आर्थर के कंठ को अशक्त कर दिया था। ब्रेक-फ़ेल गाड़ी की तरह वह सर्वनाशी अंधकार की ओर बढ़े जा रहे थे।

कातर न्यूमन के मन में आशा थी कि अलका अवसर के अनुसार उचित प्रतिवाद करेगी। किन्तु अलका उनकी ओर इस तरह क्यों देख रही है? वह क्या यह देखना चाहती है कि आर्थर न्यूमन नीचता के इस अवसर पर

कहाँ तक नीचे गिरने की हिम्मत कर सकते हैं? न, अलका भी हिन्दी सिनेमा और जिन के उलझाने वाले नशे मे पागल होकर उसे बढ़ावा दे रही है।

आर्थर न्यूमन ने देखा कि अलका का आँचल अभी भी कमर के पास एक मस्त भक्त की तरह लोटा पड़ा है और दो सजीव स्वर्णकलश बहुत दिनो बाद आसन्न मुक्ति की सभावना में उत्तेजित अवस्था में उठ-बैठ रहे है।

आर्थर सामने रखे बोतल-गिलास आदि को जल्दी-जल्दी हटाने लगे। अभी भी वह अपने को सयत करने का एक क्षीण प्रयत्न कर रहे थे।

अलका अभी भी अपनी भूमिका का पालन कर सकती थी। किन्तु उसकी छाती का भूकंप तब भी बराबर चल रहा था।

अलका ने एक गिलास पेय और उँडेल लिया। आर्थर न्यूमन ने अतिम बार की तरह अपने को रोकने का प्रयत्न किया। 'आर्थर, इस समय तुम विदेश में हो। तुम एक कंपनी के मालिक हो। मामूली-सी परिचित एक साथिन तुम्हारे साथ कॉफ़ी पीने आकर ज़रा ढीली पड़ गयी। आर्थर, तुम्हारी पत्नी की रगीन तसवीर पास ही टँगी है।'

सब-कुछ समझकर भी आर्थर कुछ समझ नही पा रहे है। शिथिल-वसना अलका के सुनहरे पात्रों में बन्दी अनादिकाल का आकर्षण आर्थर न्यूमन को बिना शर्त आत्मसमर्पण का निर्देश कर रहा है। मंत्रमुग्ध आर्थर का कामोन्मत्त शरीर इस सुनहरे अवसर को छोड़ने को ज़रा भी तैयार नही है।

दो लबे घंटों की अवधि ने कुछ अल्प क्षणों का रूप लेकर आर्थर न्यूमन के शयन-कक्ष से विदा ली। भारतीय संगिनी की निरावरण शिथिल देह शैया के पास ही निश्चल पत्थर की तरह पडी थी।

अब आर्थर न्यूमन का होश लौटा। उन्हे याद आया कि वह डेनवर इडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर है। कलकत्ता मे गोरे विदेशी व्यवसायियों के जीने की अलिखित नियमावली है।

पर-स्त्री के प्रति दुर्बलता-प्रदर्शन के फलस्वरूप कुछ दिन पहले हिन्दुस्तान इलिग्टन के फ़िनांस-डायरेक्टर की नौकरी समाप्त हुई थी। फिर भी

इस क्षण आर्थर न्यूमन प्रचंड तूफ़ान के वाद की शान्ति का अनुभव कर रहे थे। शरीर की पवित्रता में विश्वास कर न्यूमन यों ही समाज मे बडे नहीं बने थे। इसके विपरीत देह को सारे बंधनो से मुक्ति देकर अभूतपूर्व जानकारी मिली थी। प्रकृति के उष्ण रहस्य को अपने शरीर से जानकर आज न्यूमन की उत्सुकता शान्त है।

आर्थर न्यूमन अब संगिनी के पास खिसक आये। उसके विशाल सुडौल उरुद्वय पर एक झीनी चादर उढा दी। अलका की थकी देह क्षण-भर के लिए हिली। आर्थर वोले, "तुम जब तक चाहो यहां आराम कर सकती हो।"

अलका की आँखें घड़ी की खोज कर रही थी। आर्थर ने कलाई पर बँधी घड़ी अलका के चेहरे के पास कर दी। बिजली की तेजी से उठकर अलका ने अपनी साड़ी को बाँधकर नग्नता ढाँकने का प्रयत्न किया। इतना लम्बा-चौड़ा कपड़े का टुकडा इतने अल्पकाल में किसी स्त्री के वश मे आ सकता है, अपनी आंखो से देखे बिना आर्थर न्यूमन विश्वास न कर सकते थे।

अभी रात के दस ही बजे थे। आर्थर न्यूमन ने नितान्त सौजन्य भाव से विदा होती अलका के होठों पर विदाई का चुम्बन अंकित कर दिया, जिसे अलका ने सहज भाव से स्वीकार कर उन्हे कृतज्ञता-पाश मे बाँध लिया।

आर्थर न्यूमन वान्धवी को पार्क-स्ट्रीट चौरंगी के मोड़ पर उतारकर स्वदेश में रह रहे अपने परिचितों के बारे मे सोचने लगे। आज की अप्रत्याशित संध्या के लिए उन्होने अपने को भाग्यशाली माना।

अलका जल्दी घर पहुँचने को आतुर थी, किन्तु आज भी वह आर्थर को अपने साथ अधिक दूर न ले गयी।

डेनवर इंडिया लिमिटेड के वातानुकूलित कमरे मे सवेरे से ही मैनेजिंग डायरेक्टर आर्थर न्यूमन व्यस्त हैं। एक के बाद एक विज़िटर, टेलीफोन,

टेलेक्स और ओवरसीज कॉल सभालने मे सेक्रेटरी श्यामश्री सेन पसीने-पसीने हुए जा रहे हैं।

काम का दबाव बहुत है, लेकिन श्यामश्री सेन परेशान नहीं है। इस पद पर पिछले पचास बरसों से ऐंग्लो-इंडियन लोग एकाधिकार से काम करते आ रहे है। इस बार भी बगाली न रखने की जबरदस्त सिफारिश थी। लेकिन आर्थर न्यूमन ने न मानी। उन्होंने ऑफिस के सबसे होशियार सेक्रेटरी श्यामश्री को ही मैनेजिंग डायरेक्टर के सेक्रेटेरियट मे ले लिया।

फिनांस-डायरेक्टर भास्करन बडे साहब के कमरे में घुसे। डेनवर इंडिया के दस रुपये मूल्य के शेयर ने कल भी पचास पैसे की डुबकी लगायी थी। भास्करन ने बताया कि लायन्स रेन्ज मे कोई शरारती आदमी कम्पनी की आर्थिक दशा के बारे मे दायित्वहीन अफ़वाह फैला रहा है।

"फैलाने दो। अफ़वाह से क्या आता-जाता है?" आर्थर न्यूमन ने सरल भाव से उत्तर दिया।

भास्करन ने हॉल मे पधारे श्वेतांग तनय की इस अनजान उदारता को पसन्द न किया। वह गभीरता से बोले, "सर...!"

"सर कहने की कोई जरूरत नही। मुझे अटपटा लगता है।"

न्यूमन की बात सुनकर भास्करन ने अपनी जीभ काटी। "इट इज माइ प्रिविलेज। मैं आपको अवश्य ही सर कहूँगा—पता लगा सर, बबई के ब्रोकर कुछ माल न खरीदते तो शेयर के दाम और भी गिर जाते।"

भास्करन आगे बोले, "मैं इस बदमाश को पकडूँगा। जरूरत होने पर मैं मिस्टर पतितपावन पाइन से कसल्ट करना चाहता हूँ।"

आर्थर न्यूमन ने कुछ दिनो और नजर रखने को कहा। भास्करन बोले, "इस कलकत्ता को आप जानते नही। बहुत दिनो पहले यहाँ जंगल था; अभी भी है। इसे 'षड्यत्रों का शहर' कह सकते है, सिटी ऑफ़ क्लिक्स ऐंड कान्सपिरेसीज़।"

भास्करन से बिदा लेने के बाद ही समुद्र-पार से फोन आ गया। श्यामश्री सेन बोले, "आपके पिता, मिस्टर डेविड न्यूमन ऑन द लाइन।"

"हलो यगमैन, सब ठीक है?"

"बहुत-सी नयी जानकारी मिल रही है," आर्थर ने मजाक किया।

"वे लोग तुमको खुश तो रख रहे है ? बहुत पहले एक इंडियन बिजनेसमैन मिस्टर बाजोरिया मुझसे मिलने आये थे। मैं उनको लंच पर ले गया था। सुना कि तुम क्लब नहीं जाते, पार्टियों में नहीं जाते। मैंने उनसे तुम्हें *खुश रखने की रिक्वेस्ट की है।"*

"इंडिया मे बिजनेस ज़रा सावधानी से करना होगा, पापा ! यहाँ का स्टाइल और तरह का है।"

पिता बोले, "सुनो माई डियर बॉय, डेनवर इंडिया के विदेशी शेयरों की बिक्री के बारे मे मिस्टर बाजोरिया ने अच्छी बात कही थी। नयी *दिल्ली से शेयर डाइल्यूट करने का ऑर्डर आ गया है,* हमारे लिए अच्छे दाम पाना मुश्किल होगा। इससे अच्छा यही रहेगा कि प्राइवेट तौर पर बातचीत करके अभी कुछ कर डालो।"

"हलो, ज़रा ज़ोर से बोलिये। इंडिया मे जोर से बिना बोले कुछ भी नहीं सुना जा सकता है।"

पिता बोले, "एक और अच्छा प्रस्ताव मिला है। बडा ही शालीन ख़त आया है मिस्टर घनश्याम कानोड़िया से। उनके स्पेशल दूत ने कहा *है कि उनका प्रस्ताव हमारे अंदाजे से भी कही अधिक लाभदायक रहेगा।"*

"उन्होंने यहाँ भी चिट्ठी लिखी थी," आर्थर न्यूमन ने बताया कि इस बारे मे उनका क्या प्रस्ताव है। "लेकिन पापा, अगर टेलेक्स से वहाँ मिले समाचार की समरी भेज दें तो सोचने में सुविधा होगी।"

"टेलेक्स मिल जायेगा। तुम जितनी जल्दी हो अपनी राय बताना। *और इस बीच हैव ए गुड टाइम। अपने को खुश रखो।"*

टेलेक्स पर प्रस्ताव आना शुरू हुआ। सात सागर पार किस तेजी से वाणिज्य-वार्ताएँ दौड़ सकती हैं, श्यामश्री अवाक हो गये। और एक निखिलेश है, जिसकी ख़बर नहीं मिल रही है। हाथ में मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव का बैग लिये नखिलेश पुरुलिया के किसी कस्बे मे घूमता फिर रहा है।

टेलेक्स का लिफ़ाफा फाड़कर सदेश एक फ़ोल्डर मे रख श्यामश्री उसे *मिस्टर न्यूमन की मेज पर रख आये।*

वेतन-विभाग के रमेश डे ने तभी पूछा, "श्यामाश्री, मुझे भी एक

चान्स दें।"

"मैं आपके लिए तब तक कुछ न करूँगा, जब तक आप मेरा नाम ठीक से न बोलेंगे। मैं श्यामश्री हूँ—श्यामाश्री नहीं।"

रमेश डे हँसने लगे। "एक ही बात तो है।"

"बिलकुल नहीं। श्यामश्री से श्यामाश्री में बहुत अन्तर है।" स्नेह-भरे स्वर में श्यामश्री ने आपत्ति प्रगट की।

"इतने तूमार की जरूरत नहीं, भाई! मैं तुम्हें मिस सेन कहकर पुकारूँगा," चतुर रमेश डे ने घोषणा की।

श्यामश्री बोले, "आज जरा देर हो जायेगी। मिस्टर शिवसाधन चौधरी आ गये है। बगल के कमरे में वह इन्तजार कर रहे हैं। बाहरी विजिटर के जाते ही उनको बुलाना होगा।"

फ़ाइल हाथ में लिये शिवसाधन छोटे कमरे में इंतज़ार कर रहे थे। श्यामश्री ने आकर पूछा, "आपको कॉफ़ी भेज दूं?"

शिवसाधन ने आपत्ति न की। श्यामश्री को पता था कि मिस्टर चौधरी सवेरे के वक्त ठाकुरपुर से सीधे यहीं चले आ रहे हैं। भलेमानस किस तरह रात ठाकुरपुर में बिताते हैं! वहाँ कोई क्वार्टर नहीं है। मिस्टर न्यूमन ने खुद ही उस दिन चौधरी से कहा था कि एक छोटा-सा क्वार्टर बनवाने का प्रस्ताव भेज दो, वह फ़ौरन वित्तीय मंज़ूरी भेज देंगे। किन्तु शिवसाधन की उस तरफ कोई रुचि ही न थी।

आज अवश्य ही शिवसाधन कलकत्ता के घर से आये थे। कल रात साढ़े दस बजे वह ठाकुरपुर से लौटे थे। फिर सवेरे ही कागज-पत्तर तैयार करने बैठ गये।

श्यामश्री जानते है कि शिवसाधन की गृहस्थी में शिवरात्रि के दीप के समान विधवा माँ के अलावा और कोई नहीं है।

विधवा माँ के दुख का अंत नहीं है। उनका हीरे का टुकड़ा यह बेटा किस आशा में इस तरह तिल-तिल अपने को समाप्त करता जा रहा है!

शिवसाधन ने कहा था: "तुम फ़िकर मत करो माँ, मेहनत करने से मेहनत की ताकत भी बढ़ जाती है। क्षय होने से जंग लगकर नष्ट होने के

केसों की संख्या हजार गुना ज्यादा है।"

"क्या पता, बेटा !" माँ ऐसी बात समझ नहीं पातीं। वह एक अजीब स्थिति में थीं। लड़के को गृहस्थ बनने की बात उन्होंने कई बार कही थी। लेकिन बेटा कोई जवाब न देता था।

"माँ, एक छोटा-सा काम हाथ में लिया है। वह पूरा करने दो। माँ का आशीर्वाद न रहने से कोई काम सफल नहीं होता।"

माँ के मन में उसके काम के बारे में आजकल सन्देह हो रहा है। शिवसाधन अपने नशे में डूबा रहता है, किसी के साथ कोई परामर्श नहीं करता।

"परामर्श क्या करूँ, माँ ? बंगाली लोग बड़े डरपोक हो गये हैं। हारने से पहले ही हार जाते हैं और मरने से पहले ही अगर हम मर जायें तो कैसे चलेगा ? तुम तो जानती हो माँ, आत्मीय स्वजन और मित्रों से परामर्श लेने के माने ही यह सुनना है कि होगा नहीं, तुमसे होगा नहीं, शिवसाधन ! सभी ने मान लिया है कि इस देश में कोई कुछ न कर सकेगा।"

इसीलिए तो जब बहुत दुर्बलता मालूम होती तो शिवसाधन कविता पढ़ते। नाई-नाई भय—हबे-हबे जय। डरने की बात नहीं है, जीत होगी ही। रवीन्द्रनाथ के अलावा दो और प्रैक्टिकल आदमी बंगाल में हुए हैं—आचार्य प्रफुल्लचन्द्र और दूसरे सन्यासी। दुनिया छोड़कर भी स्वामी विवेकानन्द ने कहा था : 'होगा, क्यों न होगा ? तुम अपने बाप के बेटे हो—लड़ते चलो।'

किन्तु माँ तरह-तरह की बातें सुनकर चिन्तित हो जाती हैं। "हाँ रे शिबू, मैं तो कुछ नहीं समझती। किन्तु यह सब अनुसंधान तू स्वतन्त्र रूप से करता तो क्या अच्छा न रहता ?"

"अच्छा तो रहता माँ, लेकिन आजकल अनुसंधान में जन-बल और अर्थ-बल की जरूरत होती है। मेरे पास जो कुछ था वह खर्च करके भी तो पथ के अन्त तक नहीं पहुँच पाया। भाग्य अच्छा है कि डेनवर मिल गये। उन लोगों ने मुझे काम की स्वाधीनता दी है। यहाँ के सेठ लोगों के पल्ले पड़ने से क्या होता ? कलकत्ता के कल-कारखानों पर जिनका नियंत्रण

है, वे अनुसंधान में विश्वास नही करते। सट्टेबाजों से दुनिया के किसी देश मे औद्योगिक क्रान्ति नहीं आ सकती।"

सब-कुछ समझकर भी माँ कुछ समझना नही चाहती। "किन्तु उस ठाकुरपुर में तू रातों-रात मत पडा रहा कर। मुझे फिकर होती है। खुली जगह है। वहाँ साँप-वाँप होते हैं।"

उसके बाद शिवसाधन ने अपने कागज़-पत्तर बटोरना शुरू किया। आज की मीटिंग महत्वपूर्ण है।

मैनेजिंग डायरेक्टर के डबल-ठंडे कमरे में अब शिवसाधन की बुलाहट हुई।

"हलो शिव !" आर्थर न्यूमन ने प्रसन्न मुख से स्वागत किया।

"कल रात पार्क स्ट्रीट-चौरंगी के मोड पर आपकी जैसी गाडी देखी थी," शिवसाधन बोले।

"मेरे साथ क्या कोई था ?" न्यूमन ने जानना चाहा।

"और किसी को तो नहीं देखा।"

शिवसाधन के जवाब से आर्थर न्यूमन आश्वस्त हुए।

"सुनो शिव, पेटेंट के लिए आवेदन के सब कागजात और नक्शे आदि ले आये हो ?"

"सभी कागज़ तैयार हैं। कब क्या हो जाये, पता नही। अब देर नही होनी चाहिए। तुरंत करना ही समझदारी है।"

कलकत्ता की नम हवा में शिवसाधन खुद भी आजकल ज़रा ज्यादा सावधानी बरतने लगे है।

न्यूमन बोले, "मैंने एक बात का फ़ैसला स्वयं किया है। इस आविष्कार के साथ तुम्हारा नाम जुड़ा रहेगा। इसका नाम होगा—डेनवर शिवा ऐग्रो मशीनरी। मैंने कार्यालय को सूचना भेज दी है।"

शिवसाधन को अच्छा लगा। बडी-बड़ी कपनियों तक में आजकल यह बात नहीं चलती न। एक प्राणहीन कपनी के लोगो[1] (प्रतीक चिन्ह)

---

1. Logos—ईसाई दर्शन मे साक्षात ईश्वर का आदेश

केसों की संख्या हजार गुना ज्यादा है।"

"क्या पता, बेटा !" माँ ऐसी बात समझ नहीं पाती। वह एक अजीब स्थिति में थी। लड़के को गृहस्थ बनने की बात उन्होंने कई बार कही थी। लेकिन बेटा कोई जवाब न देता था।

"माँ, एक छोटा-सा काम हाथ में लिया है। वह पूरा करने दो। माँ का आशीर्वाद न रहने से कोई काम सफल नहीं होता।"

माँ के मन में उसके काम के बारे में आजकल सन्देह हो रहा है। शिवसाधन अपने नशे में डूबा रहता है, किसी के साथ कोई परामर्श नहीं करता।

"परामर्श क्या करूँ, माँ? बंगाली लोग बड़े डरपोक हो गये हैं। हारने से पहले ही हार जाते हैं और मरने से पहले ही अगर हम मर जायें तो कैसे चलेगा? तुम तो जानती हो माँ, आत्मीय स्वजन और मित्रों से परामर्श लेने के माने ही यह सुनना है कि होगा नही, तुमसे होगा नहीं, शिवसाधन ! सभी ने मान लिया है कि इस देश मे कोई कुछ न कर सकेगा।"

इसीलिए तो जब बहुत दुर्बलता मालूम होती तो शिवसाधन कविता पढते। नाई-नाई भय—हबे-हबे जय। डरने की बात नही है, जीत होगी ही। रवीन्द्रनाथ के अलावा दो और प्रैक्टिकल आदमी बंगाल मे हुए हैं—आचार्य प्रफुल्लचन्द्र और दूसरे संन्यासी। दुनिया छोडकर भी स्वामी विवेकानन्द ने कहा था : 'होगा, क्यों न होगा ? तुम अपने बाप के बेटे हो—लड़ते चलो।'

किन्तु माँ तरह-तरह की बातें सुनकर चिन्तित हो जाती है। "हाँ रे शिबू, मैं तो कुछ नही समझती। किन्तु यह सब अनुसंधान तू स्वतंत्र रूप से करता तो क्या अच्छा न रहता ?"

"अच्छा तो रहता माँ, लेकिन आजकल अनुसंधान मे जन-बल और अर्थ-बल की जरूरत होती है। मेरे पास जो कुछ था वह खर्च करके भी तो पथ के अन्त तक नही पहुँच पाया। भाग्य अच्छा है कि डेनवर मिल गये। उन लोगो ने मुझे काम की स्वाधीनता दी है। यहाँ के सेठ लोगों के पल्ले पड़ने से क्या होता ? कलकत्ता के क़ल-कारख़ानों पर जिनका नियंत्रण

है, वे अनुसंधान में विश्वास नहीं करते। सट्टेबाज़ों से दुनिया के किसी देश में औद्योगिक क्रान्ति नहीं आ सकती।"

सब-कुछ समझकर भी माँ कुछ समझना नहीं चाहती। "किन्तु उस ठाकुरपुर में तू रातों-रात मत पड़ा रहा कर। मुझे फ़िकर होती है। खुली जगह है। वहाँ साँप-बीछ होते हैं।"

उसके बाद शिवसाधन ने अपने कागज़-पत्तर बटोरना शुरू किया। आज की मीटिंग महत्त्वपूर्ण है।

मैनेजिंग डायरेक्टर के डबल-ठंडे कमरे में अब शिवसाधन की बुलाहट हुई।

"हलो शिव!" आर्थर न्यूमन ने प्रसन्न मुख से स्वागत किया।

"कल रात पार्क स्ट्रीट-चौरंगी के मोड़ पर आपकी जैसी गाड़ी देखी थी," शिवसाधन बोले।

"मेरे साथ क्या कोई था?" न्यूमन ने जानना चाहा।

"और किसी को तो नहीं देखा।"

शिवसाधन के जवाब से आर्थर न्यूमन आश्वस्त हुए।

"सुनो शिव, पेटेंट के लिए आवेदन के सब काग़ज़ात और नक़्शे आदि ले आये हो?"

"सभी काग़ज़ तैयार हैं। कब क्या हो जाये, पता नहीं। अब देर नहीं होनी चाहिए। तुरंत करना ही समझदारी है।"

कलकत्ता की नम हवा में शिवसाधन ख़ुद भी आजकल ज़रा ज़्यादा सावधानी बरतने लगे हैं।

न्यूमन बोले, "मैंने एक बात का फ़ैसला स्वयं किया है। इस आविष्कार के साथ तुम्हारा नाम जुड़ा रहेगा। इसका नाम होगा—डेनवर शिवा ऐग्रो मशीनरी। मैंने कार्यालय को सूचना भेज दी है।"

शिवसाधन को अच्छा लगा। बड़ी-बड़ी कंपनियों तक में आजकल यह बात नहीं चलती न। एक प्राणहीन कंपनी के लोगो[1] (प्रतीक चिन्ह)

---

1. Logos—ईसाई दर्शन में साक्षात ईश्वर का आदेश

की आड़ मे व्यक्ति की आशा-निराशा का सारा इतिहास खो जाता है। प्रत्येक कपनी बहुत-से सामाजिक व्यक्तियो का सामूहिक प्रयत्न होती है। यह बात बीसवी सदी के इस औद्योगिक युग मे सभी भूलने को उतारू हैं।

आर्थर न्यूमन धीरे से हँसे। "उस दिन तुमसे संकेत में कहा था। डेनवर इडिया मे तुम्हे बडी जिम्मेदारी सभालनी पड़ेगी। कपनी के विदेशी शेयर का अश वर्तमान और भावी कर्मचारियों में बेचने की व्यवस्था करना भी ठीक रहेगा।"

हँसते हुए न्यूमन और भी कहते। किन्तु तभी टेलीफ़ोन कॉल आ गयी।

"हलो, तुम कैसे हो?" शिवसाधन को अलका नाम भी सुनायी पड़ गया।

शिवसाधन ने सुना कि आर्थर किसी स्त्री से कह रहा है, "हाऊ स्वीट ऑफ यू कि तुमने टेलीफ़ोन किया!"

उधर से दो-एक बात सुनकर आर्थर न्यूमन थोडा-सा गभीर हो गये। अलका नाम की स्त्री से उन्होने कहा, "मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि दफ़्तर के समय को छोड़कर कभी भी मुझसे मिलो। क्यो? गुड बाई!"

टेलीफोन रखकर आर्थर न्यूमन थोड़ा अन्यमनस्क हो गये। अस्वाभाविक तेजी से कामकाज समेटकर वह शिवसाधन से बोले, "फिर किसी दिन तुम्हारे ठाकुरपुर आऊँगा, बिना सूचना दिये।"

"नमस्ते, नमस्ते पतितपावनजी!" रामनरेश गुप्ता ने आदर के साथ मिस्टर पाइन की अभ्यर्थना की।

"बाबूजी के दिमाग मे डेनवर इडिया लिमिटेड की यह क्या बीमारी घुसा दी है!" रामनरेश ने शिकायत की।

"मैंने क्या घुसाई? घुसाई है ग्रहों ने," पतितपावन ने जरा व्यग्य से कहा।

"घनश्यामजी को बिजनेस के किसी और काम मे इस समय मजा

नहीं आ रहा है। हर वक्त डेनवर, डेनवर।"

पतितपावन ने सुना कि दाल, पोस्त और छोलों की तरफ़ से लापरवाही बरती जा रही है। घनश्यामजी ने कल साठ वैगन अरहर की दाल क्विंटल पीछे दस पैसे नुकसान पर छोड़ दी।

पतितपावन समझ गये कि अरहर की दाल के पैसों से डेनवर के शेयरों की खरीद चल रही है।

बड़े-से काँच के गिलास में ठंडा शरबत रामनरेश ने उनके आगे बढ़ा दिया। "बार-बार चाय मत पिया कीजियेगा, पेईन साब ! इस बड़े गिलास में जितनी तबीयत हो शरबत पीजिये, शरीर ठंडा रहेगा।"

"कहाँ है घनश्यामजी ? अर्जेंट ख़बर भेजकर मुझे बुला भेजा है।" पतितपावन निर्धारित समय पर मुवक्किल को आँखों के आगे न पाकर असतुष्ट हो उठते हैं।

रामनरेश बोले, "डेनवर के काम से ही अचानक निकल गये हैं। अदर की ख़बर है कि मिस्टर बाजोरिया ने अपने दामाद के नाम पर डेनवर का ऑफ़र दिया है। सीधे विलायत को ऑफ़र गया है।"

"ख़रीदने के लिए वह कोई भी दाम दे सकता है, रामनरेशजी !" पतितपावन ने समझा दिया।

"लेकिन यह क्या दाल के वैगन ख़रीदना है ? यह तो लड़की की शादी की तरह है। पूरी डेनवर कपनी तो बिक नहीं रही है। विलायती नाम और थोड़े-बहुत विलायती शेयर तो रह ही जायेंगे।"

रामनरेशजी थोड़ा हँसे। "घनश्यामजी ख़ुद जहाँ इंतजाम करने गये हैं वहाँ देखिये कितनी तेज़ी से नतीजा सामने आता है।"

तभी टट्टू की तरह टपटप करते घनश्यामजी लौट आये। बाबूजी के ठंडे कमरे में घुसने से पहले रामनरेश बोले, "आपके साथ मेरी भी स्पेशल बात थी।"

घनश्यामजी कानोडिया बोले, "पतितजी, मिस्टर बाजोरिया गदी चाल खेल रहे हैं। मुंह पर मुझसे कहा कि वह डेनवर नहीं चाहते, और भीतर-ही-भीतर दामाद को लगा दिया है। लाचार होकर मैंने स्पेशल क़दम उठाया है।"

करती हो।

घनश्यामजी के कमरे के पास ही रामनरेश गुप्ता पतितपावन की राह देखते उत्सुकता के साथ बैठे थे।

उस दिन पतितपावन के साथ गोपनीय बातचीत के तुरत बाद रामनरेश ने अगले दिन ही जमालउद्दीन से मुलाक़ात कर दोस्ती जमा ली थी।

रायड स्ट्रीट की दर्ज़ी की दूकान मे जमालउद्दीन बैठा था। रामनरेश के पुकारते ही वह निकल आया।

रायड स्ट्रीट और फ्री स्कूल स्ट्रीट का सगम रामनरेश को बिलकुल पसद न था।

कही बैठकर थोड़ी बातचीत की ज़रूरत थी।

जमालउद्दीन बोला, "चलिये सर, कवर हाउस मे बैठा जाये।"

रामनरेश को मानो उलटी आ रही हो। गोश्त की दूकान; शायद गोमास भी पकता हो। और रामनरेश गुप्ता कट्टर निरामिष थे।

जमाल के साथ थियेटर रोड के 'विनीत रेस्तराँ' में आकर बैठे और रामनरेश ने दो प्लेट दही-बड़े का ऑर्डर दिया।

बहुत ज़ोरो से हिन्दी गाना बज रहा था, जिससे एक मेज की बात दूसरी मेज पर सुनायी नही पड़ती थी।

यह जमालउद्दीन बड़ा चालू आदमी है। विनय से विगलित होकर वह रामनरेश से और भी कई सौ रुपये माँग बैठा।

जमालउद्दीन बोला, "आपके हुक्म के मुताबिक़ न्यूमन साहब के यहाँ काम ठीक ही चल रहा है, सर! अनवरी का आलरेडी तीन दिन 'काम' हो गया है। आपने कुल दो दिनो के रुपये एडवांस दिये थे।" जमालउद्दीन ने याद दिलाया।

इसके मतलब कि न्यूमन साहब ने कांटा निगल लिया है। रामनरेश को थोड़ा अविश्वास हुआ।

घनश्यामजी के पास गोपनीय सूचना थी कि वाजोरिया का दामाद कुछ दिन पहले लंदन के किसी डिपार्टमेंटल स्टोर से दाम दिये बिना सामान उठाने के अभियोग में पकड़ा गया था। शॉप-लिफ़्टिंग की यह सूचना मिस्टर लाहिड़ी ने बहुत कोशिश करके भारत पहुँचने से पहले दबा दी थी।

"कल 'इकनॉमिक हेरॅल्ड' पढ़ियेगा। दामाद की सारी करतूत हिंदुस्तान में पहली बार फैलेगी।" घनश्यामजी मीठी हँसी हँसे। "अभी-अभी सारी व्यवस्था करके आया हूँ। इकनॉमिक हेरॅल्ड की ख़बर में कोई नाम न रहेगा, लेकिन ख़बर इस तरह लिखी होगी कि सभी समझ सकेंगे कि बदनामी का नायक वाजोरिया का दामाद है—जो इस वक़्त विलायत में रहकर छिपे-छिपे एक 'फ़ेरा' कंपनी खरीदने की कोशिश में हैं।"

घनश्यामजी ने मुंह में आँवले का एक टुकड़ा डाला। "यह छोटा न्यूमन साहब बहुत सख़्त आदमी है। शॉप-लिफ़्टरों के साथ कोई बिजनेस नहीं करेगा।"

"सचमुच आपका दिमाग अद्भुत है, घनश्यामजी! केंद्रीय मन्त्रिमंडल में आपके जैसे आदमी होते तो व्यापार और वाणिज्य में भारत से कोई देश पार न पाता।" पतितपावन सचमुच ताज्जुब में पड़ गये थे।

लेकिन घनश्यामजी ने स्वयं याद दिलाया कि असली कारसाजी पतितपावन की है। घनश्यामजी का 'इकनॉमिक हेरॅल्ड' से परिचय पतितपावन ने ही कराया था। उस समय काफ़ीपोसा की खबर छापने के लिए वे लोग छटपटा रहे थे। घनश्यामजी ने बहुत-सा काठ-भूसा जलाकर बेइज़्ज़ती से बचा दिया था।

घनश्यामजी ने पतितपावन के चेहरे की ओर देखा। "मैं तो मामूली आदमी हूँ। बताइये, मेरी सामर्थ्य कितनी है? चाभी समेत ताला इस न्यूमन साहब के हाथों में है। पतितजी, मैं इस बारे में पूरी तरह आप पर आसरा किये बैठा हूँ।"

फिर घनश्यामजी ने सचमुच ऐसे असहाय भाव से पतितपावन की ओर देखा कि मानो नाटक की सारी सफलता पतितपावन पर ही निर्भर

करती हो।

घनश्यामजी के कमरे के पास ही रामनरेश गुप्ता पतितपावन की राह देखते उत्सुकता के साथ बैठे थे।

उस दिन पतितपावन के साथ गोपनीय बातचीत के तुरंत बाद रामनरेश ने अगले दिन ही जमालउद्दीन से मुलाकात कर दोस्ती जमा ली थी।

रायड स्ट्रीट की दर्जी की दूकान मे जमालउद्दीन बैठा था। रामनरेश के पुकारते ही वह निकल आया।

रायड स्ट्रीट और फ्री स्कूल स्ट्रीट का संगम रामनरेश को बिलकुल पसंद न था।

कहीं बैठकर थोड़ी बातचीत की जरूरत थी।

जमालउद्दीन बोला, "चलिये सर, कबर हाउस मे बैठा जाये।"

रामनरेश को मानो उलटी आ रही हो। गोश्त की दूकान; शायद गोमांस भी पकता हो। और रामनरेश गुप्ता कट्टर निरामिष थे।

जमाल के साथ थियेटर रोड के 'विनीत रेस्तराँ' मे आकर बैठे और रामनरेश ने दो प्लेट दही-बड़े का ऑर्डर दिया।

बहुत जोरो से हिन्दी गाना बज रहा था, जिससे एक मेज की बात दूसरी मेज पर सुनायी नही पड़ती थी।

यह जमालउद्दीन बड़ा चालू आदमी है। विनय से विगलित होकर वह रामनरेश से और भी कई सौ रुपये माँग बैठा।

जमालउद्दीन बोला, "आपके हुक्म के मुताबिक न्यूमन साहब के यहाँ काम ठीक ही चल रहा है, सर ! अनवरी का आलरेडी तीन दिन 'काम' हो गया है। आपने कुल दो दिनों के रुपये एडवांस दिये थे।" जमालउद्दीन ने याद दिलाया।

इसके मतलब कि न्यूमन साहब ने काँटा निगल लिया है। रामनरेश को थोडा अविश्वास हुआ।

"क्या कह रहे हैं, सर ? जहाँ जमाल रहे और अनवरी-सी सुन्दरी ने जिम्मा लिया हो, वहाँ काम न होगा ? कलकत्ता है, इसीलिए इन चीज़ों की क़द्र नहीं है, सर ! बॉम्बे होता तो अनवरी का शोर मच जाता। एक बुकिंग के बाद दूसरी बुकिंग मे साँस लेने की फुरसत न रहती।"

रामनरेश ने जमालउद्दीन की बात पर आपत्ति न की।

लेकिन जमालउद्दीन आसानी मे छोड़ने वाला आदमी न था। दही-वड़ा खाते-खाते बोला, "आप ने भी तो अनवरी को अपनी आँखों से देखा नहीं है, सर ! कल ज़रा तशरीफ लायेंगे ?"

रामनरेश ने मन-ही-मन राम नाम जपा। बातो का सिलसिला घुमाकर जमाल से पूछा, "साहब के यहाँ किस तरह काम हुआ, मिस्टर जमाल ?"

"न्यूमन साहब तो पुरानी पार्टी है। आपका काम बहुत ही कम पैसों मे हुआ जा रहा है, सर ! बाजोरिया कंपनी के लाहिड़ी साहब हैं न, उन्ही ने तो पहले अनवरी को वहाँ ड्यूटी पर लगाया था। लेकिन वे लोग अच्छे नहीं है, सर !" जमाल ने सिर हिलाया।

"क्यों, क्या हुआ ?"

"पहले लाहिड़ी साहब बोले थे, न्यूमन साहब के साथ बहुत दिनों तक काम रहेगा। उसके बाद एक दिन का पेमेंट कर बोले, अब ज़रूरत नहीं है। ओछा काम अनवरी बिलकुल नही लेती, सर ! हज़ार हो, दो फ़िल्मों में काम किया है।"

ज्यादा पेमेंट की बात पर रामनरेश का मन कचोट रहा था। दही-बड़े का दूसरा कौर लेकर जमाल बोला, "यह सब एतबार का काम है, सर ! एतबार न रहे तो साहब से पता लगाइये कि उन्होने अनवरी को कितनी बार एन्जॉय किया है ?"

रामनरेश ने सौ रुपये कम देने की कोशिश की। "रुपये कम मत कीजिये, सर ! कितना ज्यादा खर्चा है। तीन आदमियो का सिनेमा टिकिट है।" जमालउद्दीन ने हिसाब देना शुरू किया।

"तीन क्यों ?"

"मैंने भी कुछ दूर बैठकर सिनेमा देख लिया था, सर ! रात मे कम-

उम्र की औरत, और कलकत्ता शहर को आप जानते ही है। उसके बाद आधी रात को टैक्सी खर्च। अनवरी का जूड़ा बनवाना और फूलो का खर्च। साहब को फूल बहुत अच्छे लगते है।"

लाचार होकर रामनरेश ने पचास रुपये और निकाले।

रुपयों को जेब में रखते-रखते जमालउद्दीन बोला, "तो आपका काम बहुत अच्छी तरह हो रहा है। अँग्रेज़ साहबों के साथ इतनी अच्छी तरह काम अकसर होता नही है, सर!"

रामनरेश ने एक दही-बडा और मुंह मे रखकर जमाल के चेहरे की ओर ताका।

जमाल बोला, "आपके इस काम मे अनवरी को बहुत मेहनत पड रही है। उस दिन लौटकर सवेरे से शाम तक अनवरी सोती रही। उसके मतलब कि ड्यूटी में बहुत मेहनत हुई थी।

"कष्ट किये बिना केष्ट (कृष्ण) नही मिलते, सर! साहब बहुत खुश है।" जमाल बोला, "आलरेडी, अनवरी को साहब ने एक मगर के चमड़े का बैग दिया है। असली विलायती है।"

'विलायती नही भाई, यह चीज़ें भारत में ही अच्छी होती है।' रामनरेश कह न सके।

रामनरेश की समझ मे न आ रहा था कि आगे क्या करें? जमाल-उद्दीन ने पूछा, "तो क्या काम खत्म है?"

"इतने जल्दबाज़ मत बनो, मिस्टर जमाल! ज़रा सोचने दो।" रामनरेश ने वक़्त लेने की कोशिश की।

जमालउद्दीन बोला, "साहब तो जल्दबाज हो गये हैं। कल अनवरी को फ़ोन करने को कहा था। सो बताइये अनवरी क्या करे?" जमालउद्दीन ने समझा दिया कि यह स्पेशल घटना है, क्योकि अँग्रेज साहब लोग किसी को एक बार और बहुत हुआ तो दो बार से ज्यादा ड्यूटी पर नही बुलाते।

रामनरेश जी को खामोश देखकर जमालउद्दीन को शक हुआ कि अब भी बाबूजी के मन से सन्देह दूर नही हुआ है।

"सुनिये बाबूजी, आप बड़े-बड़े जापानी साहबों से पता लगा लें कि अनवरी का काम कैसा है। कोई धोखाधडी नही। जितने दिनो की ड्यूटी

होगी, उतने दिनो का बिल होगा।"

"कोई फ़िक्र मत करो, जमाल," *अन्त में रामनरेश जी ने ज़बान खोली,* "काम बन्द न हो। मैं तो हूँ।" रामनरेश को कहना पड़ा और उसी सुयोग मे पेशगी खाते मे और भी कुछ रुपये जमालउद्दीन ने वसूल कर लिये।

रामनरेश छटपटा रहे थे। पेइन साहब कैसी स्पेशल ड्यूटी रामनरेश के सिर लगा गये!

घनश्यामजी के कमरे से निकलते ही रामनरेश पतितपावन को अलग बुलाकर ले गये।

"जमालउद्दीन एक ही हीरा है। अच्छा मिल गया" रामनरेश ने स्वीकार किया। "लेकिन कोई ख़ास मतलब न रहने पर इस तरह का पेमेंट कितने दिनो तक चलेगा?"

"काँटा तैर रहा है, तैरने दो। ऐसी *क्या परेशानी है? कब क्या काम* मे आयेगा, ठीक नही।" पतितपावन की बात पर रामनरेश शायद पूरी तरह भरोसा नही कर पा रहे थे।

उनका कहना था कि इन न्यूमन साहब को वह समझ नही पा रहे हैं। जो भी गिफ़्ट भेजा जाता है, चाहे वह मगर के चमड़े का बैग हो या अनवरी साहब, टपाटप लिये चले जा रहे है। *लेकिन काम के वक़्त कोई काम नहीं* होता।

पतितपावन मन-ही-मन हँसे। "न्यूमन साहब को क्या पता कि स्पेशल गिफ़्ट कौन भेज रहा है?"

अब रामनरेश को होश आया। "बड़ी भूल हो गयी। यह बात तो सोची *ही नहीं। तो अभी जमालउद्दीन से मुलाक़ात कर* भूल ठीक कर ली जाये?"

"धीरे, रामनरेशजी, धीरे! इस तरह न घबरायें। साहब अगर एक बार जान गये कि अनवरी के साथ हम लगे हुए है तो आपका सारा खेल खतम हो जायेगा। उन्हे इतना ही पता है कि अलका नाम की एक अच्छी लड़की से उनको प्रेम हो गया है। क्यो भाई, घनश्यामजी का नाम जमाल-उद्दीन भी नही जानता है न?"

अब रामनरेश गुप्ता सतर्क हो उठे। "जमालउद्दीन के पिताजी को भी

नहीं पता कि इस सबके पीछे कौन है। बहुत दबाव पडने पर मिस्टर जाजोदिया का नाम ले दूंगा, जो डेनवर के ट्रांसपोर्ट कंट्रैक्टर हैं।"

रामनरेशजी सिर खुजलाने लगे। उन्होंने पतितपावन से सीधे-सीधे पूछा, "अनवरी कल फिर जा रही है। क्या करना है उसे ?"

लाचार पतितपावन ने रामनरेश से कई परम गुप्त बातें फुसफुसाकर कहीं। रामनरेश का चेहरा अचानक पाँच सौ पावर की बत्ती की तरह दमक उठा। न्यूमन और अनवरी के सान्निध्य पर्व की ऐसी संभावना रामनरेश ने सपने मे भी नहीं सोची थी। उन्होंने विस्मय के साथ कहा, "ओ· पेइन साहब ! मरते समय अपना दिमाग सरकारी अस्पताल में दे जाइयेगा। वह लोग काटकर देखेंगे।"

पतितपावन ने ओठ सिकोडे, "अभी तो आप सिर्फ़ निगाह रखिये। अनवरी का काम अनवरी करती चले—काँटा पानी में ही रहे।"

शुक्रवार की रात बीती। शनिवार के वीक-एंड ने आर्थर न्यूमन के शयन-कक्ष में अलसता फैला रखी थी। अलका हिम्मतवाली बन गयी थी। कल रात उसने घर जाने की बात नहीं उठायी। आर्थर न्यूमन भी अलका के सान्निध्य मे रात्रि-जागरण का लोभ दमन न कर सके।

क्लान्त अलका अब विदेशी आर्थर के निविड़ आलिंगन से मुक्त होकर पास ही दूसरी ओर मुंह किये बेहोश सो रही थी। पिछली बार ही आर्थर ने लक्ष्य किया था कि ठंडे एयरकूलर में उनकी साथिन कुछ देर बाद बेचैनी अनुभव करने लगती है। न्यू मार्केट से आर्थर ने पेशगी इंतज़ाम कर रखा था। पिछली रात पास आते हुए निरावरण अलका ने कहा था कि मुझे ठंडा-ठंडा लग रहा है। तभी सरप्राइज़ देकर न्यूमन ने सुन्दर नाइट गाउन निकाला।

चिकने और मुलायम गाउन में अलका ने उपहारदाता को बाहुबंधन मे कैद कर, छाती के तकिये पर खींच-खींचकर दंड दिया था। "यू नॉटी मैन ! मेरे लिए इस स्पेशल उपहार की बात तुमने कब सोची ?"

"कल शाम।"

"तुमको तो पता नही था कि मैं आऊँगी।" अलका अपनी टूटी-फूटी अँग्रेज़ी मे सहज भाव से बोले जा रही थी।

साथिन के गर्म शरीर को और भी पास लाने की जी-जान से कोशिश करते हुए आर्थर बोले, "मुझे लगा था कि तुम आओगी।"

"सचमुच तुम नटखट हो!" रेशमी कोमल भारतीय बाहु-बन्धन में बन्दी न्यूमन पूर्ण रूप से आत्मसमर्पण के बाद भी व्यथित होने लगे।

शयन-मन्दिर के रहस्यमय नीलाभ प्रकाश मे आर्थर न्यूमन ने साष्टांग होकर अपनी क्षीणकटी गुरुनितम्बिनी सगिनी की देह-प्रतिमा की खोज फिर आरम्भ की। दूध मे महावर का रग, तीखी नाक, देह की वक्र कटाव, करपुट आच्छादित हृदय कुसुम, नाभिपद्म, रेखाहीन उदर—कुछ भी आविष्कार करने से नही बचा।

अनेक अको मे विभक्त, घनघटापूर्ण रात्रि के अन्त मे बिस्तर पर चुपचाप लेटे आर्थर प्रात.काल की प्रसन्नता का शांत भाव से उपभोग कर रहे थे।

दफ़्तर के कामकाज के बारे मे सोचने की भी तबीयत नही हो रही थी। ऐसे समय सुदूर विदेश से टेलीफ़ोन पर नारी-कंठ तैर उठा। "हलो डार्लिंग, हैड ए गुड स्लीप?"

क्षण-भर के लिए आर्थर ने आँ-आँ किया, उसके बाद समुद्र-पार की सहधर्मिणी से सभी समाचार लेने लगे।

टेलीफ़ोन पर बातचीत शुरू होते ही अलका और भी पास खिसक आयी थी। उसने आर्थर का एक हाथ अपनी छाती पर खीच लिया था, सुख-पिपासु आर्थर ने टेलीफ़ोन रखकर चुपचाप अलका से कहा, "मेरी पत्नी थी।"

ऊर्ध्वांग का विपुल ऐश्वर्य विकसित कर अलका और भी कुछ देर निश्चल होकर सहज भाव से लेटी रही, जैसे यह कमरा, यह शैया, यह साथी उसके बहुल दिनों के परिचित हों।

मोटे परदे में सवेरे का प्रकाश अब ज़रा-ज़रा कमरे में झाँकने लगा

था। आर्थर समझे कि अलका अब शंकित हो उठेगी। इसीलिए उसे आश्वस्त करने के लिए बोले, "जब तक तबीयत हो आराम करो, कोई परेशानी नहीं है।"

उन्होंने फुसफुसाकर अलका से कहा, "मैंने आज सवेरे नौकर को आने के लिए मना कर दिया है।"

अलका ने अपनी आँखें ताज्जुब से फैलायीं। "पहले से ही सारा षड्यंत्र कर रखा है—यू नॉटी मैन !"

आर्थर को पूर्व की रमणी का स्नेह अच्छा लगा। बिस्तर पर अपने बालों को ठीक करने से पहले अधलेटी अलका ने आर्थर के बाल उँगलियों से ठीक कर दिये थे। पूछा था, "चाय बनाऊँ ?"

बेड के एक ओर पड़ी साड़ी, साया, ब्लाउज अलका ने खुद ही इकट्ठा किये और यथासमय आर्थर ने साथिन का नाइट गाउन बड़ी सावधानी से तह कर कुशन के नीचे रख दिया।

विदा होने से पहले आर्थर ने जानना चाहा कि उसे किसी चीज की जरूरत तो नहीं ? उनका मन कुछ देने के लिए छटपटा रहा था। लेकिन मृदु मुसकान के साथ अलका ने केवल एक मधुर चुम्बन आर्थर के होंठों पर रख दिया।

'तुम मुझको देती ही जा रही हो, प्रतिदान में कुछ भी नहीं लेती,' कृतज्ञ आर्थर न्यूमन ने मन-ही-मन यह बात कही। "मुझे कुछ मौका दो, सुन्दरी," आर्थर ने अनुनय की।

आँखों के इशारे से अलका ने बात न करने का हुक्म दिया। "तुमको खुश रखने का जिम्मा मेरा है। आई वान्ट यू टु कीप हैपी।"

दुनिया के किसी देश में दो दिनों की अचानक परिचिता साथिन इतनी मीठी बातें नहीं करती। न्यूमन ने भीतर-ही-भीतर अनुभव किया, यह भारतवर्ष कैसा विचित्र देश है !

अलका के जाने के बाद ही आर्थर को ध्यान आया कि आज सवेरे गोविन्दपुर गॉल्फ क्लब में खेलने की बात थी। सान्निध्य की मादकता में उस समय बिस्तर छोड़कर उठने की इच्छा उनके मन में न थी। फ़िनान्स-डायरेक्टर भास्करन ने मैदान में पहुँचकर निश्चय ही उनकी राह देखी होगी। मिस्टर आनन्द कानोड़िया के साथ भी इस समय खेलने की बात थी।

आर्थर को बड़ी शर्म आयी। गोविन्दपुर गॉल्फ की डेस्क पर उन्होंने फ़ोन कर दिया कि बहुत सख़्त सरदर्द के कारण आना न हुआ।

बहुत खेल हो चुका। अब काम का वक़्त था। आर्थर न्यूमन आफिस से लाये 'फेरा' सम्बन्धित काग़ज़ों को खोलकर बैठे।

मिस्टर बाजोरिया से सम्बन्धित गंदी ख़बर सौभाग्यवश 'इकनॉमिक हेरॅल्ड में निकल गयी थी। पूरा पता लगाकर साथ ही आर्थर ने डेविड न्यूमन को टेलेक्स भेज दिया था : "इस तरह के आदमी के साथ व्यावसायिक संबंध बनाना डेनवर जैसे संस्थान के लिए नीतिसंगत होगा या नहीं ?"

डेविड न्यूमन ने कल शाम को ही जवाब भेज दिया : "बिलकुल नहीं।"

अब मिस्टर घनश्याम कानोड़िया का प्रस्ताव था। इनके विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से आर्थर न्यूमन कुछ नहीं जानते थे।

भास्करन ने रिपोर्ट दी थी : "बहुत ही भले बुद्धिमान बिज़नेसमैन हैं। सारा रिकार्ड एकदम साफ़ है। उदार-हृदय व्यक्ति हैं। गोविन्दपुर लेडीज गॉल्फ़ उत्सव में भास्करन के अनुरोध पर सोने का मेडल और बीस हज़ार रुपये तत्काल दे दिये थे। वैसे भी भारत में एकमात्र गोविन्दपुर ही इस बार सोने की ट्रॉफी दे रहा है, बॉम्बे की लेडीज़ भी यह न कर सकी। और ऑल इंडिया चैम्पियन मिसेज़ गोल्डवाला ख़ुद खेलने आ रही है। मिस्टर घनश्याम कानोड़िया के बिना यह सम्भव न होता।"

पिछले साल मिस्टर घनश्याम कानोड़िया ने कितना दिया था, यह आर्थर न्यूमन ने जानना चाहा। भास्करन बता न सके, पर मिस्टर न्यूमन ने क्लब से पता लगा लिया कि एक पैसा भी नहीं। तो घनश्यामजी का गॉल्फ़ प्रेम इसी बरस का है !

इस देश में आने से पहले आर्थर को डेविड न्यूमन ने चतुर व्यापारी,

सूतानटी इलेक्ट्रिक सप्लायर के चेयरमैन, गोविन्दपुर चेम्बर के भूतपूर्व प्रेजीडेंट सर एडवर्ड बटमल से मिलने के लिए कहा था। यह सर एडवर्ड एक विचित्र चरित्र थे। जैसे किप्लिंग के किसी उपन्यास से निकलकर बीसवी सदी मे रह रहे हो।

बडी आलोचना के बाद भारत-पथिक युवक को सर एडवर्ड बटमल ने एक कागज पर घसीट मे दस उपदेश लिखकर दिये थे। भारत में क्या करना और क्या नही करना, उसी के बारे में 'टेन कमांडमेंट' थे—बिलकुल टॉप सीक्रेट।

उसमें पहला सूत्र था : हमेशा याद रखो कि भारतवर्ष की हर दीवार के कान होते हैं। एक और निर्देश था : कलकत्ता में किसी का 49 प्रतिशत विश्वास मत करना। एक ही बात का पता दो या तीन सूत्रों से अलग-अलग लगाना चाहिए। इसी तरह हमने तीन सौ बरस तक भारत साम्राज्य की व्यवस्था चलायी है।

आर्थर न्यूमन ने इसीलिए धनश्याम कानोडिया के बारे में और भी पता लगवाया। धनश्याम कानोड़िया आधुनिक कल-कारखानो के साथ वैसे तो सयुक्त न थे, किंतु उन्होने कहा था कि डेनवर के दैनिक कारबार मे नाक घुसेड़ने की उनकी कोई तबीयत नही। केवल कुछ शेयर खरीदकर सहयोगी बनना चाहते है। केवल बीस प्रतिशत शेयर डेनवर से खरीदकर वह क्या कर सकते हैं ? लेकिन इस बिजनेस मे सहयोगी बनकर डेनवर की उन्नति के लिए वह क्या करेंगे ?

दूसरे व्यक्ति ने भी कहा था कि धनश्याम कानोडिया अत्यंत विनम्र, धर्मभीरु, सज्जन व्यक्ति हैं। कट्टर निरामिषहारी। जैसलमेर में मन्दिर और हरिद्वार मे धर्मशाला बनवायी है। एकबार ब्रिटिश लेदर इडिया लिमिटेड के शेयर खरीदने का सुयोग मिला था। किन्तु पशुहत्या की बात सोचकर ऐसा ललचाने वाला सुयोग छोड़ दिया था।

लेकिन इस दूसरे व्यक्ति से ही आर्थर न्यूमन को पता चला था कि मानिकतला ब्रिज के नीचे एक तेल की मशीन लगाकर बहुत ही मामूली ढंग से धनश्याम कानोड़िया ने जीवन आरम्भ किया था। तब इन कुछ बरसो मे ही वह इतनी विराट सम्पत्ति के मालिक किस तरह बन गये ? इस

देश के अर्थशास्त्र के कानून-कायदों का इतिहास न्यूमन ने थोड़ा-बहुत पढ़ रखा था। उन्हें मानकर चलने पर इस सीधे मार्ग पर इतने कम समय में इतनी सम्पत्ति कैसे सभव हुई ? शिवसाधन ने उस दिन बालज़क की रचना से उद्धरण दिया—बिहाइड एवरी फॉरचून, देयर इज़ ए क्राइम।

रसिक शिवसाधन ने कहा था, इस बारे मे उसे ज़रा भी सदेह नही कि बालज़क छिपकर कलकत्ता देख गये थे।

इसके बजाय डेनवर के कर्मचारियों और कुछ छोटे-छोटे पूँजी लगाने वालो को शेयर बेचना अच्छा रहेगा। मैनेजिंग डायरेक्टर बनकर शिवसाधन उन्हे नेतृत्व दे सकेगा। पैसो की कमी-से उसके आविष्कार रुकेंगे नही, और भविष्य मे विदेशी डेनवर का भी भला होगा।

इस मामले मे एक और बात भी सोचने की ज़रूरत है। पूर्व-चिताओ का एक मसौदा आर्थर न्यूमन ने बाल पाइंट पेन से अपने हाथों से लिख डाला।

बारह बजे के वक़्त नौकर आबिद आ गया। आर्थर न्यूमन और भी कुछ काम निबटाकर भारतीय चित्रकला के सम्बन्ध मे ज़िमार की सचित्र पुस्तक खोले बैठे थे।

कुछ देर बाद ही बेडरूम का बिस्तर ठीक करने के लिए आबिद भीतर आया।

"साब !" कहते हुए कान का एक बुंदा आबिद ने मेज़ पर रखा। बिस्तर साफ़ करते समय तकिये के नीचे उसे मिला था।

आर्थर ने धन्यवाद दिया। "रख जाओ, ज़रूर कीमती सोने की चीज़ होगी। मैं उठाकर रख दूंगा।"

आबिद ने अपना कर्तव्य पूरा किया था। पाँच पैसे की भी चीज़ पडे रहने पर वह होशियारी से उठाकर रखेगा लेकिन हुज़ूर सोना नहीं पहचानते। यह गिलट है। निरुत्तर आबिद शान्त भाव से किचन की ओर साहब के लिए सूप गरम करने चला गया। काफ़ी उम्र का आबिद जानता था कि अच्छी मेमसाहब लोग ऐसी चीज़ें कभी नही पहनेंगी।

रामनरेश गुप्ता को दूसरे राउंड का खेल शुरू करने के लिए हरी झंडी मिल गयी थी। मिस्टर पाइन के साथ बन्द कमरे में परामर्श के बाद घनश्यामजी ने खुद निर्देश दिया था।

और कोई मामला होता तो रामनरेशजी को चिंता होती। लेकिन मिस्टर पाइन जिस योजना के कर्णधार हों, वहाँ किसी तरह के सोच-विचार की ज़रूरत नही। पतितपावनजी सचमुच पी-थ्री हैं—पी फॉर परफ़ेक्शन, पी फ़ॉर पेंच, पी फ़ॉर पटापट काम! मिस्टर पाइन की योजना में कहीं कोई कमी नही रहती।

डेनवर इंडिया लिमिटेड से कई दिनों में कोई ख़बर नहीं मिली थी।

शेयर मार्केट में साधारण शेयरों के दामों में दस पैसे की कमी के बाद फट-से चालीस पैसे की बढ़ोतरी ने घनश्यामजी को चिंता में डाल दिया। एक पगला-सा ब्रोकर कहता फिर रहा था : "पकड़े रहो, डेनवर इंडिया बढ़-बढ़कर ब्रुक बांड, क्लोराइड हो जायेगा। यह डेनवर का आर्डिनरी ब्लू टिप नही, ब्लू डायमंड हो सकता है।" इस ब्रोकर को राह पर लाने के लिए घनश्यामजी ने डेनवर के कुछ होल्डिंग झट से छोड़कर बाज़ार का बुख़ार उतार दिया था, लेकिन किसी तरह निश्चिन्त न हो पा रहे थे।

पतितपावन को भी परेशानी में डालने वाली ख़बर मिली थी। अंदरूनी समाचार यह था कि आर्थर न्यूमन बाजोरिया के दामाद को शेयर बेचने की सलाह विलायत भेज रहे हैं। किसी एक मोहिनी फ़िल्म स्टार के माध्यम से मिस्टर लाहिड़ी ने विशेष व्यवस्था की है।

अलका उर्फ़ अनवरी के साथ न्यूमन का पहला परिचय बाजोरिया के एजेंट लाहिड़ी के माध्यम से हुआ था, यह अस्वास्थ्यकर सूचना भी मिस्टर पाइन भूल नहीं सकते थे। औरतों का विश्वास नही, कब डबल एजेंट बन जायें! अलका को अगर काम पर लगाना है तो और देर करना ठीक न होगा।

रामनरेश गुप्ता भी सलाह के लिए भागे हुए आये। जमालउद्दीन को एक के बाद एक बहुत-से बेकार भुगतान कर रामनरेश अधीर हो उठे थे।

रामनरेश जमालउद्दीन को लेकर पार्क सेंटर में 'मेपल वेजिटेरियन रेस्तराँ' में ले गये थे। दो बड़े गिलास ताज़े संतरों का रस और आलू की

टिकिया का ऑर्डर देकर रामनरेश ने छानबीन शुरू की।

जमालउद्दीन ने कहा था, "सर, थर्ड पार्टी बनकर किसी के साथ काम करना बहुत झमेले का काम है। सीधे-सीधे सम्बन्ध रहने से जिनकी ड्यूटी हुई वही लेन-देन कर लेते।"

"कहना क्या चाहते हो, जमाल ?"

"एक के बाद एक तीन स्पेशल होल नाइट ड्यूटी अनवरी ने दी हैं। आप शक न करें कि काम किये बिना पैसे लेने आया हूँ। किसी को गवाह रखकर अनवरी काम करे, ऐसा कोई तरीका नही है।" जमालउद्दीन ने अफ़सोस ज़ाहिर किया।

जमाल ने और भी कहा, "एक होल नाइट ड्यूटी के माने चार आर्डिनरी ड्यूटियाँ। शरीर पर बडी मेहनत पड़ती है, सर—और फिर हम डबल से ज्यादा चार्ज नही कर सकते। पार्टी मुँह बिगाड़ती है; सोचती हैं कि हम अपनी मर्ज़ी से ख़र्च बढा रहे हैं।"

रामनरेशजी ताज्जुब मे पड गये। आँखें फाडकर जमालउद्दीन की ओर देखने के अलावा कोई चारा न था।

जमालउद्दीन बोला, "चार्ज ही देखने से न होगा, खर्च भी देखना होगा। कपड़े-लत्तो का खर्च ही देखिये न, सर ! एक ही कपडे रोज़ाना पहनने से तो काम चलने से रहा। नाइट ड्यूटी मे अनवरी को एक दिन सिल्क साड़ी, एक दिन सलवार कमीज, एक दिन बेल-बॉट्स पहनना पडा। वह खर्च भी बेकार गया। साहब की बात सोचकर अनवरी ने नये बेल-बॉट्स बनवाये, और साहब की ऐसी नजर कि अनवरी से सिर्फ़ साडी पहनने को कहा। एक दिन की ड्यूटी मे कपडे-लत्तों पर क्या ख़र्च लगता है, सर ! आप भी तो बिजनेस लाइन मे हैं, बताइये ?"

रामनरेशजी तब भी चुप थे। जमालउद्दीन ने अपना केस और भी मजबूत बनाने के लिए कहा, "जापानी साहब लोग फिर भी कीमती-कीमती उपहार देते हैं, जिससे खर्च कुछ पूरा हो जाता है। इंग्लिश साहब लोग इस मामले में भी हाथ खींचे रहते हैं। एक नाइट गाउन खरीदा है, वह भी वही रह जाता है। उन जापानी हरतन साहब ने पहले दिन ही साइज पूछकर आठ इलॉस्टिक मेडेन फार्म ब्रा अनवरी को उपहार में दी थी। आलतू-

फ़ालतू चीज़ नही सर, एकदम इंपोर्टेड।"

इसके बाद रामनरेशजी को कुछ रुपये गिनकर देने पड़े थे।

रुपये लेकर जमाल ने कहा था, "खर्च जरूर हो रहा है सर, लेकिन काम बहुत अच्छा हो रहा है। दो मिनट के लिए अनवरी के पास चलिये न, अपने कानों से सुन लेंगे।"

जमाल के कुछ और पेशगी रुपयों का तकाजा करने पर रामनरेशजी बोले, "मैं घंटे-भर के करीब घूमकर आता हूँ।"

"कोई बात नहीं। मैं रायड स्ट्रीट की उसी टेलरिंग शॉप में रहूँगा। आपका टेलीफ़ोन पाते ही जहाँ हुक्म होगा टैक्सी करके चला आऊँगा।"

रामनरेशजी सीधे पतितपावन के यहाँ पहुँचे। बहुत सोच-विचार कर, ख़ासकर बाजोरिया की बात कानों में पड़ने पर घनश्यामजी को पतितपावन ने सेकेंड राउंड का खेल शुरू करने की सलाह दी थी।

पतितपावन से विस्तृत गोपनीय परामर्श समाप्त कर रामनरेश ने जमालउद्दीन को फिर जा पकड़ा। स्कीम समझाने पर जमालउद्दीन की आँखें तिरछी पड़ गयी।

ऐसी तकदीर! जमालउद्दीन को विश्वास ही नहीं हो रहा था। "सचमुच सर, आप माई-बाप हैं। ऐसी अक़्ल हमारे आर्डिनरी दिमाग़ में कैसे आती? मैंने तो सर, उस मर्तबा उस जापानी हरतन साहब से हुज्जत कर कुछ रुपये लेना चाहा था। वह भी झगड़ा न खड़ा करता मर, लेकिन ड्यूटी के वक़्त उसने अनवरी की नगी तसवीर खींच ली थी, इसीलिए अनवरी को हरतन साहब पर बहुत गुस्सा था। साहबों को ड्यूटी देने में लज्जा-शर्म नहीं रहेगी? साहब भी तसवीर नष्ट न करेंगे। तो अनवरी ने कहा था, स्पेशल मॉडल की फ़ीस देना पड़ेगी।"

रामनरेश गुप्ता ने मोटे तौर पर सारी बातें जमालउद्दीन को समझा दी थी। कहा था, "अगर कुछ रुपये निकले तो वे भी तुम्हारे ही रहेंगे।"

"आप लोग जो दे रहे हैं वह तो देते चलेंगे न?" जमालउद्दीन ने निश्चित होना चाहा।

"वह बात तो याद है न?" रामनरेश ने फिर से फुसफुसाकर कहा।

"लेकिन आप कहां मिलेंगे, सर? आपने तो पता भी नहीं दिया है।"

"कोई बात नही। मैं रायड स्ट्रीट से पता लगा लूंगा।"

जानकार जमालउद्दीन अभी भी निश्चिन्त नही हो पा रहा था। "सर, फँस तो न जाऊंगा ?"

"अरे जमाल, शुभ काम के समय ऐसी अशुभ बातें नही सोचते। सारा जिम्मा मेरा है," यह कह रामनरेश गुप्ता तत्काल बाहर निकल आये। आज घर पर सत्यनारायण की कथा है। पत्नी ने गृहस्वामी से बार-बार जल्दी लौटने के लिए कहा था ताकि चरणामृत ले सकें।

आज किसी धार्मिक त्योहार के कारण कलकत्ता के दफ्तरों में छुट्टी है। दुनिया में भारत ही ऐसा एकमात्र देश है, जहां हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैनों के सभी धार्मिक उत्सवों पर कामकाज बंद कर देना पड़ता है। आर्थर सवेरे-सवेरे पिता को चिट्ठी लिख रहा है।

जेरी हाजेस ने आज रॉयल में लंच पर बुलाया है। नहाने के कुछ देर बाद ही आर्थर के निकल जाने की बात है।

लेकिन अचानक टन्-टन् कर टेलीफोन बोल पड़ा।" अलका ने फोन किया था। वह मिलना चाहती थी। पूअर अलका ! बेचारी को पता ही नही होगा कि कान का बुंदा कहां गिर गया !

आर्थर ने जानना चाहा कि शाम का वक्त कैसा रहेगा ?

लेकिन अलका फोन के उस छोर पर चुप थी। संध्या के मोह में उस दिन की तरह शायद अलका पकड़ में नही आना चाहती। आर्थर न्यूमन बाद में समझ पाये कि उस दिन कुछ ज्यादा हो गया था।

लेकिन अलका कुछ देर बाद ही आना चाहती थी। आर्थर न्यूमन दोपहर के सान्निध्य का लोभ संवरण न कर[illegible] यू आर आलवेज वेलकम।"

रहा है।"

"हम लोग तुमको मिस करेंगे, आर्थर ! आशा करते है, पत्नी से मिलने वाले सभी समाचार अच्छे होंगे।" जेरी हाजेस ने टेलीफ़ोन रख दिया।

उसके बाद आर्थर न्यूमन ने जल्दी-जल्दी स्नान किया। तरह-तरह की विदेशी बोतलो से शरीर पर तरह-तरह की खुशबुएँ लगायी।

आर्थर ने आबिद से कुछ चिकेन और चीज सैंडविच बनवाये। देखा कि आइस बॉक्स में काफ़ी बर्फ़ है या नही ? उसके बाद आबिद को पूरे दिन की छुट्टी दे दी।

आबिद ने रात के खाने के बारे में जानना चाहा। साहब बोले, "डिनर क्लब में है।"

बेडरूम के मोटे परदो को खुद खीचकर न्यूमन ने कमरे में लगभग अँधेरा कर लिया। अलका के आसन्न आगमन की सभावना मे उनका शरीर अकारण ही संग-लिप्सु हो उठा। अँग्रेज़ी संगीत की सुमधुर धुन हाई-फाई पर बजानी शुरु कर दी। आर्थर रविशकर की भी एक रील ले आये थे। शायद अलका पसन्द करे।

अँग्रेजी गाने का सुर बड़ा चचल था। रायल का मध्याह्न भोजन अचानक टालकर आर्थर न्यूमन बहुत ही आनन्दित अनुभव कर रहे थे। कहाँ जेरी हाजेस और कहाँ अलका !

एक बजने से कुछ पहले ही दरवाजे की घंटी बजी। अलका के चेहरे से बहुत पसीना बह रहा था। बाहर बहुत गरमी है, आर्थर देखते ही जान गये थे। धूप से अलका का चेहरा तमतमाया हुआ था।

आर्थर ने सोचा, वृन्दा अभी वापस कर साँवले चेहरे को चमका दें। लेकिन वक़्त पर एक मधुर आश्चर्य मे डाला जायेगा। अभी इतना ही बोले, "कोई फ़िक्र नही अलका, अब तुम आर्थर न्यूमन के पास पहुँच गयी हो।"

आर्थर ने संतरे के ठंडे रस का एक गिलास उसकी ओर बढ़ा दिया।

सतरे का रस समाप्त हुआ, किन्तु अलका की गरमी कम न हो रही थी। पसीने मे उसके वस्त्र भीग गये थे और भीतर के कपड़े भी स्पष्ट

नजर आ रहे थे।

"मुझे बहुत थकान लग रही है।" धीमे से अलका बोली।

आर्थर बोले, "तुम नहा लो, अलका ! बहुत आराम मिलेगा।"

आर्थर कुछ भी सुनने को तैयार न थे। अपने हाथों से गर्म और ठंडे जल का नलका खोलकर उन्होंने बाथ टब भर दिया। अलका के लिए ताज़ा तौलिया, विलायती साबुन और यू-डी-कोलोन निकालकर आर्थर न्यूमन फिर आकर स्टडी में बैठ गये। अँग्रेज़ी धुन उस समय समाप्त होने वाली थी। आर्थर ने रविशंकर का रोल चढा दिया।

स्नान समाप्त कर अलका की गरमी कुछ दूर हुई, लेकिन अभी तक थकान दूर न हो रही थी।

"अलका, तुम्हें भूख लगी होगी। कुछ खा लिया जाये।" आर्थर न्यूमन सैंडविच की प्लेटें सफ़ेद अलमारी में निकाल लाये।

दो गिलासों में ठंडी बीयर उँडेली। आर्थर न्यूमन ने लक्ष्य किया कि अलका आज कुछ अन्यमनस्क है। कुछ देर में अलका का बीयर का गिलास समाप्त हो गया। मुँह में गंध बस जाने के डर से अलका ने फिर बीयर नहीं ली। बेचारी को पता नहीं कि बहुत-से लोग चुंबन में बीयर का स्वाद और गंध पसंद करते हैं। आज भी जिन थी, शेरी थी— जिन से मुँह में बिलकुल गंध नहीं आती। किन्तु अलका बीयर का दूसरा गिलास समाप्त करने वाली थी। अलका जल्दी-जल्दी सैंडविच खा रही थी। आर्थर न्यूमन जानते हैं कि यह जल्दी-जल्दी पीना और खाना एक तरह से नर्वसनेस को व्यक्त करता है।

आज आर्थर को कोई संकोच न हुआ। लंच के अंत में उसने अचानक अलका के हाथ अपने हाथों में ले लिये। सुदेहिनी संगिनि के समृद्ध स्तनों पर चुम्बन अंकित कर दिया।

उसके बाद बहुत-सी कामनाएँ गडमड होने लगी। बढ़ने-घटने वाले बंधनों से वक्षयुगल बाहर आ रहे थे। अलका ने आर्थर को रोका नहीं।

किन्तु आज अलका कैसी हुई जा रही थी ! शायद शुरू में पी गयी बीयर की मादकता उसमें यह आकस्मिक परिवर्तन ला रही थी, आर्थर ने सोचा।

शयन-कक्ष की निरावरण स्तब्धता में कुछ क्षण बीते । आर्थर को कुछ गर्माहट की अपेक्षा थी । किन्तु पास खींचकर आलिंगन में आबद्ध करते ही अलका फफककर रो पड़ी ।

आर्थर की छाती पर सर रखकर रोते-रोते बोली, "मेरा बहुत नुकसान हो गया है ।"

सरल आर्थर उस समय भी बुन्दे की बात सोच रहे थे। तकिये के नीचे से बुन्दा निकालकर अलका से बोले, "मेरे रहते नुकसान कैसे होगा ?"

अवसन्न अलका की देह के उर्ध्व भाग का गुरुभार अब आर्थर की छाती पर टिका हुआ था। आर्थर चौंक पड़े। अलका ने कहा, उसके बच्चा होने वाला है ।

युगल आलिंगन शिथिल हो गया । आर्थर को लगा कि वह गीले बिस्तर पर लेटे हुए हैं । "असंभव ! यह कैसे हो सकता है ?" नारी-देह की उर्वरता का रहस्य आर्थर के लिए अनजाना न था । आर्थर ने तो कभी असावधानी नहीं बरती ।

लेकिन अलका और समीप सरकी आ रही थी । "दुर्घटनाएँ भी तो होती है ।" अलका की रुलाई से भरी आँखें आर्थर के वक्ष के रूखे बालों को छू रही थी ।

आर्थर के भीतर बेचैनी की आग जल रही थी, किन्तु बाहर से विवश हिरन की तरह देह निश्चल हो गयी थी। आर्थर ने संगिनी के कोमल शीतल स्तनों का स्पर्श अनुभव किया, लेकिन ऐसा लग रहा था कि कोल्ड-स्टोरेज से निकले ठंडे अजगर का कोमल मांस उन्हें कुंडलियों से लपेटे ले रहा है ।

अलका की बहुत-सी बातें उन्होंने सुनी । अलका कुँवारी है । वह अब समाज में मुँह न दिखा सकेगी । कट्टर भारतीय परिवार मे कुँवारे मातृत्व की ट्रैजडी अकल्पनीय है ।

आर्थर न्यूमन उठ बैठे । मन मे जितनी भी बेचैनी हो, लेकिन अलका डरे नहीं—इसीलिए उसे पहले की ही तरह दुलारने लगे । अब जैसे अलका की कुछ हिम्मत बँधी । सभी अनागत आशंकाओं को एक साथ कहने का

प्रयत्न करने लगी। कैरियर, अर्थाभाव आदि की बातें यकायक उठने लगी।

अपने कपड़े ठीक कर अलका कमरे के कोने में रखी कुर्सी पर बैठी थी। इस बीच ड्राअर का ताला खोल आर्थर न्यूमन दस-दस रुपये के करारे नोटों का एक बंडल निकाल लाये थे।

आर्थर न्यूमन इस देश में अवांछित मातृत्व से मुक्ति की समस्या के बारे में कुछ भी नही जानते थे। इसके बारे मे सारी व्यवस्था कितनी गैर-कानूनी, कितनी आपत्तिजनक है, इसका भी उनको पता नही था। लेकिन उनके सामने इस लड़की के स्वास्थ्य, खाने-पीने, मानसिक शान्ति की समस्या है।

उन्होने नोटों का बंडल अलका के हैंडबैग मे रख दिया। बोले, "अभी तो सब जैसा चल रहा है, चले। तुम्हे और मुझे कुछ सोचने की जरूरत है। तुम्हें तो मालूम है कि मैं इस देश में नया हूँ, यहाँ के कानून-कायदे, सुयोग-सुविधा के बारे मे मुझे कुछ नही मालूम।"

आर्थर न्यूमन के मन मे विरक्ति की विद्युत रेखा चमक उठी। यह क्या गडबड़ है ! लेकिन दूसरे ही क्षण उन्होने अपने को संभाला। उन्होने एक सरल असहाय भारतीय लड़की की देह का उपभोग किया है। उसने अपने को बिलकुल खाली कर दिया है। इस संपर्क मे धन और स्वार्थ का कोई स्थान न था। अब आर्थर दायित्वहीन स्वार्थपरता का परिचय नहीं दे सकते।

तभी अलका शोकाकुल मुख से विदा के लिए उठी। अलका मुँह से कुछ न बोल रही थी। किन्तु आज किसी और तरह का व्यवहार करना किसी भी प्रकार से उचित न होगा।

आर्थर न्यूमन नितान्त कर्तव्यबोध से बँधे अलका की ओर बढ़े। उसके गंभीर होंठों पर अकृपणभाव से विदाई के कई गरम चुम्बन अंकित करने का प्रयत्न किया। बोले, "सुन्दरी, जो हो, यह विदेशी युवक तुम्हारे विश्वास का, तुम्हारे प्रेम का, तुम्हारे उपहार का अपमान न करेगा।"

बाहर गोविन्दपुर क्लब के शामियाने के पास सदस्यों का साप्ताहिक अड्डा जमा था। वहाँ भारतीय कुमारियों की शारीरिक पवित्रता के बारे में, यूनाइटेड ईस्टर्न बैंक के प्रभारी चेयरमैन वासुकी लाहा सदस्यों के सामने भाषण दे रहे थे। उनके विचारों को सुरेन लाहिड़ी एंड कंपनी श्रद्धाभाव से हजम कर रही थी। पास ही एक मेज़ पर आर्थर न्यूमन और शिवसाधन बैठे हैं।

न्यूमन ने बीयर की एक बोतल ख़त्म की। फिर न्यूमन ने स्वयं शिव-साधन से पूछा, "विवाह से पहले मातृत्व की समस्या यहाँ कैसी है?"

"मिस्टर लाहा की बात सुनने से तो लगता है कि इस विषय में यहाँ कोई कुछ भी नहीं जानता। फ्रैंकली इस बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है, आर्थर!" अविवाहित शिवसाधन ने अकपट भाव से अपनी अज्ञता स्वीकार की।

"तुम तो काम के सिवा कुछ नहीं जानते, शिव!" आर्थर ने मजाक किया।

"हमारे प्राचीन ऋषियों ने शायद स्त्री-पुरुष संबंध की समस्या को अच्छी तरह समझा था। उनका अंतिम उपदेश था—अग्नि और घृत को कभी पास न आने देना।"

शिवसाधन ने अपने अनुसंधान की बात उठायी। "आर्थर, अच्छी ख़बर है। उस साइकिल-मोटर-पंप में मैं आशा की ज्योति जलते देख रहा हूँ। वह चीज़ अब ख़याली-पुलाव नहीं है। ऐसी व्यवस्था संभव है कि डीज़ल तेल के ख़र्च की ज़रूरत ही न रहे। आर्थर, महात्मा गांधी बहुत समय पहले कह गये हैं कि हमारे गाँव के लोगों को यथासंभव आत्मनिर्भर बनना चाहिए। कौन-सा देश कब थोड़ा-सा तेल दे देता कि हमारे ग़रीब किसान के घर रोशनी जले और खेतों में किसानी का काम शुरू हो, यह भी अब पक्का नहीं रहा है।"

आर्थर बोले, "शिव, मैं बाहरी आदमी हूँ। कितनी भी सदिच्छा रहे, तुम लोगों के देश की अंदरूनी समस्या किसी तरह भी नहीं समझ सकूँगा। जिस देश में हम व्यापार करने आये हैं, उस देश के लोगों की सलाह बिना भला काम कैसे होगा?"

शिवसाधन ने धन्यवाद देकर कहा, "आर्थर, पहिये की सहायता से शक्ति उत्पादन की खोज में अभी भी बहुत काम करना होगा। यह काम मेरे उस मिनी पंप के सेट की तरह आसान न होगा। तरह-तरह के परीक्षणों में रुपये भी काफी लगाने पड़ेंगे। इस काम में टेनवर इंडिया ही मेरा एकमात्र सहारा है।"

शिवसाधन ने लक्ष्य किया कि आर्थर आज काफ़ी गंभीर रहे हैं। उनका स्वभावगत सौजन्य भी अब बहुत कम प्रकट हुआ है।

फिर भी शिवसाधन ने सभी जरूरी बातें आर्थर को सुना देना चाहीं। "आर्थर, मैं जानता हूँ कि बहुत-से लोग शायद तुमसे पूछें कि अनुसंधान पर लगाये जाने वाले रुपये कहाँ से आयेंगे? मैंने हिसाब लगाया है कि मिनी मोटर पंप से मिलने वाले लाभ का रुपया कई बरस तक ठाकुरपुर में अनुसंधान और विकास पर लगाना होगा।"

मिनी पंप सेट का कारखाना लगाने का काम बिजली की तेजी से समाप्त करने के लिए शिवसाधन अधीर हैं, यह बात आर्थर समझ रहे हैं।

आर्थर बोले, "मैं तुम्हारी भरसक सहायता करता रहूँगा, शिव! जमीन ख़रीदने का झमेला नहीं है—शालीमार में शुरू के जमाने से अच्छी-खासी जमीन पड़ी है। भास्करन ने एक बार उस जमीन को बेचकर लाभ कमाने की सलाह दी थी। मैं तैयार न हुआ। कंपनी के भविष्य की भी तो सोचनी है।"

शिवसाधन यहाँ से सीधे ठाकुरपुर चले जायेंगे। बहुत-सी ड्राइंगें आज रात ही तैयार करनी पड़ेंगी।

शिवसाधन बोले, "जानते हो आर्थर, कभी-कभी बड़ी मजे की समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। गाँवों की एक समस्या है चूहे। हमारा परीक्षण सेट, जो आराम बाग़ में चल रहा था, अचानक ख़राब हो गया। खबर पाकर भागा। जाकर देखता हूँ कि मिनी पम्प सेट में एक चूहा मरा पड़ा है। जाते ही मैंने डिज़ाइन बदला। एक ऐसा ढक्कन लगाया कि चूहे और तिलचट्टे अंदर न घुस सकें।"

आर्थर बोले, "प्रोफ़ेसर गुटमन की वह बात याद है? टेक्नोलॉजी

जाने बिना देश आगे नही बढता, और देश को जाने बिना टेक्नोलॉजी आगे नही बढ़ती।"

अचानक शिवसाधन को याद आया, "हमारे इस अभागे देश में टेक्नोलॉजी जिनके अधिकार में है, वे देश को जानने को जरूरत नही समझते, और जो लोग देश को जानना चाहते है, वे टेक्नोलॉजी का कुछ नही समझते।"

घड़ी की ओर देखकर शिवसाधन उठ खड़े हुए।

आर्थर न्यूमन आकाश-पाताल की सोचने मे लगे थे। वह डेनवर इंडिया के एम० डी० हैं। अवांछित मातृत्व के बारे मे किसी तरह की उत्सुकता दिखाने का उन्हे अधिकार नही है। भारतवर्ष की हर दीवार के कान होते है। अलका के मामले में आगे वह क्या करेंगे? मामला अगर गैर-कानूनी हुआ तो विदेशी आदमी होने के नाते मातृत्वनाश से वह किसी तरह नही जुड़ सकते। सर एडवर्ड बटमल के दस सूत्रों में यह सूत्र इस देश के बिदेशी व्यवसायी अच्छी तरह मानते आये है: कैसे भी हो, पुलिस के चुंगल में मत फँसो और व्यक्तिगत मामलो में किसी भी तरह से मत उलझो।

अलका ने फिर कुछ रुपये माँगे थे। कहा था, कलेजे में अजीब-सी बेचैनी हो रही है। शरीर में भी ताकत नही है। ऐसा दुर्बल अकुरित शरीर भी अलका ने उपहार मे देना चाहा था, किन्तु आर्थर ने लोभ नही दिखाया।

आर्थर न्यूमन ने अलका को एक बार पहले भी हजार रुपये दिये थे। अच्छी तरह खाने-पीने को कहा था। घर के डॉक्टर को दिखाने के लिए भी कहा था।

"घर का डॉक्टर! कह क्या रहे हो, आर्थर? स्टेथिस्कोप लेकर अगर एक बार मैं खुद देख सकती...!" अलका की बात बीच में ही रह गयी थी।

गर्भवती होने के बारे मे जिंदगी मे कितनी बार पढा था, लेकिन यह शब्द इतना कुत्सित हो सकता है इसे पहली बार इस विदेशी धरती पर खड़े होकर आर्थर न्यूमन समझ सके।

"अब तुम मुझे प्यार नही करोगे?" जाते-जाते अलका ने सीधे-सीधे

पूछा।

आर्थर वह बात भूल बैठे थे। उन्हें थोड़ी शर्म आयी और नितान्त सौजन्यवश उन्होंने मधुर चुम्बन के माध्यम से उसके अनुरोध की रक्षा की। किसी रमणी का स्वेच्छा से लिया गया चुम्बन भी ऐसा फीका हो सकता है, आर्थर न्यूमन को पहली बार मालूम हुआ।

आर्थर हर महीने पत्नी को जो रुपये भेजते थे उसमें इस बार कमी पड़ गयी। दो-एक लोकल बिलों के भुगतान मे देरी कर आर्थर किसी तरह इस महीने व्यवस्था कर लेंगे।

क्लब से निकल घर मे घुसते वक्त आर्थर न्यूमन ने देखा कि गेट के पास एक भद्दा नाटा-सा आदमी खड़ा है। उसने आर्थर को देखते ही सलाम किया।

गाड़ी से उतरते ही एक सलाम और बजाकर उसने न्यूमन के हाथों में एक लिफाफ़ा थमा दिया। लिफ़ाफ़ा लेकर साहबी क़ायदे से आर्थर खटखट करते हुए घर मे घुस गये।

गुसलखाने से पंद्रह मिनट के बाद निकलकर आर्थर ने सुना कि आबिद कह रहा है, "एक आदमी बड़ी देर से खड़ा है।" चिट्ठी अभी तक खोली नही गयी थी।

इस बीच जेरी हाजेस सपत्नीक आ गये। वे यहाँ हलके-से एक दौर के लिए चले आये थे।

जेरी की अधेड़ पत्नी के मन में पहाड़-सा कुतूहल था। उन्होंने मजाक किया, "आर्थर, पत्नी के प्रेमपत्र की दूसरी रीडिंग कर रहे हो क्या?"

चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते आर्थर की नाक लाल हो उठी। लिखा था: पत्रवाहक के हाथों कुछ रुपये भेज सकोगे?

पहली बार आर्थर न्यूमन को बेचैनी हो रही थी। आर्थर और अलका के बीच पहली बार किसी अनभिप्रेत व्यक्ति की छाया पड़ी है।

आर्थर ने अपने को शान्त करने का प्रयत्न किया। कुमारी लड़की

होने पर भी अलका ही तो बार-बार उनके पास आयी थी। आर्थर तो कभी नही गये। अलका के पास गाड़ी नही है, आसन्न मातृत्व की आशका से शायद बीमार हो। विवश होकर ही चिट्ठी भेजी है।

लेकिन गेट के बाहर खडा, गन्दे कपड़ों वाला आदमी आर्थर को अजीब-सा लग रहा था। कमजोर क्षणो मे अलका के शरीर के लालच मे वह पड़े। अपने देश में अनेक लडकियाँ उनके कमरे में आयी और आर्थर ने इंद्रिय-द्वार रुद्ध कर उनको साहचर्य नही दिया। कभी भी किसी झझट मे नही पड़ना पड़ा। आर्थर को दुख हो रहा था कि उन्होंने यह बात क्यों नही याद रखी कि इस रहस्यमयी नगरी की स्थिति उनके अपने देश की स्थिति नही है!

जेरी हाजिस और उनकी पत्नी को आर्थर व्हिस्की के गिलास पकड़ा आये। गृहस्वामी की अनुपस्थिति से शायद वे कुछ ऊब रहे हों। हों तो हों। आर्थर न्यूमन क्या करें?

आर्थर न्यूमन अलका के प्रति अपना असन्तोष दूर करने का वहाना ढूंढ रहे थे। जिस स्त्री ने खुशी से उनको अपनी कुमारी देह का उपहार दिया था, जिसके स्वेच्छा सान्निध्य से उनका प्रमत्त शरीर बराबर शान्त हुआ था, उसके प्रति अधिक असन्तोष व्यक्त करना उचित नहीं। न्यूमन अपने को समझा रहे थे। उस गंदे कपड़े वाले आदमी पर वह अकारण सदेह कर रहे थे। हो सकता है कि वह केवल पत्रवाहक हो और उसे कुछ भी पता न हो।

सौ-सौ रुपयो के कई नोट निकालकर आर्थर ने जल्दी-जल्दी एक चिट्ठी लिखी, "जो कहा था वह भेज रहा हूँ। आशा है बहुत जल्दी अच्छी हो जाओगी और कोई खास अच्छी ख़बर दोगी। प्यार, आर्थर।"

लिफ़ाफे को अच्छी तरह चिपकाकर आर्थर ने अलका का नाम लिख दिया। जेरी बोले, "इतनी तकलीफ़ क्यो कर रहे हो? उस आदमी से बात करने के लिए नौकर को भेज दो। कलकत्ता शहर मे तुम जितना ही नौकर-ओकर के ज़रिए और लोगो से डील करोगे, तुम्हारा सम्मान उतना ही बढ़ेगा।"

"अभी एक मिनट," कहकर आर्थर निकल गये। उस आदमी ने लिफ़ाफा लेकर फिर सलाम किया और चला गया।

जेरी हाजेस और उनकी अधेड़ पत्नी को एक और पार्टी मे जाना था। उसके पहले एक 'ड्राप-इन' और था। उन लोगो ने चलने की इच्छा व्यक्त की। आर्थर ने कोई विशेष आपत्ति न की।

आर्थर न्यूमन ड्रिंक लिये अपने कमरे मे बैठे थे। समुद्र-पार से पत्नी ने इस महीने कुछ ज्यादा रुपये मॅगाये थे। नये बेबी के लिए रुपयो का खर्च तो होगा ही। पत्नी को दोष नही दिया जा सकता।

कई दिनों से अलका का भी कोई पता न था। कुछ अजीब-सी आशा थी कि सब ठीक हो जायेगा। भावी संतान की आशंका से मुक्त होकर अलका फिर स्वाभाविक हो जायेगी। आर्थर न्यूमन अभी तक कुछ समझ नही पा रहे थे, कि सारी सावधानी बरतने पर भी ऐसी बात कैसे हो गयी थी? अलका के लिए भी दुख हो रहा था। प्रेम मे अंधी उस प्राच्य रमणी ने उनको स्वेच्छा से शरीर उपहार में दिया था। वह अकारण क्यो कष्ट पाये?

तभी कमरे मे टेलीफोन बोल उठा।

"हलो आर्थर!"

अलका की आवाज़ सुनकर आर्थर को चैन आया। "अलका, मुझे तुम्हारे बारे में बडी फिक्र हो रही है। तबीयत कैसी है?"

"मैं आ रही हूँ। खबर अच्छी है।" अलका ने टेलीफोन रख दिया।

आर्थर खुश लग रहे थे। लेकिन अलका ने यह भी नही पूछा कि आर्थर, फ्री हो या नही! लडकी बहुत आज़ादी ले रही है। अगर सचमुच वैसी कोई अच्छी खबर है तो आर्थर को कोई आपत्ति नही है।

लेकिन इस घर मे उसका अचानक आने से बहुत गड़बड हो सकती है। आबिद को अचानक छुट्टी देकर विदा कर दूंगा। सर एडवर्ड बटमल के दस आदेशों में सावधान किया गया है: क्षण-भर के लिए भी मत भूलो कि प्रत्येक हिन्दुस्तानी नौकर और हिन्दुस्तानी ड्राइवर के एक जोडी फ़ालतू आँखें और कान होते हैं। वे जितने बेवकूफ़ दिखायी देते हैं, उतने बेवकूफ

होते नही है। इंडिया इज ए कंट्री ऑफ़ 'लीकीतुप'। एक तरह की छिपी धूर्तता के लिए भारतीय लोग दुनिया-भर में प्रसिद्ध है।

अचानक छुट्टी पाकर आबिद खुश-खुश बिदा हुआ। कहाँ क्या सामान को रखा है, उसकी एक फेहरिस्त दे गया। लेकिन आबिद से आर्थर न्यूमन ने सभी बातें नही पूछी थीं।

थोड़ी देर बाद ही अलका आयी। साधारण भारतीय औरतों की तुलना मे उसका शरीर कुछ प्रथुल था। रंगत बहुत गोरी न होने पर भी लावण्य की कमी न थी। उसकी हिरनी की-सी काली आँखें आर्थर को पागल कर देती थीं। आज अलका एक मामूली सूती साड़ी पहने हुए थी। और दिनों की तरह उसने शृंगार की ओर ध्यान न दिया था। लिपस्टिक के बिना दोनों होंठ सूखे और निष्प्रभ थे।

आर्थर ने स्वागत किया, "बैठो।"

तभी आर्थर कुछ गंभीर हो गये।

तभी अलका एक हरकत कर बैठी। अचानक बहुत पास आकर, आर्थर को कलेजे से चिपकाकर, उसने उसे दुलारना शुरू किया। "चिट्ठी भेजी थी इसलिए तुम मुझ पर खफा हो?"

आर्थर कहने लगे, "ठीक है। अलका, यह याद रखना होगा कि लंडन का आर्थर और कलकत्ता का आर्थर एक नहीं है। यहाँ वह किसी कम्पनी का एम० डी० है। उसके लिए बहुत बन्धन है, बहुत-से कानून-कायदे हैं।'

आर्थर का सिर अपनी छाती मे खींचकर अलका बोली, "मेरी तबीयत खराब रहती है। आर्थर, तुम गुस्सा करोगे तो कैसे चलेगा? बताओ तो तुम्हारे सिवा मेरा कौन है?"

आर्थर का सारा असंतोष घुल गया। आर्थर को लगा कि उनकी साथिन की छाती के पर्वत-शिखर बीच-बीच में उत्तेजना से काँप जाते हैं। आर्थर को लगा कि असहाय अलका रो रही है।

आर्थर सुसंवाद की बात साफ़-साफ़ नहीं उठा पा रहे थे। अलका को शान्त करने के लिए बोले, "सब-कुछ भूल जाओ, अपनी तबीयत की बात बताओ।"

अलका के चेहरे पर तभी काले बादल जमा होना शुरू हो गये। "मैंने

सोचा था कि तुम ही कुछ ठीक कर दोगे। तुम कितने बड़े आदमी हो। तुम कलकत्ता में बहुत-से लोगों को जानते हो।"

सचमुच, आर्थर बहुत-से लोगों को, बहुत-सी संस्थाओं को जानते हैं। उनके दफ़्तर और कारख़ाने में ढेरों लोग हैं। लेकिन वह किससे कहें कि उन्होंने एक स्थानीय कुमारी बालिका का कौमार्य भंग किया है! कुटिल मिथ्याचार से आर्थर बिलकुल अपरिचित थे। अलका की पीठ पर हाथ फेरते-फेरते उन्होंने स्वीकार किया कि सब-कुछ उनके पास होने पर भी उनका किसी पर कोई अधिकार नहीं है।

अलका बोली, "मुझे नींद नहीं आती। सारे शरीर में दर्द रहता है। उल्टी आती है, खा नहीं पाती।"

ओह! यह विवरण सुनने का आर्थर में ज़रा भी धैर्य नहीं है।

अलका ने गहरी साँस ली। असमंजस में पड़े आर्थर उसके शरीर पर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगे। हाथ फेरने की भारतीय पद्धति उन्होंने अलका से ही सीखी थी।

"अलका, मैं सचमुच दुखी हूँ।"

अलका ने कहा, "आर्थर, मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ। यह अनहोनी न होती तो मैं दुनिया में किसी की भी परवाह न करती।"

आर्थर की गोद में सिर रख आँखें बंद कर अलका सोफ़े पर लेट गयी। "आर्थर, तुमको विश्वास नहीं हो रहा है, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ!"

तभी अचानक बाहर की घंटी बजी। अभी आविद के लौटने की बात तो नहीं थी। ऐसे बेवक़्त तो आर्थर न्यूमन को कोई तंग नहीं करता है।

अलका झट-से उठ बैठी। ब्लाउज़ और साड़ी ठीक-ठाक कर वह दरवाज़े की ओर चली गयी।

आर्थर शंकित हो उठे। कहीं अलका अचानक दरवाज़ा न खोल दे! ऊपर के किरायेदार मिस्टर सचदेव की अधेड़ पत्नी बहुत ही जिज्ञासु हैं। आर्थर से कई बार पूछ चुकी हैं कि उनकी पत्नी कब आयेंगी? बीच-बीच में बिना नोटिस दिये वाणिज्य की देवी लाक्समी का प्रा-सा-दा बाँटने चली आती हैं।

कांच के पीप-ग्र् से बाहर देखते ही अलका आर्थर के पास ऐसी भागी आयी कि जैसे उसे बिजली का झटका लगा हो।

"तुम्हें मैंने बताया नहीं आर्थर, कि अन्त में मुझे छुपकर अपने कजिन ब्रदर की शरण जाना पड़ा। उन्हें इस आशा मे सब बता देना पडा, कि वह कुछ इन्तजाम कर सकें। मैं बहुत परेशान हूँ, आर्थर ! मुझसे कहे बिना ही वह तुमसे मिलने आये है।"

अब सोच-विचार का वक़्त न था। दरवाज़ा खोलकर अलका ने एक अजीब बेढंगे-से आदमी को अंदर घुसा लिया।

"मिस्टर न्यूमन, मेरे कजिन ब्रदर जमालउद्दीन," अलका ने परिचय कराया।

जमालउद्दीन ! मुस्लिम नाम ! आर्थर ने अलका को हिन्दू समझा था। लेकिन भूल निश्चय ही उनकी अपनी थी। किस नाम की जाति क्या है, इतना ज्ञान आर्थर को नही है।

"अरे, तुम यहां हो !" अलका की गोपनीय उपस्थिति पर नये आगतुक ने बहुत अधिक असंतोष प्रगट किया। उसके बाद जमालउद्दीन सीधे काम की बात पर उतर आया।

मां-बाप की जानकारी से परे जान-बूझकर निष्पाप कुँवारी लड़की का सर्वनाश करने के बाद आर्थर साहब का अगला फैसला क्या है ? जमाल-उद्दीन ने जानना चाहा।

अपने पूरे जीवन में आर्थर न्यूमन कभी इतने अपमानित नही हुए थे। बड़ी उम्र की लडकी के सान्निध्य के लिए इस देश मे मां-बाप की अनुमति की जरूरत होती है, आर्थर को इसका पता नही था। यह आदमी भी कैसी गंदी बातें कर रहा है, जैसे भारतीय कन्याओं का कौमार्य हरण करने के लालच से ही आर्थर न्यूमन यहाँ आये हों ! जमालउद्दीन की श्रेणी के लोग डेनवर-कार्यालय में उन्हें सलाम कर धन्य हो जाते हैं, आर्थर न्यूमन उनकी ओर देखते भी नही।

"लड़की को अकेला पाकर, बेवकूफ बनाकर, उसकी इज्जत लूटकर अच्छा नही किया, आर्थर साहब !" अपनी बात को साफ शब्दो में कहने में जमालउद्दीन जरा भी संकोच नहीं कर रहा था।

आर्थर न्यूमन बीच में कहने वाले थे कि जो कुछ हुआ, वह दो वयस्क लोगों के बीच सोच-समझकर हुआ है। इसमें कोई धोखाधड़ी नहीं थी।

लेकिन जमालउद्दीन ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया, "इस देश की अविवाहित लड़कियाँ तुम्हारे लिए लड्डू नहीं है। तुमने समझा क्या है? तुम समझते हो कि कलकत्ता की सब लड़कियाँ वेश्या है? हर एक के पेट मे बच्चा डाला जा सकता है?"

ऐसी अश्लील और कटु बाते सुनकर आर्थर न्यूमन का पूरा शरीर घिनघिना उठा। लेकिन वह चुपचाप खड़े रहे।

इसी बीच अलका ड्राइंगरूम से निकलकर आर्थर के बेडरूम मे चली गयी थी।

जमालउद्दीन ने कहा कि उसकी कज़िन की इज्जत साहब ने ली है, अब उसकी जान भी जाने वाली है।

आर्थर न्यूमन ने स्वीकार किया कि उन्हें नही मालूम कि क्या किया जाये?

इसके बाद जमालउद्दीन ने समस्या के सभी पहलुओ पर विचार किया। साहब के मज़े के नतीजे को सभालने में जमालउद्दीन को बहुत ख़तरो का सामना करना पड़ेगा। इसके बारे मे भी जमालउद्दीन ने साहब को बता दिया।

खर्च-वर्च के लिए जमाल की मांग बीस हज़ार रुपये की थी।

इतने रुपये? आर्थर न्यूमन आश्चर्य मे पड़ गये।

लेकिन जमाल से बातो मे कौन पार पाता? जमाल ने सुना दिया, "आप तो साहब मौज उड़ाकर यहाँ बैठे हिप-हिप हुर्रे करते रहेंगे और मुझे छिपाकर लड़की का इतज़ाम करने मे मौत के पसीनें छूटते होगे। कही कुछ मुसीबत हो गयी तो डॉक्टर, नर्स और मेरे हाथों मे हथकड़ियाँ पड़ जायेंगी।"

आर्थर न्यूमन ने दो दिन का समय माँगा। वह अव्यक्त पीड़ा से छटपटा रहे थे। किसी से सलाह लेने का साहस भी न हुआ। बात जाहिर होने पर केवल पत्नी के मन में ही नहीं, डेनवर इंडिया में भी उनका कोई मान-

सम्मान नही रह जायेगा। फिर यहां के गोरे समाज के मुंह पर जो कालिख लगेगी, वह भी आसानी से नही छूटेगी।

कामकाज परेशान किये हुए थे। आर्थर न्यूमन मीटिंग तक मे अन्य-मनस्क नजर आने लगे थे। फिनान्स-डायरेक्टर भास्करन के साथ बम्बई जाने की बात थी। उसे भी आर्थर न्यूमन ने रद्द कर दिया।

जमालउद्दीन एक बार फिर उनके यहां हाज़िर हुआ। यही बडी बात है कि इस आदमी ने दफ्तर में जाकर शोर नही मचाया। आज अलका नही आयी थी। लेकिन सारी बातचीत आर्थर अलका के सामने ही करना चाहते थे। अकारण ही उसे शारीरिक कष्ट उठाना पड़ेगा।

"आती कैसे? उसकी जो हालत कर दी है। कल से उल्टी कर रही है।" जमालउद्दीन की बातें बडी बेढगी थी।

आर्थर न्यूमन अपने नैतिक दायित्व से नही बच पायेंगे। जमालउद्दीन से सीधे-सीधे बोले, वह खर्च-वर्च तो देना चाहते हैं। लेकिन बीस हज़ार रुपये कहाँ से लायें? टैक्स, मकान और बिजली के बिल चुकाकर और देश मे पत्नी को रुपये भेजकर उनके पास कितने रुपये बचते हैं?

तब जमालउद्दीन ने नरमी से सलाह दी, "ऑफिस से उधार ले लो, साहब!"

ऑफिस से उधार, वह भी गर्भपात के खर्च के लिए! जमालउद्दीन को कौन समझाये कि कम्पनी के क़ानून मे मैनेजिंग डायरेक्टर के उधार लेने पर कितनी अडचनें पेश आती हैं।

जमालउद्दीन ने खुद ही रास्ता दिखा दिया। आपके दस्तखत से अगर मैं ही उधार का इन्तजाम कर दूं तो? धीरे-धीरे उधार चुका दीजियेगा। इस बीच लडकी की इज्जत तो बच सकेगी।

आर्थर न्यूमन ने पार्टी का नाम पूछा। बड़ा बाजार की किसी मारवाडी की गद्दी थी, जिसका डेनवर के साथ कोई सबंध न था। गोपनीय उधार के प्रस्ताव को सुनकर आर्थर न्यूमन को कुछ आशा की किरन दिखायी दी।

लाचार आर्थर न्यूमन ने बीस हज़ार रुपयों की हुडी पर दस्तखत कर दिये। जमालउद्दीन बोला, "सारा रुपया डॉक्टर की जेब में चला जायेगा। आपको

नही मालूम कि नामधाम सब गुप्त रखकर यह गन्दा काम कराना कितना मुश्किल काम है। डॉक्टरों के पास जाते ही वे पेट के बच्चे के बाप का नाम पूछते हैं। बाप का नाम-पता पुलिस को भेजना उनकी ड्यूटी है। लेकिन मैंने कसम खा ली है कि साहब को इस झगड़े में न डालूंगा। जो कुछ कर बैठे हैं, इसके अलावा अब कोई चारा नही है।"

अपमानित आर्थर न्यूमन फिर भी परेशानी से न छूट सके। उन्होंने जमालउद्दीन से अनुरोध किया, "साफ़-सुथरी जगह पर एकदम सही-सही होना चाहिए ताकि बेचारी अलका को बेकार मे ख़तरा न उठाना पड़े।"

दस्तखत की दुबारा पड़ताल कर और गवाह जमालउद्दीन के नाम पर निगाह डालकर न्यूमन साहब के बीस हज़ार रुपयों का हैंडनोट रामनरेश गुप्ता ने अपने अटैची केस में रख लिया। उसके बाद जमालउद्दीन के हाथ पर गिन-गिनकर तीन हज़ार रुपये रख दिये।

मन-ही-मन हिसाब लगाकर जमालउद्दीन बोला, "आपको सत्रह हज़ार रुपयो का लाभ हुआ है।"

"लाभ नही, तीन हज़ार रुपये मिट्टी मे मिल गये। इस दस्तख़त किये कागज़ की कोई कीमत नही है। किसी दिन सुनोगे कि साहब हिन्दुस्तान छोडकर भाग गये।" रामनरेशजी ने भविष्यवाणी की।

जमालउद्दीन के चेहरे की तरफ़ देखकर रामनरेशजी आगे बोले, "तुम लकी आदमी हो। मुफ़्त में तीन हज़ार रुपया।"

"बड़ी मेहनत हुई है, सर," जमालउद्दीन खुद भी आज बहुत खुश था।

आज स्ट्रैंड रोड के 'रे रेस्तराँ' मे रामनरेशजी गगा मैया का पल्ला पकडे बैठे थे। "काम पूरा हो जाये, तब तुम्हें और भी ख़ुश कर दूंगा, जमाल!" रामनरेश ने वादा किया।

"सर, मैं आपका शागिर्द हूँ—जिस तरह आप बता रहे हैं, बिलकुल उसी तरह काम करता चल रहा हूँ।" जमालउद्दीन के मन मे झुरझुरी-सी उठ रही थी।

आज रामनरेशजी वेजिटेबल हॉट-डॉग खा रहे है। गरम हॉट-डॉग पर बहुत-सा टमाटो सॉस लगाकर बोतल को जमाल की ओर बढाते हुए बोले, "तुम्हारी अनवरी बहादुर लड़की है। देखने मे कैसी है ?"

"बहुत ही सुंदर है। इंग्लिश नाच सीखकर घर पर लेटे-लेटे विविध-भारती सुनती रहती है। कोई काम-काज नही। आइये न सर, आज पैरों की धूल दीजिये। कोई खर्च-वर्च नही है।"

रामनरेशजी ने जीभ काटी। "मेरे पिताजी कह गये है कि अपनी शादी-शुदा जनानी के अलावा और सब जनानियों से कम-से-कम बीस गज दूर रहना।" अपनी पत्नी और अपने बाप की पत्नी के अलावा रामनरेशजी किसी और औरत पर विश्वास नही करते।

नयी सफलता पर जमालउद्दीन बहुत खुश था। बोला, "बहुत अच्छी लाइन है, सर ! इतने दिनो तक अनवरी बेकार इधर-उधर भटक-भटककर मर रही थी। इस तरह का केस बरस मे एक-आध हो जाये तो कोई तकलीफ़ न रहे।"

रामनरेशजी बोले, "अनवरी की तकदीर अच्छी है। नया आया विलायती साहब रिलप मे ऐसा डॉली कैच उठा देगा, यह मैं भी न सोच सका था।"

हॉट-डॉग खत्म कर रामनरेशजी ने अन्त में कोल्ड-ड्रिंक का ऑर्डर दिया, और घड़ी की ओर देखकर बाद की ज़रूरी बातें जमाल से ठीक कर ली।

जमाल ताज्जुब में था। "कह क्या रहे है, सर ! इतनी समझ आपके दिमाग से निकली है ?"

"दिमाग़ पीछे है, जमाल साहब ! अभी सारे दाँव तुम्हें नही दिखा रहा हूँ।"

जमालउद्दीन बोला, "सर, बहुत हो गया। और आगे बढने में कहीं मुसीबत मे फँस गया तो ?"

"फँस चुके मुसीबत मे। देख नहीं रहे हो। सब चीजों का हिसाब लगाया हुआ है। फिर तुम्हें बता भी दिया है कि एडवोकेट मिस्टर आलम तुम्हारी तरफ़ रहेंगे। ख़तरा होने पर चले आयेंगे। तुमको अपनी जेब से

एक पैसा फ़ीस भी न देना पड़ेगी।"

•

इसके बाद आर्थर न्यूमन ने कदम-कदम नीचे उतरना शुरू किया। जमाल-उद्दीन ने ख़बर दी कि अलका नर्सिंग होम में भर्ती हो गयी है।

लेकिन सिर्फ़ डॉक्टरी खर्च से कैसे चलेगा? अलका का रोज़गार वन्द हो गया है, उस पर घर की ज़िम्मेदारी है, जमाल को भी काम-काज वन्द करके इसी काम में लगा रहना पड़ रहा है।

दफ्तर और पत्नी को पता लग जाने के डर से, पुलिस और प्रचार की आशंका से बेबस आर्थर न्यूमन एक के बाद एक हैंडनोट पर दस्तख़त कर धीरे-धीरे क़र्ज़े के जाल में फँसते गये।

आर्थर न्यूमन को लग रहा था कि कलकत्ता छोड़े बिना छुटकारा नही है। कई हैंडनोट बड़े बाजार में किसी जगह जमा हो रहे हैं। और ठीक तभी उनकी पत्नी ने कलकत्ता आने की इच्छा लिख भेजी।

लगता है कि अलका में कोई सम्मोहिनी शक्ति है। टेलीफोन पर उसकी आवाज सुनकर आर्थर सामयिक रूप से तन्मय हो जाते हैं। घर लौटते समय किसी दिन अलका को देख आयेंगे।

•

पतितपावन पाइन के कान में सारी तफसीलें नही पहुँच रही थी। एक प्रसिद्ध परामर्शदाता के अनुसार उन्होने वह सब जानना भी न चाहा। लेकिन रामनरेश ने कहा, "पेइन साहब, आपने ऐसा हिसाब लगाकर दिया था कि अब हर क़दम एक-दूसरे से मेल खाता चल रहा है।"

पतितपावन पानू दत्त के घर पर बैठे है। पानू की पत्नी ने पोस्त की *सब्ज़ी और दाल का पहले से ही अन्दाज़ा लगा रखा है।*

पानू दत्त बोले, "पतू, तुम क्या काम के अलावा कोई और बात नही समझोगे? किसके लिए इतना काम करते हो? पतू, तुमको काम का नशा हो गया है।"

पतितपावन मुसकराये। पानू दत्त बोले, "सचमुच तुमने दिखा ही

दिया। कहाँ थे, और स्टेप-बाई-स्टेप कहाँ पहुँच गये हो ? और कहाँ तक उठने की तबीयत है, पतू ?"

आज पतितपावन ने सुनहरा अवसर नही छोड़ा। अचानक बोल पड़े, "तुमको याद है, पानू...?"

"तुम्हारी कौन-सी बात मुझे याद नही है, पतू ? वह जिस दिन नीले रग की हाफ़ शर्ट और काली हाफ़ पैंट पहनकर हमारी पाँचवी कक्षा की तीसरी बेंच पर आकर तुम बैठे थे, उस दिन की बात भी याद है। वह दिन भी याद है, जब तुमने सी० आर० दास की कहानी सुनकर वकील बनने की कामना प्रगट की थी...।"

"वह दिन भी याद है, जिस दिन मुझे साथ लेकर तुम रमाकान्त बोस रोड पर लड़की देखने गये ?" अब पतितपावन ने याद दिलाने में सकोच न किया।

"हाँ, हाँ। मेरे साथ उनकी जान-पहचान थी। उसी संबंध से तो तुमको लड़की दिखाने ले जाने की ज़िम्मेदारी मेरे सर पर पड़ी।"

पानू दत्त ने सिर खुजलाया। "उसके बाद क्या हुआ कि अत मे सबंध ठीक न हुआ। और तुम बिगड गये। उसके बाद तुमने फिर घर-गृहस्थी की ओर कोई रुचि नहीं दिखायी।"

पतितपावन बोले, "पानू, शादी का दिन तक ठीक हो गया था। तभी अतिम क्षणो मे लड़की के पिता को मेरे बारे मे सॉलिसिटर विश्वभर पाल ने रिपोर्ट दी थी—मैं ब्रीफ़लेस वकील हूँ। मेरा वर्तमान या भविष्य कुछ नही है।"

"ओह, इतनी पुरानी सभी बातें इस तरह से तुम्हें अब भी याद हैं !" पानू दत्त की आवाज़ मे आश्चर्य था।

"पतू, तुमने तो कमाल कर दिया। तुम्हारे कैमक स्ट्रीट में दो फ़्लट, बालीगंज में तुम्हारा एयरकंडीशन्ड निजी मकान, बैंक में लाखों रुपये। चुटकी बजाते ही मुवक्किल के काम से तुम विलायत जा सकते हो। तुमसे क़ानूनी सलाह लेने के लिए बड़े-बड़े व्यापारी हत्या दिये पड़े हैं। काम के मारे तुम्हें साँस लेने तक की फ़ुरसत नही। किस साले ने कहा था कि तुम्हारी प्रैक्टिस नही जमेगी, तुम्हारा भविष्य नही है ! अब ये बातें

कोई मानेगा, पतू ?" पानू दत्त ने निश्छल मन से अपने मनोभाव व्यक्त किये।

"पतू, तुम हमारे लिए गर्व की वस्तु हो। तुम कानूनी हिमालय की उत्तुंगता की तरफ उठते जा रहे हो। लेकिन पतू, आजकल मुझे तुम्हारे लिए चिन्ता हो रही है। चढ़ते-चढ़ते ऊपर चढ़ने के नशे में गिर तो नहीं जाओगे ? बहुत ऊपर उठ गये हो, अब और कितना ऊपर उठोगे ?" पानू दत्त ने पूछा।

बहुत अधिक व्यस्तता के बीच कुछ ऐसे क्षण ! आनन्द में मग्न पतित-पावन पाइन को अचानक धक्का लगा। पानू इस तरह पॉइंट ब्लैंक न पूछता तो अच्छा रहता।

पानू ने सचमुच आज उसे सोच में डाल दिया था—'पानू, तुम मेरे प्रिय मित्र हो, तुमसे कुछ छिपाने का कोई अर्थ नही। लेकिन तुमसे भी नही कह पा रहा हूँ कि मेरा ऊपर चढ़ना अभी भी समाप्त नही हुआ है। यह मकान, गाड़ी, विलायत-भ्रमण, इतनी बड़ी प्रैक्टिस से अभी भी मेरा मन नही भरा है। मैं अभी भी अतृप्त रह गया हूँ—सचमुच मेरा भविष्य था, यही जैसे अभी भी मैं प्रमाणित नही कर सका हूँ। विश्वंभर पाल से अंतिम मुकाबला अभी भी बाक़ी रह गया है।' पतितपावन पाइन क्षण-भर के लिए भी नही भूल पाते हैं कि डेनवर इंडिया के चेयरमैन के आसन पर अभी भी विश्वंभर पाल गौरव के साथ बैठे हैं।

पतितपावन ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। "पानू, जान लो कि मुझे अभी और ऊपर उठना होगा।" इसके बाद पतितपावन अचानक चुप हो गये। डेनवर इंडिया के चेयरमैन का महत्व रोनी शक्ल वाले निकम्मे विश्वंभर पाल ने समझा दिया है। पतितपावन ने मन-ही-मन धीरे से पूछा, 'बत्तीस बरस पहले की घटना उन्हे याद है या नही ?'

बत्तीस बरस पहले का खोया हुआ वह स्वप्न पतितपावन फिर साफ़-साफ़ देख रहे थे।

बहुत दिनों पहले की सिनेमा की तसवीर मानो फिर दिखायी जा रही हो। मित्र पानू के साथ रमाकान्त बोस रोड पर उस मकान की एक-मंज़िली बैठक मे, सोफे पर युवक एडवोकेट पतितपावन पाइन बैठे हैं।

पहले मिठाई आयी। शीशे के गिलास मे ठंडा पानी, उसके बाद एक हलके नीले सिल्क की साड़ी पहने, हाथ में चाय लिये, सिर झुकाये, सत्रह बरस की वह लडकी आयी। जैसे सोने की प्रतिमा पूजा के लिए चली आयी हो, जाते-जाते क्षण-भर के लिए युवक पतितपावन के हृदय मे रोमांच उत्पन्न करने के लिए वह रुक गयी हो।

इस सप्तदशी की नाक में फूल था, जो बहुत दिनो अदृश्य रहकर अब फिर से पतितपावन को दिखायी दे रहा था।

मित्र को खोंचा मारकर पानू ने कहा था : "प्रश्न करो।"

क्या प्रश्न करें? प्रथम दर्शन में ही पतितपावन संपूर्ण समर्पण के लिए प्रस्तुत थे।

अंत मे पानू ने सप्तदशी से कहा, "यह मेरे मित्र पतितपावन हैं। बहुत अच्छा लड़का है। बीड़ी-सिगरेट तक नहीं पीता। लेकिन इसे गाना अच्छा लगता है।"

"मुझे गाना गाना अच्छी तरह से नहीं आता," सप्तदशी शान्तिरानी बोली थी।

पीछे से शान्तिरानी के पिता कह रहे थे, "खूब गाना आता है। जरा शरमा रही है। सुनेंगे?"

शान्तिरानी ने तब बडी लाचारी से पतितपावन की ओर देखा। उधर पानू की नजर ही न गयी। मुग्ध पतितपावन उस दृष्टि से धन्य हो गये। पतितपावन ने स्वयं ही उस शान्त श्रीमयी को गाने की परीक्षा से छुटकारा दे दिया।

"कुछ-न-कुछ सवाल तो करना ही होता है, पतू!" पानू ने दबाव डाला।

उस समय पतितपावन नीली रेशमी साडी के आकाश से निकलती दो स्वप्निल आँखों, सोने के कंकणों से श्रीमंडित नरम सुनहरे हाथों की अपलक दृष्टि से पूजा कर रहे थे।

पानू के सवाल पर पतितपावन तैयार हो गये। पतितपावन आप या तुम कुछ भी न कह सके। केवल बोले, "नाम?"

सोने की गुड़िया बोल पड़ी, "शान्तिरानी पाल।"

"लिखने को कहो।" पानू ने दोस्त को सलाह दी।

सोने की प्रतिमा अब बिना कहे ही हिली। चूड़ियों की वह खन-खन अभी तक पतितपावन के मन में रिकार्ड है। आँखें बन्द कर, अँधेरे में मन का स्विच दबाकर थोड़ी अपेक्षा करने पर वह किंकिनी नाद पतितपावन अभी भी सुनते है।

कागज था, लेकिन आस-पास कलम न था। अन्दर कोई क़लम की तलाश मे जाने की चेष्टा मे था कि झझट दूर करने के लिए पतितपावन ने अपना पेन ही सप्तदशी की ओर बढ़ा दिया। कलम देते समय क्षण-भर के लिए असावधानी से स्पर्श हो गया। पतितपावन के सारे शरीर में बिजली दौड़ गयी।

नीले कागज पर पतितपावन की कलम से कोमल-कोमल हाथों द्वारा लिखने का वह दृश्य पतितपावन को अनेक बार याद हो आया है—इतने दिनों बाद भी ज़रा-सा भी धुंधला नहीं पड़ा है।

कुमारी शान्तिरानी पाल। सप्तदशी कुमारी ने कागज को अपने ही हाथों पतितपावन की ओर बढ़ा दिया था। उनके चेहरे पर परीक्षार्थिनी की-सी घबराहट, लेकिन आँखो में पतितपावन पर विश्वास की झलक थी। पतितपावन को लगा, जैसे अत्यंत मूल्यवान ऑटोग्राफ मिल गये हों।

वही हस्ताक्षर, नीले कागज का वही टुकड़ा, पतितपावन ने बहुत संभालकर रख रखा है। और जिस कलम को शान्तिरानी का स्पर्श मिला था उसी क़लम से अपमानित पतिलपावन भविष्य की खोज में कानून की साधना करते आ रहे है।

उसके बाद पानू के घर दोनों की जब आकस्मिक मुलाकात हुई थी तो किस तरह अनायास ही उसने पतितपावन से बातें की थी। तब ब्याह का दिन तय हो गया था। तभी शान्तिरानी ने पतितपावन के हृदय-कमल मे अपना आसन जमा लिया था।

लेकिन इतना आगे बढ़कर भी अंत मे कुछ न हुआ। शान्तिरानी के दूर के रिश्ते के भाई, लॉयन एड लॉयन के वकील विश्वभर पाल अचानक उस समारोह मे आ धमके। बोले, "मैंने वक़्त रहते ही पता लगा लिया।

एक ब्रीफ़लेस वकील से शान्ति की शादी करोगे ? मुंहचोर पतितपावन—कोई काम नहीं उसके पास। उसका न तो वर्तमान है, न कोई भविष्य।"

पुराने दिनों की बात करते हुए पानू बोले, "पतू, तुम कितने ज़िद्दी हो। ब्रह्मा के विधान से अनगिनत संबंध होते हैं, अनगिनत टूटते हैं। तुम एक ही रट लगाकर बैठ गये। बोले, पहले भविष्य बना लूं।"

ज़रा रुककर पानू बोले, "वह आदमी कैसा बेवकूफ़ था, वह विश्वभर पाल। लेकिन पतू, सच कह रहा हूँ, मैंने भी कभी नहीं सोचा था कि वकील के रूप में तुम्हारा भविष्य ऐसा होगा। इतने बड़े-बड़े मुवक्किल तुम्हारे पीछे-पीछे इस तरह भागते फिरेंगे। शान्तिरानी कहीं देख पाती कि तुम क्या हो गये हो!"

"पता है पतू, चार्ल्स डिकेन्स—वही जो डेविड कॉपरफील्ड के लेखक हैं, उनके साथ भी यही हुआ था। एक लड़की से बहुत प्यार किया था। लेकिन उन दिनों डिकेन्स की नौकरी अच्छी नहीं थी, इसलिए लड़की वालों ने शादी नहीं की। बहुत दिनों बाद डिकेन्स कहीं भाषण देने गये तो, उस समय उनका नाम, विश्वविख्यात था। लंच खाने के लिए बहुत अनुनय-विनय कर उन्हें एक परिवार में ले जाया गया। वहाँ जाकर डिकेन्स ने देखा कि घरवाली उनकी वही प्रेयसी थी। एक बैंक के मैनेजर की पत्नी बन गयी थी। जिन्होंने मिसेज डिकेन्स बनने का सुअवसर बड़ी अवज्ञा के साथ ठुकरा दिया था, समय के व्यंग्य से वही डिकेन्स के साथ लंच खाकर धन्य हो रही थी।"

पानू को बड़े किस्से आते हैं, पतितपावन यह खूब जानते हैं। समस्त संकोच छोड़कर वह अचानक बोले, "शान्तिरानी का अन्त में क्या हुआ, पानू?"

"कहीं मामूली-सी शादी हो गयी थी। उसके बाद लोगों की भीड़ में कहीं खो गयी। लेकिन जो भी हो, अभी तक क्या शान्तिरानी वही छोटी-सी शान्तिरानी होगी। इतने दिनों में ज़रूर दादी बन गयी होगी। सभी तो मेरी तरह बिना गोल किये खेल ख़त्म नहीं करते।"

"ओह पानू! तुम अजीब बातें करते हो।"

"पतू, तुम तो खेल में उतरे ही नहीं, मैदान में घुसने की राह में

कोई कागज-किताब लेकर बारासात या दमदम के बगीचे वाले मकानों मे चले जाते और व्यापार के वरपुत्रों की उस दिन की सारी फ़िक्र रेस के मैदान के लिए सरक्षित रहती।

सलाह और कान्फ्रेंस के झझट से बचकर इसीलिए पतितपावन शनिवार को कानून की नयी-नयी बारीकियों के बारे में स्पेशल ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करते। जिन कामों में पिछड जाते, उन्हे संभाल लेते और केसो के मसौदे लिखवाते।

लेकिन आज इन सब कामों मे रुकावट पड़ी। घनश्याम कानोडिया के दफ़्तर से खबर आयी कि घनश्यामजी खुद उनसे मिलने के लिए निकल पडे है। घनश्यामजी खुद उनके इस दफ्तर मे अकसर नही आते। जरूर कोई अर्जेन्ट मामला है।

कुछ देर बाद ही आँधी की तेज़ी से मिस्टर कानोडिया आये। सफ़ारी सूट पहने घनश्यामजी के माथे पर आज चन्दन की बिन्दी भी नही थी। स्नान गोविन्दपुर क्लब मे ही कर लिया है, या किसी खास वजह से उन्हें स्नान करने का समय ही नही मिला।

घनश्यामजी आज सुखद उत्तेजना से पतितपावन के बहुत पास आकर बोले, "पतितजी, हाथ मिलाइये।" खुश होकर पतितपावन से कहा, हाथ न मिलायेंगे तो भविष्य मे वह कोई सम्बन्ध न रखेंगे। हाथ मिलाने के नाम पर उन्होने पतितपावन को अपनी बाँहों मे करीब-करीब जकड़ लिया।

उसके बाद पतितपावन को खुशखबरी मिली। मात होने में देर नही है। आर्थर न्यूमन अन्त मे घनश्याम कानोडिया को डेनवर इडिया के शेयर बेचने को तैयार हो गये है। इस आशय की चिट्ठी और टेलेक्स विलायत भेजने के लिए आर्थर न्यूमन ने वचन दे दिया है।

"क्या दवाई दी, मिस्टर पेइन!" खुद मिस्टर घनश्याम कानोड़िया ने आश्चर्य प्रगट किया और पतितपावन की कानूनी अक़्ल की तारीफ़ की।

"ओह मिस्टर पेइन, आपसे क्या बताऊँ! जो आदमी मुझसे गोविन्दपुर गॉल्फ़ क्लब में बात करने को तैयार न था, वह अब मेरे हाथों से चारा ले रहा है। शेयर के बारे मे विलायत को जो चिट्ठी लिखेगा उसका ड्राफ़्ट उसने मुझे दिखा दिया है।"

"फ़ेरा, रिज़र्व बैंक, सरकार की परमिशन—अभी बहुत कुछ करना है।" पतितपावन ने कहा। "आजकल विदेशी कम्पनी खरीदना आसान काम नहीं है।"

"आप हैं तो सब ठीक हो जायेगा।" घनश्याम कानोड़िया ने फ़ौरन जवाब दिया।

"न्यूमन साहब विलायत में हमारा नाम प्रस्तावित करें, तभी सब ठीक होगा।"

तभी घनश्यामजी ने खुश होकर कहा, "मियाँ-बीबी राजी तो क्या करेगा काज़ी?"

घनश्यामजी की आँखें खुशी से दमक रही थीं। उन्होंने फिर कहा, "आपने तो कहा था कि ऐसा होने पर स्विटज़रलैंड में रहने वाले भतीजे रामेश्वर के नाम पर विदेशी मुद्रा से शेयर खरीदने होंगे। कोई दिक्क़त नहीं—अडर इन्वायेस्ड पोर्ट की दो नम्बर विदेशी मुद्रा तो है ही। फिर राधेश्याम की चोटी कौन पकड़े? आपकी सलाह के मुताबिक़ राधेश्याम ने पासपोर्ट बनवा लिया है।"

पतितपावन अविश्वसनीय सफलता का स्वाद लेने की कोशिश कर रहे थे। यह जानना चाहते थे कि किस तरह ठीक समय पर घनश्यामजी ने अखाड़े में उतरकर आर्थर न्यूमन के साथ मामला पक्का कर लिया?

घनश्यामजी बोले, "वह सब आप बाद में सुनेंगे, मिस्टर पेइन! लेकिन अभी मिस्टर न्यूमन कमरे के बाहर आपका इन्तज़ार कर रहे हैं। आपको उनकी सहायता करनी होगी।"

पतितपावन के उत्तर की अपेक्षा न कर घनश्यामजी बाहर निकल गये और आर्थर न्यूमन को लेकर कमरे में आये।

इस समय विनय से विगलित घनश्यामजी कुछ और ही थे। वह पतितपावन से बोले, "अपने परम मित्र मिस्टर आर्थर न्यूमन को लाया हूँ। आपको मदद करनी होगी, मिस्टर पेइन! परम गोपनीय मामला है, मिस्टर पेइन! मैंने मिस्टर न्यूमन से वायदा किया है कि एक नम्बर का वकील करके मैं सारी समस्या ठीक करा दूंगा। कोई गडबड़ न होगी।"

डेनवर के युवा मैनेजिंग डायरेक्टर ने ज़रा असहाय भाव से पतित-

पावन से कहा, "आपकी मदद और सलाह की मुझे
मिस्टर पाइन !"

क्षण-भर के लिए पतितपावन ने आँखें झपकायी।
पानू की रहस्य कथा की-सी बन गयी थी।

घनश्यामजी ने फिर पतितपावन से कहा, "मिस्ट
देखना ही पड़ेगा। खर्च की आप फ़िक्र न करें, मैं हूँ ही
गोपनीय रखनी पड़ेगी। आप लोग बात करें, गोपनी
नहीं रहना चाहता।" यह कहकर घनश्याम कानोडिय
बिदा ली।

आर्थर न्यूमन ने अनवरी उर्फ अलका और जमालउद्दी
पावन को निश्छल भाव से सभी बातें बतायीं।

"मिस्टर पाइन, भारतवर्ष के मोह ने मेरी बुद्धि
तरह जड बना दिया है। यह मानना ही होगा कि मैंने
से निकम्मा साबित किया है," आर्थर न्यूमन धीर भाव

"मैं जिस हालत को पहुँच गया हूँ, उसमें आत्मह
रास्ता नहीं रहता। लेकिन ठीक समय फ़रिश्ते की त
के लिए मिस्टर घनश्याम कानोडिया आगे आये हैं। f
मुझे अभय दिया है और कहा कि मेरी कुल समस्याएँ
ठीक करा देंगे, किसी को कुछ पता न चलेगा। उनके
का अंत नहीं है।"

पतितपावन गंभीर भाव से सुनते जा रहे थे।
बेचैनी होने पर भी उसे बाहर व्यक्त नहीं किया।

पतितपावन की व्यावसायिक बेचैनी बढ़ती जा
शोचनीय अवस्था में आर्थर न्यूमन को अपनी आँखों
जरा भी अच्छा न लग रहा था।

आर्थर न्यूमन बोले, "मैं बरबाद हो गया हूँ, मि
पत्नी को इस देश में अंतिम क्षणों में आने से रोक
बाल-बाल कर्ज में बिंध गया है। अब देश लौटकर मैं

बहुत जरूरत है,
सारी घटना क्रमश
र न्यूमन का काम
लेकिन बात परम
बातों के बीच में
ने नाटकीय ढंग से
के बारे में पतित-
और शक्ति को पूरी
अपने को पूरी तरह
से कहने लगे।
या के अलावा कोई
यह मेरी मदद करने
स्टर कानोडिया ने
ह गोपनीय ढंग से
प्रति मेरी कृतज्ञता
बातें सुनकर मन में
रही थी। ऐसी
सामने देखना उन्हें
टर पाइन! अपनी
दिया। मेरे सिर का
नये सिरे से जीवन

आरंभ करना चाहता हूँ। यहाँ सब-कुछ अचानक बुरी तरह से उलझ गया है, मिस्टर पाइन !"

"अनवरी से अपनी तथाकथित शादी के बारे में कह रहे हैं न ? कागज़-पत्तर तो देखूं।"

पतितपावन ने कागज़-पत्तर पढे। "शादी करना जितना आसान है, शादी तोड़ना भी उतना ही आसान है। आप फिक्र न करें, मिस्टर न्यूमन !" पतितपावन ने सात्वना देने का प्रयत्न किया।

यह केस लेना ठीक रहेगा या नही, पतितपावन पाइन तय नहीं कर पा रहे थे। शायद यही कहना उचित होगा कि मिस्टर न्यूमन, आप किसी और के पास जाइये। इस शहर में भरोसे लायक कानूनी सलाह देने वालों की कमी नहीं है।

लेकिन अचानक लगा कि घनश्याम कानोड़िया ने बाज़ी अभी भी पूरी तरह जीती नही है। अब तो पूरी तरह से बाज़ी न्यूमन की वर्तमान और भविष्य की सुरक्षा पर निर्भर करती है।

लेकिन पतितपावन को इससे क्या लेना-देना ? वह तो क़ानूनी सलाहकार हैं। कानून का बौद्धिक व्यवसाय तो व्यक्ति विशेष को महत्व नही देता। ऐसे बहुत-से प्रश्न मन मे उठ रहे थे। लेकिन पतितपावन के मानस-चक्षुओं ने अचानक विश्वंभर पाल का चेहरा देखा—विश्वंभर अभी भी डेनवर इंडिया की कुर्सी पर अधिकार किये हुए हैं। बत्तीस बरस पहले का पुराना अपमान सूद सहित लौटा देने का सुनहरा अवसर हाथों के बहुत नज़दीक झूल रहा है। डेनवर इंडिया के चेयरमैन का आसन पतितपावन के लिए छोड़कर विश्वंभर पाल जब हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ेंगे तो पतितपावन सबके सामने अपना हाथ खींच लेंगे। कहेंगे, 'मिस्टर पाल, आपने तो बत्तीस बरस पहले ही मेरे भविष्य के बारे मे अंतिम निर्णय दे दिया था। आपने शान्तिरानी के पिता से कहा था कि पतितपावन पाइन का कोई भविष्य नही है।'

प्रतिहिंसा के विषैले साँप को मन मे दबाकर पतितपावन ने फिर आर्थर न्यूमन पर नज़र डाली।

"इस समय आपकी मुख्य समस्या क्या है ?" पतितपावन ने सवाल

किया।

"कलकत्ता मेरे लिए दुःस्वप्नों की नगरी बन गया है, मिस्टर पाइन ! जानता हूँ, मेरी कमअक़्ली ही मुसीबतें लायी है। लेकिन आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचे बिना किसी भी तरीके से मुझे देश लौट जाने दीजिये।"

"देश का बेटा देश लौटे, इसमें किसी को क्या?" पतितपावन ने सान्त्वना दी।

लेकिन आर्थर न्यूमन का चेहरा और भी गंभीर हो गया। पता चला है कि ये लोग अब किसी तरह से भी न्यूमन को देश न लौटने देंगे। एडवोकेट मिस्टर आलम के साथ उनकी यही सलाह हुई है कि वे आर्थर को अदालत में खींच ले जायेंगे और इंजंक्शन लेंगे। दूसरी पत्नी अनवरी से तलाक़ लेने पर ही बात बनेगी। शादी के दस्तावेज़ पर वादा किया रुपया तो वापस देना ही होगा और शायद नौ महीने के लिए खाना-कपड़ा भी। इस बीच कोई बाल-बच्चा हो जाये तो उसकी ज़िम्मेदारी भी उठाना होगी।

कानून, अदालत, तलाक की रजिस्ट्री का नोटिस सुनते ही न्यूमन का गुलाबी चेहरा कागज की तरह फीका पड़ गया। "मिस्टर पाइन, मुझे एक बार इस मकड़ी के जाले से निकलने में मदद कीजिये। आपका और मिस्टर कानोडिया का मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।

"मिस्टर कानोड़िया जैसा वंडरफुल आदमी कोई नहीं। गुप्त रूप से खबर पाकर वह ही मुझे छिपकर सावधान करने आये थे—मिस्टर न्यूमन, किसी इंटरेस्टेड पार्टी ने आपको ब्लैकमेल करने के लिए फंदा फेंका है। आप डरें नहीं। अगर कभी कोई जरूरत हो तो मुझसे बताइयेगा।"

इसके बाद ही डेनवर शेयरों की बिक्री की बात उठी होगी, पतितपावन समझ गये।

'वेल डन, घनश्यामजी,' पतितपावन ने मन-ही-मन कहा।

पतितपावन ने फिर आर्थर न्यूमन से विचार-विमर्श शुरू किया।

अनवरी के साथ दूसरी शादी ने आर्थर न्यूमन को चक्की के पाटों के बीच डाल दिया था। मन की ऐसी हालत थी कि आर्थर ने अंत में आत्महत्या का अंतिम मार्ग चुना था।

पतितपावन ने फिर आशा की ज्योति दिखायी। बोले, "डोन्ट

वरी !"

लेकिन इस कठिन परिस्थिति में मिस्टर पाइन किस तरह सब-कुछ ठीक करने का भरोसा दिला रहे है, बुद्धिमान आर्थर न्यूमन की समझ में नहीं आ रहा था।

लेकिन आर्थर न्यूमन यह नही जानते थे कि उनका केस किन सुरक्षित हाथों में पहुँच गया है। पतितपावन किसी भी तरह हार मानने वाले नहीं। किसी भी चुनौती को जीतने के अंधे जोश में पतितपावन बढते चले जाते थे। इसी जोश में असभव लगने वाली परिस्थिति मे भी पतितपावन के गले में जयमाला आ गिरती थी।

पतितपावन ने न्यूमन से कुछ घटो का समय माँगा।

कुछ देर आँखें बद कर अपनी कुर्सी पर बुद्ध की तरह कानूनवेत्ता पतितपावन ध्यानावस्थित बैठे रहे। उसके बाद रामनरेश गुप्ता को फ़ोन किया।

"यह सब क्या मामला है, गुप्ताजी ? न्यूमन साहब के केस में इतनी ज्यादती क्यो ? सीधे-सादे आदमी को कोर्ट मे घसीटने की कोशिश क्यों की जा रही है ? ज्यादा खीचतान करने से आदमी की शर्म-हया ख़त्म हो जाती है, गुप्ताजी !"

रामनरेशजी की राय भी अलग न थी। बोले, "आई ऐम वेरी सॉरी, मिस्टर पेइन ! मैंने जमालउद्दीन से जोड़-तोड़ की थी। लेकिन अब सारा मामला अनवरी के हाथों मे चला गया है। शिकार पर जाकर लगता है कि लड़की खुद शिकार हो गयी है। वह साहब को किसी तरह भी छोड़ना नही चाहती। उनकी दो नंबर की पत्नी बनकर ही वह बाकी जीवन बिता देना चाहती है।

"हलो, हलो, मिस्टर पेइन ! सुना है, अनवरी कहती है कि ऐसा आदमी उसने जिंदगी मे नही देखा—ऐसी नाक, चेहरा, ऐसा व्यवहार, ऐसी कमाल की जिम्मेदारी !"

"उन सारी तफ़सीलों की मुझे जरूरत नहीं है, काम की बात कीजिये, गुप्ताजी!" यह कहकर गुप्ताजी को पतितपावन ने समझा दिया कि वह बहुत व्यस्त हैं।

रामनरेश बोले, "वह लड़की सीधे आर्थर साहब के पास भागी-भागी पहुँची। साहब मिले नहीं। उसे डर था कि साहब अगर सचमुच देश छोड़-कर चले जायेंगे तो साहब को समझाने का उसे मौक़ा ही नहीं मिलेगा। खुद ही वकील मिस्टर आलम के पास पहुँची। आलम भी अजीब आदमी है। अनवरी को कोर्ट में जाकर साहब को विदेश जाने से रोकने के लिए भड़का रहा है। जमालउद्दीन की बात कोई नहीं सुनता।"

टेलीफ़ोन रखकर पतितपावन अपनी गाड़ी में जा बैठे। नेपाल रक्षित से कहा, "रिपन स्ट्रीट।"

"तले हुए गोश्त की दूकान के बाद पड़ने वाले उस टूटे दोमंजिले मकान के सामने।"

नेपाल ड्राइवर को अच्छी तरह याद है। नेपाल जहाँ एक बार हो आता है उस जगह को भूलता नहीं है। यहाँ तो पतितपावन मिस्टर फ़िलिप की खोज में कुछ दिनों पहले ही गये थे।

जापानी मिस्टर हरतन के मामले में अनवरी के बारे में पता लगाने के लिए एंग्लो-इंडियन फ़िलिप को पतितपावन ने ही लगाया था। फ़िलिप रेल में काम करते थे। अब रिटायर होकर बूढ़े फिलिप फिरंगी की बस्ती के आधे वकील, आधे जासूस बन गये हैं। इस बस्ती के तमाम चायवालों, रिक्शावालों के केस लेकर पुलिस के पास फ़िलिप साहब ने ही भाग-दौड़ की है।

रिपन स्ट्रीट के ढाई सौ बरस पुराने मकान के दोमंजिले कमरे में बैठे, बूढ़े फिलिप अपनी मुवक्किला मिस मर्फ़ी के बिजली के कनेक्शन को काट देने के मामले को लेकर, कलकत्ता इलेक्ट्रिक सप्लाई कार्पोरेशन को कानूनी चिट्ठी लिख रहे हैं।

पतितपावन को देख सारा काम बन्द कर मिस्टर फ़िलिप उठ खड़े हुए। एक टूटी-सी कुर्सी खींच उन्होंने विशिष्ट अतिथि को बैठने को दी।

फ़िलिप बोले, "मिस मर्फी, आप चिट्ठी पर यही दस्तख़त कर जाइये। उसके बाद मैं खुद इलेक्ट्रिक ऑफ़िस जाऊँगा। देखूँगा कि कौन-सी हिम्मत लेकर उन्होंने लाइन काटी है।"

पतितपावन ने फुसफुसाकर उनसे बातें की। उसके बाद स्वर को स्वाभाविक बनाकर पतितपावन बोले, "जमालउद्दीन की एक बहिन है अनवरी।" तभी बूढ़े फिलिप हा-हा कर हँस पड़े।

"हँस क्यों रहे है?"

"हँस इसलिए रहा हूँ कि पति-पत्नी को भाई-बहन बना दिया।"

पतितपावन के हाथ जैसे पेड पर चढ़ते ही गुच्छा लग गया था। वह फिलिप के चेहरे की ओर देखते रह गये।

"उस बार मिस्टर हरतन के मामले में उनके बारे मे खूब बारीकी से खोजबीन की थी। वह बदमाश क्या फिर मिस्टर हरतन को तग कर रहा है?"

खाँसकर गला साफ कर फ़िलिप फिर बोले, "अच्छा है, वह उनसे ज़रा दूर ही रहे। आजकल उनकी हालत बहुत अच्छी चल रही है। मेरी एक मुवक्किला उनके घर पर नौकरानी का काम करती है। अनवरी ने अब एक आदमी खाना पकाने के लिए भी रख लिया है। और इस बस्ती मे जब वह पहली बार आयी थी तो कितनी तकलीफ़ में थी!"

पतितपावन ने मुँह खोला, "जमालउद्दीन के साथ शादी के बारे में क्या कह रहे थे?"

"शायद यकीन नही हो रहा है? सोच रहे होंगे कि ऐसी गुड़िया-सी लडकी, ऐसी मीठी मुसकान वाली युवती किस तरह थर्ड क्लास जमाल-उद्दीन से शादी करेगी? ठहरिये, ठहरिये। इसका सबूत पेश करने में ज़रा-सी भी देर न लगेगी। हरतन साहब के मामले मे सभी गुप्त बातों का पता उनकी नौकरानी की मार्फ़त लगाया गया था। लेकिन आपने उस समय संपर्क न किया। उस बार अगर आप मेरी फीस पूरी-पूरी दे देते तो सारे गुप्त कागज़-पत्तर आपके पास होते।"

फिलिप साहब स्टील की एक जंग लगी प्रागैतिहासिक अलमारी मे नीले रंग की एक फ़ाइल निकाल लाये।

"चाय चलेगी ? गेट के सामने ही मेरे मुवक्किल का चाय का स्टाल है। गरम पानी से दो बार कप धोकर चाय ले आयेगा ?" मिस्टर फ़िलिप अतरंग होकर पतितपावन की ख़ातिर करना चाह रहे थे। लेकिन पतितपावन ने कोई रुचि न दिखायी।

अब काम का वक़्त था। लग रहा था कि काम दिखाने का सुनहरा अवसर इस समय पतितपावन के आस-पास चक्कर लगा रहा है।

फ़िलिप साहब ने फ़ाइल के काग़ज़ों पर नज़र डालकर कहा, "मिस अनवरी रहमान ने...जमालउद्दीन से शादी की...।" फिर विवाह का तारीख़, दिन और समय फटाफट पढ़ डाला।

पतितपावन को अभूतपूर्व खुशी हुई। पतितपावन मुवक्किल के स्वार्थ के लिए अपनी क़ानूनी अक़्ल ज़रूर लगाते थे, लेकिन इस समय भाग्य-देवी उनकी मदद कर रही थीं, वरना यह सब रेडीमेड सूचना उनके हाथों इस तरह क्यों पड़ जाती ?

मिस्टर फ़िलिप के साथ चुप-चुप कुछ देर और भी बातें हुईं। काग़ज़-पत्तर बैग में रखकर स्पेशल सूचना की तलाश में पतितपावन सरकार के होम डिपार्टमेंट की ओर भागे। सौभाग्य से वहाँ भी कुछ जान-पहचान के आदमी थे।

होम डिपार्टमेंट में पतितपावन ने काफ़ी वक़्त लगाया।

आर्थर न्यूमन के छुटकारे की असली कुंजी इसी ऑफ़िस की एक फ़ाइल में ख़ामोशी से पड़ी है।

अनवरी के बारे में बहुत-सी बातें कानों सुनी थीं, ठोस प्रमाण कुछ भी नहीं था। न्याय के पक्षधर न्यायावतार प्रमाण के अलावा कुछ नहीं मानते। इसलिए चिट्ठी-पत्री की तारीख़, फ़ाइल का नंबर और दूसरे विवरण पतितपावन विशेष सावधानी से नोट करने लगे।

होम डिपार्टमेंट से बाहर निकलकर जब पतितपावन गाड़ी में बैठे तो खुशी से फूले हुए थे। भाग्य की हवा उनकी पालों वाली नाव को तेज़ी से धकेले जा रही थी। उनके सपने को पूरा होने में अधिक समय शेष न था। सौभाग्य का सहारा न मिलने पर होम डिपार्टमेंट में अनवरी की फ़ाइल का पता न लगता। यह काम भूसे की ढेरी में सुई मिल जाने की तरह

का था।

ड्राइवर की सीट पर नेपाल रक्षित अभी भी चुपचाप क्यों बैठा है ? पतित-पावन बेचैन हो उठे। लक्ष्य की ओर तीव्र गति से बढ़ने के प्रयत्न में पश्चिमी बंगाल के लोग किसी की सहायता नहीं करते। खुद भी नहीं हिलेंगे, दूसरे को भी नही बढ़ने देंगे।

"कहाँ चलें, सर ?"

अँ ! नेपाल रक्षित की बात पर ध्यान आया, कहाँ चलना होगा ? यह अभी तक पतितपावन ने ड्राइवर से नही कहा था।

नेपाल रक्षित अच्छी तरह जानता है कि सारी दुनिया का यही हाल है। तेज रफ्तार से चलने का हुक्म होगा, लेकिन कहाँ जाना है इसका पता नही।

"अब क्या सर, मिस्टर पन्नालाल दत्त के यहाँ ?

नही, इस समय पानू के यहाँ जाने का सवाल ही नही उठता। पतित-पावन सीधे अपने दफ़्तर पहुँचना चाहते हैं।

लगता है कि दफ़्तर में घुसते उनके दोनों टेलीफ़ोनों की निगाह पतितपावन पर तत्काल पड़ी। नही तो पतितपावन के कमरे में कदम रखते ही उन्होंने इस तरह घन-घन क्यों शुरू कर दी ?

"हलो, हलो, मिस्टर पेइन !" घनश्याम कानोड़िया का फ़ोन था।

' स्पीकिंग, घनश्यामजी," पतितपावन ने जवाब दिया।

"मैंने तीन बार आपको फ़ोन किया है।"

पतितपावन ने होंठ सिकोड़े। मन-ही-मन बोले, 'बार-बार फ़ोन क्यों ? शयने स्वप्ने जागरणे तुम्हें अब डेनवर इंडिया के अलावा कोई चिंता नही। तुम्हारी बेटी के ब्याह का प्रस्ताव ऊँची नाक वाले गोयनका ने एक बात पर रिफ्यूज़ कर क्या मुसीबत खड़ी कर दी है !'

"इतने अधीर मत होइये, घनश्यामजी ! मैं तो अभी जिन्दा हूँ।"

पतितपावन ने आश्वासन दिया।

दूसरी ओर घनश्याम कानोड़िया हो-हो कर हँस पड़े। "आप ही तो असली बंधु है, मिस्टर पेइन ! शास्त्रो ने कहा है : राजदार का बधु ही असली बधु होता है।"

पतितपावन ने मजाक किया। "राज़दार पर्व तो पहले ही ख़त्म हो गया। अब गोयनका को अपनी गलती का पता चलेगा, घनश्यामजी !"

घनश्यामजी बहुत खुश हुए। टेलीफोन पर ही बोले, "पेइन साब, मेरी नीति बहुत ही सीधी-सादी है। ज़िदगी में जो भी काम करो, लाभ के लिए करो।"

पतितपावन समझ गये कि भलेमानुस बेकार की बात नही कह रहा है। घनश्यामजी ने जो मन्दिर बनवाया है, वहाँ से भी लाभ मिल रहा है। काफ़ीपोसा की गड़बड मे पड़कर घनश्यामजी ने लाभ कमाया। भतीजे को विदेश भेजा, वहाँ बडा-सा बिज़नेस कर डाला। अब अपमान के बदले मे घनश्यामजी को डेनवर से जो लाभ होने वाला है, उसके सकेत दूर-दिगन्त से दिखायी पड़ रहे है।

"हलो, पतितजी, मिस्टर न्यूमन को जैसे भी हो उस लड़की के हाथों से बचाना होगा। देश छोड़कर चले जाने से कोई असुविधा नही होगी—आपके यह भरोसा दिलाते ही मिस्टर आर्थर न्यूमन हमे शेयर बेचने का प्रस्ताव अपने देश भेज देंगे। टेलेक्स पर अनुमति आते ही मिस्टर न्यूमन को सारी गडबड से छुटकारा दिलाकर एयरोप्लेन मे चढा देने की ज़िम्मेदारी मेरी है।"

"हू," पतितपावन ने हलके-से कहा।

लेकिन घनश्यामजी की घबराहट कम न हुई। "सुना है कि दोपहर को आप मिस्टर न्यूमन से मुलाक़ात न कर सके। कहाँ निकल गये थे ? ज़रूर कोई खास मामला होगा, नही तो आप तो अपायटमेंट रद्द नही करते।"

"पतितपावन पाइन जो भी कानून चैलेंज लेता है, उसे निपटाये बिना नही छोडता। आप फ़िक्र न करें," घनश्यामजी को दभ के साथ आश्वासन देकर पतितपावन ने टेलीफोन रख दिया।

तभी पतितपावन की निगाह मेज पर रखे मिस सैमुअल के एक नोट

पर पड़ी। आपके मित्र मिस्टर पन्नालाल दत्त के पास से चिट्ठी लेकर कोई मिस्टर चौधरी आपसे मदद लेने आये थे। बहुत देर तक राह देखकर भलेमानुस चले गये। कह गये हैं कि फिर आयेंगे।

पानू की चिट्ठी लेकर आया था, इसलिए लौटा देने का सवाल ही नही उठता। लेकिन आज पतितपावन कितना काम करेंगे? मिस्टर न्यूमन के मामले को उच्चतम प्राथमिकता देना ही पड़ेगी।

डेनवर इडिया, घनश्याम कानोड़िया और मिस्टर न्यूमन के मामले ऐसे नाटकीय बन जायेंगे, इसकी कल्पना पतितपावन ने कभी भी नही की थी। क़ानून के अमोघ आश्रम मे घनश्याम कानोड़िया की मनोकामना अजीब ढग से पूरी हो रही थी। पतितपावन पाइन खुद ही ताज्जुब मे थे। उनके दिखाये रास्ते पर इस तरह जो सफलता मिल सकती है, यह सोचकर उन्हे बुरा नही लग रहा था।

यह सोच चल ही रही थी कि पतितपावन के दफ़्तर मे आर्थर न्यूमन फिर आ पहुँचे। यह वही न्यूमन थे, जिन्होंने व्यापार की बात उठाने पर गॉल्फ़ क्लब के मैदान मे घनश्याम कानोडिया को अवज्ञा से दूर हटा दिया था।

आर्थर न्यूमन की घबराहट और भी बढ़ी हुई थी, साहब का चेहरा देखकर ही पतितपावन समझ गये।

घबराहट बढ़ने का सबब भी है। आर्थर न्यूमन ने अनवरी को वकीलों की बस्ती मे घूमते-फिरते देखा है। जमालउद्दीन जरूर ही आसपास होगा, इस आशका से आर्थर गाड़ी से नही उतरे। नही तो एक बार तबीयत हुई थी कि अनवरी से पूछें कि वह आर्थर को अब भी इस तरह क्यों सजा दे रही है?

"एक बात कहने की और थी," आर्थर न्यूमन ने पतितपावन को बताया, "सिनेमा मे अभिनय की बात। बहुत सही जगह से पता चला है कि अलका या अनवरी को मिस्टर रे पहचानते तक नही, इसलिए उनकी

अगली फिल्म में अनवरी के अभिनय की बात ही नहीं उठती।"

पतितपावन शान्त थे। आर्थर की घबराहट बढ़ती ही जा रही थी। उन्होंने एक वकील को भी अनवरी के पीछे-पीछे जाते देखा था।

"कोई मिस्टर आलम उनकी ओर से क़ानूनी कार्रवाई कर रहे हैं।" उन्होंने आर्थर को अदालत का डर दिखाया था और कहा था कि हर महीने एक मोटी रक़म का इन्तज़ाम उन्हें अनवरी के लिए करना ही पड़ेगा। इस देश से न्यूमन को चले जाने के सारे रास्ते बंद हुए जा रहे हैं।

पतितपावन ठठाकर हँसने लगे। "गीदड़ गरज रहा है, गरजने दो, मिस्टर न्यूमन ! आज सवेरे मुझे भी बहुत फ़िक्र थी। लेकिन अब कोई फ़िक्र नहीं। क्लब चले जाइये, मिस्टर न्यूमन ! ईट, ड्रिंक एंड बी मेरी। इस देश को छोड़कर जाने का दिन आप तय कर सकते हैं। अनवरी बेगम आपका एक बाल तक न छू सकेगी। मैं आपको गारंटी दे रहा हूँ।"

"टू गुड टु बी ट्रू।" आर्थर न्यूमन को विश्वास नहीं आ रहा था।

पतितपावन ने अनवरी की फ़ाइल नज़दीक खींच ली। बोले, "आप बहुत तकदीर वाले हैं, मिस्टर न्यूमन ! अनवरी के लिए यह मृत्युबाण न मिलता तो आप सचमुच मुसीबत में पड़ जाते।"

अधीर उत्सुकता से आर्थर न्यूमन पतितपावन के चेहरे की ओर देखने लगे। भारतीय क़ानून के रहस्यमय संसार के बारे में उनकी कोई धारणा नहीं है।

पतितपावन बोले, "अनवरी न होकर कोई और लड़की होती तो आप सचमुच मुसीबत में पड़ जाते।"

न्यूमन अभी भी उसी तरह पतितपावन के चेहरे की ओर देख रहे थे।

पतितपावन बोले, "थैंक गॉड, क़ानून की नज़रों में अनवरी भारतीय नहीं है। उसका पासपोर्ट बर्मा का है। उसके अलावा भी छह महीने पहले अनवरी ने एक और शादी की थी। एक शादी रहने पर दूसरी शादी की इस्लाम इजाज़त नहीं देता। यह विशेषाधिकार पुरुषों का है।"

मिस्टर न्यूमन उत्तेजना से हाँफने लगे। पतितपावन बोले, "ये सारी सूचनाएँ मैंने बड़ी मेहनत से इकट्ठा की हैं। लेकिन सिर्फ़ पता लगाने से तो कुछ होता नहीं। सबूत चाहिए, उन्हें भी गोपनीय रूप से खोजा गया है।"

थोड़ी देर रुकने के बाद पतितपावन बोले, "दूसरी शादी नहीं हुई, इस से मुकरने की राह अब अनवरी के पास नहीं है। उसने कुछ दिन पहले भारतीय नागरिकता के लिए होम डिपार्टमेंट में आवेदन दिया था और उसमें लिखा था कि अमुक तारीख़ को भारतीय नागरिक जमालउद्दीन के साथ मेरी शादी हुई है। इसलिए मुझे भारतीय नागरिकता दी जाये।"

पतितपावन ने जोर से हुंकार भरी। "वह आलम का बच्चा कुछ छेड़-छाड़ करे तो सही! सिर्फ़ होम डिपार्टमेंट को एक समन भिजवाऊँगा कि अनवरी का मूल आवेदन कोर्ट को दिखाया जाये। उसके बाद किसी सरल आदमी को धोखा देकर दुबारा शादी करने के आरोप में अनवरी को जेल-ख़ाने न भेजा तो मेरा नाम पतितपावन पाइन नहीं।"

ख़ुशी और जोश में पश्चिमी सौजन्य की सीमा तोड़कर आर्थर ने पतितपावन के हाथ दबा दिये।

पतितपावन ने उपदेश दिया, "फिर भी यही कहता हूँ कि यहाँ से चले जाने में देर मत कीजिये, मिस्टर न्यूमन! किसी से कुछ भी कहे बिना चुपचाप विदा लीजिये।"

"खयाल बुरा नहीं है। मैं देश से ही डेनवर इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर के पद से स्वास्थ्य के आधार पर त्याग-पत्र भेज दूँगा।"

उसके बाद पतितपावन कुछ देर तक सोचते रहे। बोले, "आपने जब सारी जिम्मेदारी मुझ पर ही छोड़ दी है तो आपको एक सावधानी और बरतनी चाहिए। आप आज ही घर से ग़ायब हो जाइये। कल और परसों छुट्टी के दिन हैं। इसलिए ऑफिस में भी जमालउद्दीन एंड कंपनी आपको नहीं पा सकेगी।"

न्यूमन बोले कि वह छुट्टियों में ही कलकत्ता छोड़ देंगे।

न्यूमन ने सोचा था कि घर छोड़कर पतितपावन की सलाह में फिलहाल किसी होटल में रहने का इन्तज़ाम कर लेंगे। लेकिन पतितपावन ने उन्हें चौंका दिया।

"पागल हुए हैं? होटल क्या आजकल छिपने की जगह है। इसका जमाना बहुत पहले था। अब घर पर न मिलने पर अक़्लमन्द पार्टियाँ

अगली फिल्म में अनवरी के अभिनय की बात ही नहीं उठती।"

पतितपावन शान्त थे। आर्थर की घबराहट बढ़ती ही जा रही थी। उन्होंने एक वकील को भी अनवरी के पीछे-पीछे जाते देखा था।

"कोई मिस्टर आलम उनकी ओर से कानूनी कार्रवाई कर रहे है।" उन्होंने आर्थर को अदालत का डर दिखाया था और कहा था कि हर महीने एक मोटी रक़म का इन्तजाम उन्हे अनवरी के लिए करना ही पड़ेगा। इस देश से न्यूमन को चले जाने के सारे रास्ते बंद हुए जा रहे है।

पतितपावन ठठाकर हँसने लगे। "गीदड़ गरज रहा है, गरजने दो, मिस्टर न्यूमन ! आज सवेरे मुझे भी बहुत फ़िक्र थी। लेकिन अब कोई फ़िक्र नही। क्लब चले जाइये, मिस्टर न्यूमन ! ईट, ड्रिंक एंड बी मेरी। इस देश को छोडकर जाने का दिन आप तय कर सकते हैं। अनवरी बेगम आपका एक बाल तक न छू सकेगी। मैं आपको गारंटी दे रहा हूँ।"

"टू गुड टु बी ट्रू।" आर्थर न्यूमन को विश्वास नही आ रहा था।

पतितपावन ने अनवरी की फ़ाइल नजदीक खीच ली। बोले, "आप बहुत तकदीर वाले है, मिस्टर न्यूमन ! अनवरी के लिए यह मृत्युवाण न मिलता तो आप सचमुच मुसीबत मे पड़ जाते।"

अधीर उत्सुकता से आर्थर न्यूमन पतितपावन के चेहरे की ओर देखने लगे। भारतीय क़ानून के रहस्यमय संसार के बारे मे उनकी कोई धारणा नही है।

पतितपावन बोले, "अनवरी न होकर कोई और लडकी होती तो आप सचमुच मुसीबत मे पड जाते।"

न्यूमन अभी भी उसी तरह पतितपावन के चेहरे की ओर देख रहे थे।

पतितपावन बोले, "थैंक गॉड, क़ानून की नजरों में अनवरी भारतीय नही है। उसका पासपोर्ट बर्मा का है। उसके अलावा भी छह महीने पहले अनवरी ने एक और शादी की थी। एक शादी रहने पर दूसरी शादी की इस्लाम इजाजत नही देता। यह विशेषाधिकार पुरुषों का है।"

मिस्टर न्यूमन उत्तेजना से हाँफने लगे। पतितपावन बोले, "ये सारी सूचनाएँ मैंने बड़ी मेहनत से इकट्ठा की हैं। लेकिन सिर्फ पता लगाने से तो कुछ होता नही। सबूत चाहिए, उन्हे भी गोपनीय रूप मे खोजा गया है।"

थोडी देर रुकने के बाद पतितपावन बोले, "दूसरी शादी नही हुई, इस से मुकरने की राह अब अनवरी के पास नही है। उसने कुछ दिन पहले भारतीय नागरिकता के लिए होम डिपार्टमेंट मे आवेदन दिया था और उसमें लिखा था कि अमुक तारीख़ को भारतीय नागरिक जमालउद्दीन के साथ मेरी शादी हुई है। इसलिए मुझे भारतीय नागरिकता दी जाये।"

पतितपावन ने ज़ोर से हुंकार भरी। "वह आलम का बच्चा कुछ छेड़-छाड करे तो सही ! सिर्फ़ होम डिपार्टमेंट को एक समन भिजवाऊँगा कि अनवरी का मूल आवेदन कोर्ट को दिखाया जाये। उसके बाद किसी सरल आदमी को धोखा देकर दुबारा शादी करने के आरोप म अनवरी को जेल-ख़ाने न भेजा तो मेरा नाम पतितपावन पाइन नही।"

ख़ुशी और जोश मे पश्चिमी सौजन्य की सीमा तोडकर आर्थर ने पतिलपावन के हाथ दबा दिये।

पतितपावन ने उपदेश दिया, "फिर भी यही कहना हूँ कि यहाँ से चले जाने मे देर मत कीजिये, मिस्टर न्यूमन ! किसी से कुछ भी कहे बिना चुपचाप विदा लीजिये।"

"ख़याल बुरा नही है। मैं देश से ही डेनवर इडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर के पद से स्वास्थ्य के आधार पर त्याग-पत्र भेज दूँगा।"

उसके बाद पतितपावन कुछ देर तक सोचते रहे। बोले, "आपने जब सारी जिम्मेदारी मुझ पर ही छोड दी है तो आपको एक सावधानी और बरतनी चाहिए। आप आज ही घर से गायब हो जाइये। कल और परसों छुट्टी के दिन है। इसलिए ऑफ़िस मे भी जमालउद्दीन एड कपनी आपको नही पा सकेगी।"

न्यूमन बोले कि वह छुट्टियों में ही कलकत्ता छोड़ देंगे।

न्यूमन ने सोचा था कि घर छोडकर पतितपावन की सलाह से फिलहाल किसी होटल मे रहने का इन्तजाम कर लेंगे। लेकिन पतितपावन ने उन्हें चौंका दिया।

"पागल हुए हैं? होटल क्या आजकल छिपने की जगह है। इसका जमाना बहुत पहले था। अब घर पर न मिलने पर अक़्लमन्द पार्टियाँ

फौरन होटलों मे पता लगाती है। फिर आप लोगों के ठहरने लायक होटल कलकत्ता शहर मे कितने हैं? उनसे खोज निकालने में कितनी देर लगेगी?"

"तब फिर?" घबराये न्यूमन की समझ में कुछ नही आ रहा था।

"कोई बात नही। सारा इन्तजाम किये दे रहा हूँ। नर्सिंग होम मे आप अपने को छिपाइयेगा। पेट की तकलीफ बताकर आपको अभी भर्ती करा देता हूँ। बाहर नो-विज़िटर का कार्ड लगा दिया जायेगा। अनवरी बेगम की कौन कहे, सी० आई० डी० के बडे-बडे लोगों को भी आपका पता न चलेगा।"

आर्थर न्यूमन भौचक्के थे। *"बीमार आदमी के अलावा भी क्या कोई* नर्सिंग होम मे घुस सकता है?"

"कतई फ़िक्र न करें। याद रखें कि यह कलकत्ता शहर है। देश के क़ानून के बेहतरीन दिमाग़ यहाँ व्यापार और उद्योग के लिए काम करते है। एक दूसरा बौद्धिक व्यवसाय डाक्टरी और सर्जरी का है। पैसा दो तो हमेशा सहयोग को तैयार। फ़िक्र की कोई बात नही है। नामी डॉक्टर बिना देखे रिपोर्ट देंगे कि आप बीमार हैं।"

डॉक्टरों के बारे मे बतायी बात पर आर्थर न्यूमन को अभी भी विश्वास न हो रहा था।

पतितपावन सहज रूप से बोले, "डॉक्टर अपनी फीस लेगा। इस फ़ीस मे कोई धोखा नही करते। फ़ीस फेंकने पर इस कलकत्ता शहर मे कोई काम नही रुकता।"

पतितपावन ने टेलीफ़ोन पर सारा इन्तज़ाम कर दिया।

अब आर्थर न्यूमन दफ़्तर की ओर उन्मुख हुए। जाते हुए बोले, "मिस्टर पाइन, आप मिस्टर कानोड़िया से कह दीजियेगा कि मैंने डेनवर के शेयर उनके नाम बेचने की सिफारिश भेज दी है। वहाँ से किसी भी वक़्त जवाब आ सकता है।"

विदा लेने से पहले आर्थर न्यूमन ने फिर से कृतज्ञता जतायी। "कलकत्ता का बहुत कुछ मैं न भूल सकूँगा। आपको भी नही।"

फिर न्यूमन थोड़ा रुके। उसके बाद बोले, "होम ऑफ़िस को एक और

सिफ़ारिश भेजी है। आशा करता हूँ कि आज रात को ही कोई अच्छी ख़बर आपको दे सकूँगा।"

'क्रि-क्रि' कर टेलीफ़ोन बज उठा।

"हलो, मिस्टर पाइन ?" कोई मिस्टर चौधरी बोल रहे थे। "आपसे मुलाकात की ख़ास जरूरत है। मिस्टर पानू दत्त की चिट्ठी लेकर मैं कुछ देर पहले मिलने आया था।"

टेलीफोन पर ही मिस्टर चौधरी जल्दी-जल्दी अपनी बात कह गये। "बहुत सपनों को लेकर अनुसधान का एक काम किया था। कुछ ढंग के काम की आशा मे अपना सर्वस्व उसमे लगा दिया था, लेकिन अब अफवाह है कि कम्पनी दूसरे हाथों मे जा रही है।"

इस मामले में कुछ किया जा सकता है या नही, मिस्टर चौधरी यही जानना चाहते थे। "मिस्टर पाइन, यह कम्पनी चोर-लुटेरों के हाथ पड़ जाने से हम लोगों की और देश की बड़ी हानि होगी।"

पतितपावन फ़िलहाल उनकी इस समस्या को टाल जाना चाहते थे। इस बारे मे कुछ भी करने की उनकी जरा-सी भी तबीयत नहीं थी। पतितपावन बोले, "जिनके पास पैसे है, जो बहुत-से पैसे लगाकर कम्पनी ख़रीद रहे हैं, उनसे लड़ाई करना बहुत मुश्किल है, मिस्टर चौधरी !"

पतितपावन समझ गये कि चौधरी की आवाज भारी हो आयी है। भले आदमी बोले, "मेरे लिए जीवन-मरण की समस्या है, मिस्टर पाइन ! इतने दिनो से जो सपना देखता आया था, एक के बाद एक कई बरस जिसके लिए रात-दिन काम करता रहा, सफलता के बिलकुल पास आकर सर्वनाश हो रहा है। अगर आप कुछ मदद करें तो एक बार अन्तिम प्रयत्न करके देखा जा सकता है।"

टेलीफ़ोन रखने से पहले पतितपावन बोले, "आप दो दिन बाद आइये। सभी काग़ज़ात ले आइयेगा। मुझे कोई खास उम्मीद नजर नही आ रही है, मिस्टर चौधरी !"

आर्थर न्यूमन को अपनी गाड़ी में बिठाकर नर्सिंग होम से छिपाकर हवाई अड्डे पहुँचा देने की जिम्मेदारी पतितपावन को अपने ऊपर लेनी पड़ी। तब भी आर्थर न्यूमन की फिक्र दूर नही हुई थी। उनको यही डर था कि हवाई अड्डे पर भी अंतिम क्षण में कुछ भी अघटित घट सकता है।

हवाई जहाज छूटने से थोड़ी देर पहले ही न्यूमन ने बताया कि होम ऑफ़िस से टेलेक्स पर अनुमति आ गयी है। मिस्टर कानोडिया के प्रवासी भतीजे के साथ डेनवर के शेयरों की बिक्री का इन्तज़ाम अब तक शायद पक्का हो गया होगा। टेलेक्स से मिली ख़बर की एक प्रति आर्थर न्यूमन ने पतितपावन के हाथों में रख दी ताकि काग़ज़ात आज ही मिस्टर घनश्याम कानोड़िया के हाथों मे पहुँच जायें।

मिस्टर न्यूमन बोले, "मिस्टर कानोडिया से कहिये कि कंपनी के चेयरमैन मिस्टर विश्वंभर पाल का त्यागपत्र भी भेजा जा रहा है। यह रही उसकी कॉपी।"

विश्वंभर पाल के इस्तीफ़े की चिट्ठी मुट्ठी में पाकर पतितपावन को अजीब खुशी हो रही थी। बत्तीस बरस से छाती में फाँस गड़ रही थी। आज इस क्षण हवाई अड्डे के अंतर्राष्ट्रीय लाउंज में वह फाँस कलेजे से निकल गयी। पतितपावन को अपना कलेजा बहुत हलका लग रहा था।

आर्थर न्यूमन ने पतितपावन से हाथ मिलाया। कस्टम की पड़ताल के लिए अन्दर जाने से पहले आंतरिक कृतज्ञता व्यक्त की और बोले, "आपको एक अच्छी और सही ख़बर दे रहा हूँ, मिस्टर पाइन ! डेनवर इंडिया बोर्ड की मीटिंग में कल आपका नाम चेयरमैन के रूप में प्रस्तावित हो जायेगा। मिस्टर कानोड़िया और मैं दोनों ने एकराय होकर, होम ऑफ़िस को इस आशय का टेलेक्स भेज दिया है।"

"कांग्रेचुलेशन, बेस्ट विशेज," पतितपावन का जानकार हाथ आर्थर न्यूमन बहुत देर तक अपने हाथ में थामे रहे।

तरह-तरह की जटिल कानूनी लड़ाइयों में विजयी पतितपावन क्षण-भर के लिए बच्चे बन गये। इस समय वह बत्तीस बरस पहले के उस ग्रीफलेस चुप्पे नर्वस पतितपावन को देख रहे थे, जिसका कोई भविष्य नहीं था। आसमानी रंग की नीली रेशमी साड़ी पहने सप्तदशी रूपसी

बालिका अत्यन्त निकट आकर सदा के लिए कहीं खो गयी।

'भविष्य, मेरे जीवन में तुम्हारे रहने की बात न थी। अब इतने दिनों बाद दबे-दबे क़दमों से अनाहूत की तरह जयमाला हाथ में लेकर तुम आये हो?' अतीत और भविष्य को क्षण-भर के लिए पतितपावन ने आमने-सामने खड़ा कर दिया। कानूनी बस्ती के निर्जन दफ़्तर में अतीत का श्रीफ़्लेस वकील पतू और भविष्य को चेयरमैन पाइन जैसे वर्तमान के दुर्धर्ष परामर्शदाता पतितपावन के सामने खड़े भावों का आदान-प्रदान कर रहे थे।

विजयी पतितपावन को आज इस समय उज्ज्वल आनन्दमय प्रभात में, उच्च समाज के अपने किसी परिचित का ध्यान नहीं आ रहा है। ख़बर पहले पानू को ही देनी है। वही उनके दुख-सुख, पतन और उत्थान का बचपन से एकमात्र नीरव साक्षी रहा है। पानू की धर्मपत्नी पद्मावती भी समाचार सुनकर खुश होंगी।

"हलो, हलो पानू—गुड न्यूज़, वेरी गुड न्यूज़ है। आज सन्देश लेकर आ रहा हूँ। मिसेज़ से कहो, आज पकवान के अलावा गरम-गरम पकौड़े भी चाहिए। डेनवर के चेयरमैन मिस्टर पाइन आज तुम्हारे यहाँ मध्याह्न भोजन से तृप्त होंगे।"

"चले आओ, पतू! तुम्हारे लिए घर वाली हर वक़्त दरवाज़ा खुला रखती है। मछली न सही, अभी पकवान का अकाल तो नहीं पड़ा है। और पतू, सुनो! जिस भले आदमी के बारे में तुम्हें लिखा था, लगता है कि उसकी नौकरी चली गयी। जो नये लोग कम्पनी ख़रीद रहे हैं, उन्होंने शायद पुरानी पार्टी से ही यह अप्रिय काम करा लिया है। हलो, हलो, पतू, सुनो, उसकी माँ शायद तुमसे मिलने आ रही है।"

मुलाक़ाती का बंगला में लिखा पुर्ज़ा देखते ही पतिपावन चौंक पड़े।

शान्तिरानी चौधरी। इस हाथ की लिखावट तो पतितपावन के लिए

भूलना सम्भव नही है। पिछले बत्तीस वरसों मे नीले कागज के उस टुकडे को अकारण खोलकर पतितपावन ने कितनी बार देखा है। आसमानी नीले रग की रेशमी साडी पहने सुनहरी हस्ताक्षर देने वाली से उन्हें बस एक ही बात पूछनी थी—बत्तीस बरस पहले पतितपावन की भेजी गोपनीय चिट्ठी मिली या नही ? टूटते सम्बन्ध के अन्तिम क्षण मे, असहाय पतितपावन ने चिट्ठी मे शान्तिरानी को लिखा था, "कौन क्या कहता है उससे कुछ आता-जाता नही। मैं वादा करता हूँ, तुम्हारे साथ रहने पर मैं भविष्य बनाने का यथासाधन प्रयत्न करूँगा।"

मिस अनीता सैमुअल बगला मे लिखे पुर्जे को हाथ मे लिये खड़ी थी। "ले आओ, ले आओ, खडी क्यो हो ?" अपने मे खोये पतितपावन ने कहा।

अट्ठावन बरस के पतितपावन ने अचानक अपना चश्मा उतारकर सूखा मुँह अच्छी तरह पोछा। चश्मे के शीशों को भी पतितपावन ने जल्दी-जल्दी साफ़ किया।

बत्तीस बरस पहले की उस लड़की से मुलाकात के लिए पतितपावन तैयार थे।

कार्पेट बिछे एयर-कडिशंड कमरे का दरवाजा हिला। पूर्वी भारत के धुरधर क़ानूनदाँ पतितपावन की छाती में इंटरव्यू से पहले नौकरी चाहने वाले बेकार युवक की तरह घबराहट हुई।

डेनवर इडिया के भावी चेयरमैन की आँखें अप्रत्याशित प्रत्याशा से चमकने लगी। बत्तीस बरस पहले की उस स्वप्न-प्रतिमा का स्वागत करने के लिए पतितपावन की समूची देह प्रस्तुत थी।

लेकिन यह क्या ! पतितपावन का सारा शरीर शिथिल पडता जा रहा है। सफेद धोती पहने एक विधवा मूर्ति शान्त-क्लान्त पग रखती हुई असहाय भाव से उनकी मेज की ओर बढ़ रही है।

नही, नही, यह तो उनके सपनो की शान्तिरानी नही है। इस बीच पतितपावन ने अपनी ऐनक के शीशों के सिलिंड्रिकल लेबेल के बीच से पचास से ऊपर की विधवा के शोकाच्छन्न चेहरे को देखा। आँखो की नजर, नाक की बनावट और चेहरे की मुसकराहट मे से अन्त म ध्वस स्तूप में से बत्तीस बरस पहले की लज्जाशील, यौवनधन्या कुमारी को पतितपावन ने अन्त मे

खोज ही निकाला।

यह किसने सोचा था कि हजारों दिन-रातों की अविरल यात्रा के अन्त में इस प्रकार मुलाकात होगी ! उत्तेजना में पतितपावन अतिथि से बैठने के लिए भी कहना भूल गये थे।

आगन्तुक ने खुद ही आसन ग्रहण कर अच्छा किया। "मिस्टर दत्त ने मुझे भेजा है।"

'मिस्टर दत्त ने क्यों ? भाग्य-देवता ने बहुत दिनों की अग्नि-परीक्षा के अन्त में एक स्मरणीय दिन तुम्हें भेजा है।' पतितपावन मन-ही-मन बोले।

पतितपावन का सारा शरीर अवश हुआ जा रहा था। कहाँ गयी वह सोने की प्रतिमा, जिसे न पाने के दुख में जीवन-भर काम के नशे में पतितपावन अपने को भूले रहे और भविष्य को बन्दी बनाने के लिए व्यवसाय का राजमार्ग पकड़कर अर्धोन्मत्त की तरह भागते फिरे ?

"मैं पतितपावन हूँ," पतितपावन ने यह जताने की जरूरत समझी।

शान्तिरानी अभी भी पहले की ही तरह कुछ असहाय भाव से रहस्य जानने का प्रयत्न कर रही थी। "मैं पतितपावन पाइन हूँ। बहुत दिन पहले अपने मित्र पानू दत्त के साथ आप लोगों के रामकान्त बसु स्ट्रीट के घर...।"

शान्तिरानी बिजली की तेजी से पतितपावन के चेहरे की ओर देख कर उसमें कुछ खोजने लगीं।

"बहुत दिनों पहले की बात है ..", पतितपावन चुप न रह सके, "मैं उस दिन ब्रीफलेस वकील था। मेरा कोई भविष्य न था...।"

शान्तिरानी के विवर्ण पीडित मुख पर अचानक जैसे अबीर-सा छिड़क दिया गया हो। उन्हें पतितपावन की याद आ गयी थी। यह बात उस मुख से ही स्पष्ट हो रही थी।

'पतितपावन नहीं, अब तुम प्रसिद्ध कानूनी सलाहकार बन गये हो। काम की बात पर आओ।' भीतर से किसी ने पतितपावन को समझाया। किन्तु पतितपावन असहाय भाव से अतीत में लौट जाने के लिए छटपटा रहे थे।

पतितपावन ने एक के बाद एक कई सवाल कर डाले और शान्तिरानी सलज्जभाव से बताती रही। अपने ब्याह की बात, पति की बात, छोटे रेल-इन्सपेक्टर अमियसाधन चौधरी की बात।

लेकिन भविष्य? भविष्य कहाँ है? आसमानी नीले रंग की साड़ी पहने, गहने पहने, उस कुमारी के भविष्य की खोज में पतितपावन अस्थिर हो उठे।

कहाँ है भविष्य? पतितपावन ने सुना: अमियसाधन इन्सपेक्टर से दस बरस बाद छोटे अफसर बने थे और उसके बाद ही एकमात्र सन्तान के साथ शान्तिरानी विधवा हो गयी थी।

'तो भविष्य ने तुमको भी धोखा दिया?' पतितपावन कहने जा रहे थे। किन्तु अचानक लगा कि उनके मुँह से बात निकल नहीं रही है।

"अब तो भविष्य बेटा है, आँसुओं से उसे आदमी बनाया है," शान्तिरानी ने शान्तभाव से अपने-आप ही कहा। स्त्रियों में सहनशक्ति शायद दुनिया के सबसे अधिक सहनशील पुरुष से भी अधिक होती है। नहीं तो शान्तिरानी, क्या इस तरह शान्त बनी रहती! चेहरे पर कहीं भी यंत्रणा, वंचना की चोट का कोई चिह्न न था।

पतितपावन की घर-गृहस्थी के बारे में पूछने पर शान्तिरानी को ठोकर लगी। "फिर कभी भेंट होगी तो घर वाली से बात करूँगी।"

पतितपावन का घर है, किन्तु गृहिणी नहीं है, सुनकर एक अस्वाभाविक स्तब्धता कमरे में छा गयी।

पतितपावन अपने में ही चुपचाप घुमड़ते रहे। शान्तिरानी को अभी भी शायद उनकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। उन्हें न पाकर कोई इस प्रकार अपने को वंचित रख सकता है, यह यह सोच भी नहीं पा रही थी।

लेकिन औरतें बूढ़ा होने पर भी बहुतेरी बातों में विचित्र रूप से बच्ची बनी रहती हैं। किशोरियों की-सी सरलता से शान्तिरानी पूछ बैठीं, "अरे, शादी नहीं की, क्यों?"

पतितपावन इस प्रश्न का क्या उत्तर दें? बत्तीस बरस तक कानून के क्रीतदास बन अपने को बेचने के बाद पतितपावन को आज उसका

चरम पुरस्कार मिला है। लेकिन उस बात को उठाकर शान्तिरानी को खिन्न करने से क्या फ़ायदा ?

किन्तु शान्तिरानी अब भी सरलता से उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। पतितपावन ने सिर उठाकर कहा, "भविष्य नहीं था। भविष्य न रहने से कौन शादी करता ?"

पतितपावन मौन शान्तिरानी की ओर देख रहे हैं। शान्तिरानी, क्या तुम समझ नहीं पा रही हो कि कितनी राहों, झाड़-झंखाड़ों, खोह-खदकों को लांघकर भविष्य की खोज में बत्तीस बरस बिना साथी के कैसे कट गये ?

"नहीं, यह आपने अच्छा नहीं किया।" पतितपावन को लगा, शान्तिरानी कहना चाह रही हैं कि चोर से ख़फ़ा होकर कोई जमीन पर रखकर खाना नहीं खाता। दुनिया में बर्तनों का अभाव नहीं है।

लेकिन पतितपावन इस तरह की बहस मे नहीं पड़ेंगे। अत्यन्त मूल्यवान समय तरल स्वर्ण की तरह जीवन-पात्र में से बहकर समाप्त हो गया है। उन्हें केवल एक प्रश्न के उत्तर की ज़रूरत है।

मन की सारी शक्ति केंद्रित कर पतितपावन ने पूछा, "अगर बुरा न मानें, मेरी चिट्ठी मिली थी न ?"

"कौन-सी चिट्ठी ?" शान्तिरानी की आवाज़ में आश्चर्य था।

"मैंने लिखा था, मैं भविष्य बना लूंगा।"

शान्तिरानी आसमान से गिर पड़ी। "न, उस तरह की कोई चिट्ठी किसी ने मुझे नहीं दी।"

शान्तिरानी झूठ नहीं बोल रही हैं, यह जानकर पतितपावन को जरा भी कष्ट नहीं हुआ। बत्तीस बरस से चुभे काँटे के दर्द से अब पतितपावन को छुटकारा मिल गया था। वह इतने दिनों से जो सन्देह करते आ रहे हैं, वही ठीक है।

सचमुच अगर शान्तिरानी के हाथों मे चिट्ठी पहुँच जाती तो क्या होता, पतितपावन शान्तिरानी की आँखों मे झांककर यह बात बखूबी समझ रहे हैं। बत्तीस बरस कलेजे में बंद रहकर वह दबी असहाय हूक अभी-अभी कलेजे से निकलकर उसे हलका कर गयी।

नही, पतितपावन अब अतीत की ओर ही नही देखते रहेंगे। जो होना था, वह तो हो गया। अब शान्तिरानी पर कोई मामूली-सा उपकार कर ही वह धन्य हो जायेंगे। बत्तीस बरस बाद भाग्य के फेर से भेंट हुई है तो पतितपावन दिखा देंगे कि शान्तिरानी के लिए वह असाध्य काम भी कर सकते हैं।

तभी शान्तिरानी रो पड़ी। "मेरी एकमात्र सन्तान की साधना और स्वप्न को एक लोभी व्यापारी के दल ने उलट-पलट कर दिया है। चोरी से अँग्रेजी कम्पनी के शेयर खरीद कर अब वे कम्पनी का हाड़-मास नोच खायेंगे। कम्पनी की जो खाली जमीन है, वहाँ कारखाना न बनाकर उसे मोटी रकम पर बेच देंगे और सारा नकद रुपया निकाल लेंगे। मेरे बेटे के अनुसंधान के काम में उन्हें कोई रुचि नही है, क्योंकि उससे कोई नकद लाभ नही है। उन्होंने नौकरी से अलग करने की चिट्ठी साहब से मेरे बेटे को दिला दी। मेरा बेटा बडे आदमियो से नहीं लड सकेगा। सारे जीवन-भर की साधना को छोडकर किसी तरह जीवित रहने के लिए वह फिर विदेश जाने की तैयारी कर रहा है।" शान्तिरानी हाँफ रही थी। शान्तिरानी ने पूछा, "आप इस हस्तातरण को नही रोक सकते?"

"क्या इस कम्पनी का नाम डेनवर इडिया है और लड़के का नाम शिवसाधन ?"

जवाब सुनकर भीतर दबा आर्तस्वर पतितपावन के गले से निकल पड़ा। घनश्याम कानोड़िया कल ही तो खुद छुपा कर काग़ज़-पत्तर लाये थे और उन्होंने बताया था कि यह शिवसाधन चौधरी कम्पनी के हस्तान्तरण के मामले मे गड़बड खड़ी कर सकता है। सब-कुछ सुनने के बाद गड़बड़ी से बचने के लिए, पतितपावन ने खुद ही शिवसाधन चौधरी को बरख़ास्त करने की सिफ़ारिश की थी और यह अप्रिय काम आर्थर न्यूमन से करवाने की सलाह भी दी थी। बिजली की तेजी से घनश्याम कानोडिया ने काम किया था। हवाई अड्डे पर जाने से पहले ही शिव-साधन चौधरी की नौकरी खत्म करने के पत्र पर आर्थर न्यूमन ने दस्तखत कर दिये थे।

शान्तिरानी ने अचानक लक्ष्य किया कि पशुओं का-सा करुणस्वर

पतितपावन के गले से निकल रहा है। पतितपावन को याद आया कि शिवसाधन के विरुद्ध कोई निश्चित अभियोग नहीं था। सन्देह और आशंका के वशीभूत होकर एक निरपराध युवक के जीवन-स्वप्न को चूर-चूर कर दिया है।

शान्तिरानी ने लक्ष्य किया कि दिग्विजयी कानूनवेत्ता पतितपावन अव्यक्त यंत्रणा से अपना सिर पकडे बैठे हैं। अपनी सोने की हिरनी की ओर देखकर पतितपावन पागल की तरह कह रहे हैं, "थोडा और पहले मेरे पास क्यों नही आयी? थोड़ा और पहले। शिवसाधन मेरा अपना है, यह कैसे जान पाता?"

दोपहर बीती। तीसरा पहर ढल गया। पतितपावन अभी भी खाना खाने नही आये। उनका दोपहर का भात, दाल—सभी-कुछ ढँके रखे हैं। पानू दत्त मनोयोग से रेडियो पर फुटबाल की कमेंट्री सुन रहे थे। तभी टेलीफोन आया।

टेलीफ़ोन की घंटी सुनकर पानू की गृहिणी भागी-भागी आयी। "निश्चय ही पतितपावन बाबू हैं। चेयरमैन बनने से पहले सब-कुछ भूल जाने को बैठे हैं। उनसे कह दो, मैं बहुत ख़फ़ा हूँ।"

सारी बात सुनकर पानू दत्त ने गंभीर भाव से टेलीफ़ोन रख दिया। ट्रांज़िस्टर कान के पास रखकर मनमौजी पानू दत्त अचानक हँस पड़े और पत्नी से बोले, "पतू पर गुस्सा मत करो। पतू बडा वकील बन गया था। बहुत अच्छे-अच्छे स्कोर किये थे उसने। लेकिन फ़ाइनल खेल में अंतिम सीटी बजने से पहले, नशे की हालत में अपनी ही साइड पर गोल कर वह अब कटे बकरे की तरह छटपटा रहा है। कह रहा है कि अब बड़े लोगों की गुलामी नही करूँगा। पतू वकालत छोड़ देगा।"